उत्सर्ग

—:—

निजपद नवपद रूप मान कर जो आराधन करते हैं।
तिरोभूत निज दिव्य शक्ति को जो आविष्कृत करते हैं॥
सुखसागरः भगवान् महोदय श्रीहरि पूज्य हुए उनको।
सविनय-प्रेम समर्पित करके सन्तोषु अपने मन को॥

नवपद-ध्यान शृङ्खला निगडित मनः कवीन्द्र—

कवीन्द्रः॥

※ किञ्चिद्वक्तव्य ※

आत्मा हमेशा सुख को ही चाहता है, किन्तु वैसे साधनों के अभाव में सुख नहीं मिलता है। संसारी आत्मा निमित्त-वासी है, जैसे २ निमित्त प्राप्त होते हैं, वैसे २ परिणामों में परिणत हो जाता है। मुमुक्षु-सुखाभिलाषियों को दुःखोत्पादक निमित्तों को हटाना चाहिये। संसार रूप वट वृक्ष के बीज भूत राग-द्वेष-काम-क्रोध-मान-माया-लोभ आदिकों को यथाशक्ति प्रयत्न करके भस्मीभूत बनाना चाहिये। जड़ पदार्थों से विरक्त भावना रखनी चाहिये—मन को वशीभूत बनाना चाहिये। मन की प्रेरणा से ही आत्मा अशुद्ध चेतना के जरिये ज्ञानवरणादि आठ कर्मों को पैदा करता है, और उसके कटुकविपाकों को भोगते हुए, चार गति-चौरासी लक्ष जीवायोनि में भटकता हुआ दुःख पाता है। इसलिये मन को संयमी-काबू में रखना चाहिये। मन को संयमी बनाने के लिये आप्त पुरुषों ने अनेक मार्गों का निरूपण किया है, उनमें भी नवपद की आराधना सर्व श्रेष्ट मार्ग है। नवपदों में-श्री अरिहन्त-सिद्ध ये दोनों "देव-तत्त्व के" स्वरूप हैं, श्री आचार्य-उपाध्याय-साधु ये तीनों पद "गुरु तत्त्वके" स्वरूप हैं, दर्शन-ज्ञान-चरित्र और तप ये चार पद "धर्मतत्त्व के" स्वरूप हैं, इन देव-गुरु और धर्म की आराधना करने से आत्मा क्रमशः विकाश को पाता हुआ परमात्म स्वरूप में पहुंच जाता है। गड़रिये के घर में भेड़ बकरियों के साथ जीवन क्रीड़ा करने वाला और अपने स्वरूप को भी भूल जाने वाला सिंह का बच्चा जैसे संयोग पाकर जंगल निवासी किसी प्रचण्ड वीर्य वाले सिंह की गर्जनाओं को-लीलाओं को सुनता और देखता है तब उसे अपने स्वरूप का बोध होता है, और निर्भीक दशा को प्राप्त कर लेता है उसी तरह संसारी भव्यात्मा भी श्री अरिहंत आदि दिव्य नवपदों का चिन्तन, मनन, और निदिध्यासन करते हुये

क्रमशः उन्हीं पदों को प्राप्त कर लेता है। एकान्तिक और आत्यन्तिक अनन्त सुखों को भोगने वाला भी हो जाता है। श्री नवपद जी के आराधन करने से संसार के सब शुभ साधनों का आराधन अपने आप हो जाता है। कहा भी है कि 'सर्वं पदं हस्तिपदे प्रविष्टंमम्' अर्थात् हाथी के पैर में सब के पैर प्रवेश कर सकते हैं। इसलिये भव्यात्माओं को श्री नवपद जी महाराज का विधि पूर्वक आराधन करना चाहिये। विधि पूर्वक की हुई आराधना सफल होती है।

प्रस्तुत विधि प्रतिपादक पुस्तक का संकलन पूज्य पाद प्रातः स्मरणीय खरतरगच्छाधिराज जैनाचार्य श्रीमज्जिनहरिसागर सूरीश्वर जी महाराज साहब के शिष्य रत्न श्री कवीन्द्रसागर जी महाराज ने अन्यान्य पुस्तकों को देख करके किया है। एतदर्थ उन श्रीमान् का उपकार मानता हूँ। विधि आराधक महानुभावों से मेरी प्रार्थना है कि इससे लाभ उठावें, और श्री श्रीपाल महाराज और सती शिरोमणि रमणी रत्न श्रीमती मयणा सुन्दरी के जैसे ऐहिक और पारलौकिक सुखों को प्राप्त करें।

प्रस्तुत पुस्तक को प्रकाशित करने के लिये श्वे० जै० प्रेस के मैनेजर बाबू जवाहरलाल लोढा को मैंने करीब ५ वर्ष पहिले दे दी थी। किंतु उन्होंने रुपये पहिले ही ले लेने पर भी पुस्तक छापने में बराबर गड़बड़ी की। आखिर लाचारी अमर कुछ छपे फर्में उनसे लेकर इस साल आगरा बेलनगंज के सरस्वती प्रेस के मैनेजर को बाकी की पुस्तक छापने को दी। इस गड़बड़ी के कारण पुस्तक में कहीं २ अशुद्धियों का होना सम्भव है तो कृपालु पाठक गण इसे शुद्धता से पढ़ें।

जौहरी बाजार, जयपुर
ता० १७-२-३६

नवपदाराधक सेवक
सिरेमल संचेती

श्री सिद्धचक्र नवपदाराधन।

विस्तार विधि

(मङ्गलाचरणम्)

शार्दूलविक्रीडितम्
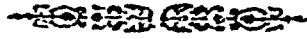
ॐ अर्हं गतकर्मसिद्धनिवहं सूरीश्वरौघं परं ।
साङ्गोपाङ्ग विचार सार विलसत्सूत्रार्थ भृत्पाठकम् ॥
अध्यात्मामृत पान साधु सुभगं सद्दर्शनं सद्गुणम् ।
सद्ज्ञानं चरणं तपः प्रतिदिनं श्रीसिद्धचक्रं भजे ॥

(कवीन्द्रकेलिः)

अनुष्टुप् ।

श्री सिद्धचक्रं नमस्कृत्य तदाराधन सद्विधिम् ।
सम्प्राप्य सद्गुरोः सम्यग् लिख्यते भव्यहेतवे ॥

अथ स्थापना विधिः ।

आसौज और चैत्र के शुक्लपक्ष की सप्तमी या छठ के दिन अच्छे मुहूर्त में, शुभ चौघड़िये में, पवित्र स्थान में, उपाश्रय, मन्दिर या मकान के निवृत्तिमय एकान्त शान्त ठिकानेमें सिद्धचक्राराधक भव्य जीव प्रथम उस स्थान को पूज कर धूप से वासित बना कर तीन चौकी-पट्टे ऊपराऊपर स्थापित कर त्रिगडा बनावे, त्रिगडे के नीचे अक्षत-चांवल से गहुँली बनावे, ऊपर नारियल के साथ अपनी यथाशक्ति सोना चांदी का नाणां चढ़ावे। त्रिगडे के ऊपर चँदवा बाँधे और त्रिगडे पर सिंहासन में श्री नवपद जी के गट्टे—मूर्त्ति या यंत्र पट्ट आदि स्थापन करे स्थापन करते वक्त निम्न लिखित काव्य और मंत्र पढ़े। यथा—

काव्यम् ।

[१]

पूर्णाङ्कं पूतं परमं पवित्रं ।
यदर्हदाद्याप्त पदैर्विचित्रम् ॥

श्री सिद्धचक्रं हतवैरिचक्रं ।
नये सुपीटं नतसाधुशक्रम् ॥

[२]

इय नव पय सिद्धं लद्धि विज्जा समिद्धं ।
पयडिय सरवग्गं ह्रींतिरेहासमग्गं ॥
दिसिवइ सुरसारं खोणिपीढावयारं ।
तिजयविजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥

मंत्र ।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय साधु सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तपोभूत श्री सिद्धचक्र अत्रावतरावतर स्वाहा । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री सिद्धचक्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः स्वाहा ।

इति पीठ प्रतिष्ठा काव्य मंत्रः ।

इस प्रकार गट्टाजी यंत्र या मूर्तियें प्रतिष्ठापित कर उनके पास सुगंधी ताजे घी का अखण्ड दीपक रखें और धूप करें और जिस तिथि से ओली जी का प्रारम्भ होता है उस छठ, सातम या आठम के रोज प्रातःकाल में ये कृत्य करें ।

प्रातः कृत्य ।

चार घड़ी रात्रि शेष रहे तब निद्रा प्रमाद को छोड़ कर पंच नमस्कार मंत्र का स्मरण करे और अपने उचित कर्त्तव्यों का विचार करे जैसे कि मैं कौन हूँ ? क्या मेरी जाति है ? क्या मेरा धर्म है ? इन विचारों का पूरा ख्याल रख कर धर्म जागरण से सावधान हो जाय, बाद में पेशाब टट्टी आदि हाजतों को दूर कर अंग पवित्र करे। तदनन्तर सामायिक पूर्वक प्रतिक्रमण (पाप से पीछे हटने की क्रिया) को करे और श्री सिद्धचक्र जी के स्थापना मण्डपमें मयूर पींछी या चरवला आदि से रज आदि की प्रमार्जना करे और वासक्षेप पूजा को पढ़ते हुए एक साड़ी उत्तरासंगधारी श्रावक या श्राविका गट्टा जी मूर्ति या यंत्रादि की वासक्षेप से पूजा करे, पीछे वहीं पर 'देववन्दन' करे; बाद में जिस दिन में जिस पद का आराधन हो उस पद के 'खमासमणे' प्रदक्षिणा देता हुआ दे, शक्ति के अभाव में बैठ कर दे। प्रत्येक दिन में जिस पद का आराधन हो उस ही पद की बीस बीस मालायें गुने बाद यथाशक्ति अच्छे, स्वच्छ निर्दोष वस्त्र अलंकार पहन कर के घोड़ा हाथी रथ पालकी सिपाही नौकर भाई बन्धु आदि अपने हित मित्रों के साथ जिन

पूजा के लायक ताजे मूल्य वाले सरस फल फूल आदि उत्तम द्रव्य को थाल में रख कर भव्य जीवों को मोक्ष मार्ग को दिखाता हुआ जैन धर्म की प्रभावना करता हुआ जिन मन्दिर में जावे ।

जिन मन्दिर की विधि ।

मन्दिर में जाने वाले भव्यात्मा १० त्रिकों को धारे। जिनमें पहले त्रिक में तीन निस्सही (निषेध) करें, जिसमें पहेली निस्सही जिन मन्दिर में प्रवेश समय बोले, यानी सांसारिक गृहसम्बन्धी कोई भी कार्य का विचार न करे और तीन प्रदक्षिण देने के बाद जिन मन्दिर सम्बन्धी फूटा टूटा कचरा कूड़ा आदि साफ करे। उसके बाद दूसरी निस्सही कहे यानी अब जिन मन्दिर सम्बन्धी कार्य को भी न करूंगा, ऐसा नियम करे। यहां द्रव्य पूजा की छूट होती है बाद तीसरी निस्सही द्रव्यपूजा करने के बाद बोले यानी अब भाव पूजाही करे। यह पहिला निस्सही त्रिक हुआ। दूसरा त्रिक ज्ञानादि त्रिक की आराधना करने के लिये करे। प्रभु को दाहिनी दिशा से तीन प्रदक्षिणा दे। प्रभु को पञ्चाङ्ग नमा कर तीन वार नमस्कार करे। प्रभु की अंग-अग्र-भाव पूजा करे ऐसे दूसरा त्रिक करे

मन, वचन और काया को गुप्त करे यानी संयम वान बने। हिरने फिरने मे उपयोग रखे दूसरों की गीतादि प्रवृत्ति से व्याकुल न होवे। देव कार्य को छोड़ दूसरे कर्त्तव्यों से चित्त को हटाना चाहिये। राजकथादि विकथाओं को छोड़े। किसी के मर्म प्रकाश न करे। दूसरे को दुखदायी वचन न कहे। आत्महितकारी प्रामाणिक वचन बोले। जिसने मन, वचन, काया से खोटे व्यापारों का निषेध किया है, उसके भाव से निस्सही होती है, और वही सुगति निबन्धन होती है। पूजायोग्य पवित्र होकर उत्तम निर्दोष वस्त्र पहन कर आठ पुट वाले मुख कोश से नाक और मुख की भाप को रोके। धूपादिक से अपने अङ्ग को वासित कर भाव से दूसरी निस्सही कहता हुआ मूल गंभारे में प्रवेश करे। जयणा-विवेक पूर्वक जिन पूजा करे, पूजा करते समय शरीर न खुजावे, खेल खंखार न करे, केवल भगवान की भक्ति में ही चित्त तन्मय बनावे। प्रथम सुगंध युक्त जल पंचामृत से भगवान को स्नान करावे। सुकुमाल अच्छे कोमल सुगंध युक्त वस्त्र से भगवान का अंग लूहे। कपूर कस्तूरी मिश्रित शुद्ध केशर चंदन का विलेपन करे। शुभवर्ण, शुभ गंध युक्त जीवादि रहित निर्दोष गुलाब, चंपा, चमेली, केवड़ा, जाइ जुई, मोगरादिक

पुष्पों से पूजा करे। अष्टांग धूप अगरबत्ती खेवे। मंगल दीप करे। अखंड उज्ज्वल अक्षत से प्रभु के सन्मुख अष्ट मंगलिक लिखे। दर्पण, भद्रासन, वर्धमान शराव संपुट, श्रीवत्स, मत्स्ययुग, कलश, स्वस्तिक, नंदावर्त्त, ऐसे अष्ट मंगल की रचना करे। पंच वर्ण फूलों से अष्ट मंगलिक पूजे। सुंदर कुंकुम मिश्रित चंदन से हत्था देवे। उत्तम नैवेद्य चढ़ावे। अच्छा खाद्य फल चढ़ावे। इत्यादि पूजा की विधि आरती पर्यंत रायपसेणी ज्ञाता धर्म कथा, जीवाभिगमादि सिद्धांतों में लिखे मूजब करे। पीछे अंतरंग भक्ति से प्रभु के सन्मुख नाटक करे। जैसे देवेन्द्र, दानवेंद्र, नारद इन्होंने तथा उदायी राजा की राणी प्रभावती ने, द्रौपदीने नाटक किया और रावण प्रमुख कई जीवों ने अष्टापदादि तीर्थों के ऊपर नाटक करके तीर्थंकर-गोत्र उपार्जन किया, तैसे प्रभु के सन्मुख शंका रहित होके उत्तम पुरुष नाटक करे।

जल चंदन पुष्पादिक से पूजा करे, उसे अंग पूजा कहते हैं और प्रभुके सम्मुख नैवेद्य प्रमुख चढ़ावे उसे अग्रपूजा कहते हैं। प्रभुके सम्मुख शक्रस्तवादि गीत-गान नाटकादि करे उसे भाव पूजा कहते हैं। पूजा करते समय तीन अवस्था विचारना चाहिये—पिंडस्थ-पदस्थ-रुपातीत।

इसमें पींडस्थ के तीन भेद होते हैं—जन्मावस्था विचारना, राज्यावस्था विचारना, श्रमणावस्था को विचारना। केवली अवस्था को विचारना उसको पदस्थ अवस्था कहते हैं। निरंजन निराकार भाव को विचारना उसे रूपातीतावस्था कहते हैं। पूजा करते समय उपर्युक्त तीन अवस्थाओं को विचारना चाहिये। ऊर्द्ध-अधो-तिरछी दिशाको छोड़कर प्रभु सम्मुख ही नजर रखे। शुद्ध वर्णों का उच्चारण करने को वर्ण शुद्धिः शुद्ध अर्थों का अवलम्बन रक्खे, उसे अर्थ शुद्धि और जिन प्रतिमा के विचार में ही तल्लीन रहे, उसे मनः शुद्धि कहते हैं। चैत्यवंदन स्तवनादि करते समय तीन शुद्धियें रक्खे। योग मुद्रा, जिनमुद्रा, मुक्ताशुक्तिमुद्रा इन तीन मुद्राओं को धारन करे। "नमुत्थुणं" पढ़ते समय योगमुद्रा, काउसग्ग करते समय जिनमुद्रा, जयवियराय पढ़ते समय मुक्ता शुक्तिमुद्रा धारन करे। "जावंति चेइ-आइं" इत्यादि "इह संतोतत्थ संताई" तक जिनवन्दन प्रणिधान, "जावंत केविसाहु तिवि-हेणतिदंड विरयाणं" तक मुनिवन्दन प्रणिधान, "जयवियराय आभव मखंडा" तक प्रार्थना प्रणिधान चैत्यवन्दन में होते हैं। सचित्त द्रव्य कुसुमादिक अपने पास जो होवे उसे अलग रख दे (१) राजचिन्ह, मुकुट, छत्र, खड्ग, चामर, पादुका आदि

अचित्त वस्तु छोड़े, (२) मन एकाग्र रखे (३) एक पट्ट उत्तरा संग करना (४) जिनबिम्ब देखते ही "नमो भुवन बंधुणों" कह कर नमस्कार करे (५) पुरुष दाहिनी दिशा में बैठकर चैत्यवन्दन करे और स्त्री बाईं दिशा में बैठकर करे। जघन्य नव हाथ दूर, मध्यम नव हाथ से ऊपर और उत्कृष्ट साठ हाथ दूर बैठकर चैत्यवंदन करे। इस प्रकार विधि को करता हुआ नवपदाराधक भव्य जीव त्रिसंध्य देव वंदन करे, वह अन्यत्र छापा है।

अब यहां स्नात्र पूजा हमेशा करनी चाहिये उसे लिखते हैं।

❀ श्री वीतरागायनमः ❀

अथ श्री देवचन्द्र जी कृत स्नात्र पूजा।
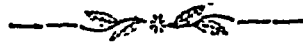
अथ मङ्गलाचरणम्।

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं एसोपंच णमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वे सिं पढमं हवइ मंगलं।

पांखडी गाथा।

चौतीसे अतिशय जुओ, वचनातिशय संजुत्त।
सो परमेश्वर देखि भवि, सिंहासण संपत्त॥ १॥

ढाल।

सिंहासण बैठा जग भाण, देखी भवियण गुण मणि खाण। जे दीठा तुज निम्मल नाण, लहिये परम महोदय ठाण॥ १॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा, तोरा

चरण कमल सेवे चौसठ इंदा । पूजोरे चौवीस, सोभागी चौवीस, वैरागी चौवीस जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्री मज्जिनेन्द्राय यजामहे स्वाहा ।

(यह पढ़ कर कुसुमांजली चढ़ाइजे, भगवन्त के चरण में टीकी दीजे) फिर हाथ में कुसुमांजली लेके नमोऽर्हत्सिद्धा० कहो पढ़े ।

गाथा ।

जो निज गुण पज्जवरम्यो, तसु अनुभव एगत्त ।
सुह पुग्गल आरोपतां, ज्योति सुरंग निरत्त ॥

ढाल ।

जो निज आतम गुण आनंदी, पुग्गल संगे जेह अफंदी । जे परमेश्वर निज पद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो शान्ति जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चौवीस पूजोरे चौवीस, सोभागी चौवीस, वैरागी चौवीस; जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो शान्ति जिणंदा ॥२॥

ॐ ह्रीं० ॥ कुसुमांजली चढ़ाइजे, गोडा (जांनु में) टीकी दीजे फिर हाथ में कुसुमांजली लेके नमोऽर्हत्सिद्धा० कही पढ़े ।

गाथा ।

निम्मल नाण पयासकर, निम्मल गुण सम्पन्न ।
निम्मल धम्मोवएसकर, सो परमप्पा धन्न ॥

ढाल ।

लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी वाणी । परमानन्द तणी निसाणी, तसु भगतें मुज मति ठहराणी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो नेमि जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चौवीस पूजोरेचौवीस, सौभागी चौवीस, वैरागी चौवीस जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो नेमि जिणंदा ॥२॥

ॐ ह्रां० ॥ कुसुमांजलि चढ़ाइजे, दोनों काण्डे (हाथे) टीकी दीजे ।

गाथा ।

जे सिद्धा सिज्झन्ति जे, सिज्झस्सन्ति अनन्त ।
जसुआलंबन ठविय मन, सो सेवो अरिहन्त ॥

ढाल ।

शिव सुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणामे जगत निहाले । उत्तम साधन मार्ग दिखाले, इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा ॥ तोरा

चरण कमल चौवीस, पूजोरे चौवीस; सौभागी चौवीस; वैरागी चौवीस, जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा ॥२॥

ॐ ह्री० ॥ दोनु खांधे (खभे) टीकी दीजे । बाद नमो० कही कहे ।

गाथा ।

सम्म दिट्ठी देशजय, साहु साहुणी सार ।
आचारज उवज्झाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥ १ ॥

ढाल ।

चौविह संघे जे मन धार्यो, मोक्ष तणो कारण निरधार्यो । विविह कुसुमवर जाति गहेवी, तसु चरणे प्रणमन्त ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चौवीस पूजोरे चौवीस सौभागी, चौवीस, वैरागी चौवीस जिणंदा, कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥२॥

ॐ ह्रीं० ॥ कुसु० ॥ मस्तक में टीकी दीजे । नमोऽर्हत्सिद्धा० कही चमर हाथ में लीजे ॥ इति पांखडीगाथा ॥

वस्तु ।

सयल जिनवर सयल जिनवर नमिय मनरंग । कल्ला-

एक विह संठ विय करिय सुधम्म सुपवित्त ॥ सुन्दर सय इक सत्तरि तित्थंकर । इक समे विहरंत महियल ॥ चवण समे इक्वीस जिण, जम्म समै इकवीस । भत्तियभावे पूजिया, करो संघ सुजगीस ॥ १ ॥

॥ इक दिन अचरा हुलरावती—एदेशी ॥

भव तीजे समकित गुण रम्या, जिन भक्ति प्रमुख गुण परिणम्या । तज इन्द्रिय सुख आशंसना, करि थानक वासनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रभावता, मन भावना एहवी भावता । सविजीव करुं शासन रसी, ऐसी भाव दया मन हुल्लसी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं भलूं, निपजावी जिन पद निरमलूं । आऊ बंधे विच इक भव, करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥ ३ ॥ तिहांथी चविय लहै नर भव उदार, भरते तिम एरवतेज सार । महा विदेह विजय प्रधान, मध्य खण्डे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥

ढाल ।

पुण्य सुपना हे देखे, मन में हर्ष विशेषे । गज वर उज्वल सुन्दर, निर्मल वृषभ मनोहर ॥ १ ॥ निर्भय केसरी सिंह, लक्ष्मी अति ही अवीह । अनुपम फूलनी माला, निर्मल शशि सुकुमाला ॥ २ ॥ तेज तरणि अति दीपै, इन्द्र-

ध्वजा जग जीपै । पूरण कलश पंडूर, पद्म सरोवर पूर ॥ ३ ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माता जी गुण सायर । बारमे भुवन विमान, तेरमे रत्न निधान ॥ ४ ॥ अग्नि शिखा निर्धूम, देखे माता जी अनूपम । हरखी राय ने भाषे, राजा अर्थ प्रकाशे ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुख कर, होसे पुत्र मनोहर । इन्द्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ ६ ॥

वस्तु ।

पुण्य उदय पुण्य उदय उपना जिणनाह । माता तब रयणी समें देखि सुपन हरखंत जागिय ॥ सुपन कही निज कंत ने सुपन अरथ सांभलां सोभागीय । त्रिभुवन तिलक महागुणी, होस्ये पुत्र निधान इन्द्रादिक जसु पाय नमी, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥

ढालचन्द्रा—उल्लालानी ।

सोहमपति आसन कंपियो, देई अवधि मन आणंदीयो । मुझ आतम निर्मल करण काज, भव जल तारण प्रगट्यो जहाज ॥ १ ॥ भव अडवी पारग सत्थ वाह, केवल नाणा इय गुण अगाह । शिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण

उलट्यो आषाढ़ि मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तव रोमराय, वलयादिक मां निज तनु न माय । सिंहासन थी उठ्यो सुरिंद, प्रणमन्तो जिण आणंद कन्द ॥ ३ ॥ सगअड पय सामो आवितत्थ, करी अञ्जलि प्रणमिय मत्थ सत्थ । मुख भाखे ए चण आज सार, तिय लोय पहु दीठो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोयदेव, विषयानल तापित तुम समेव । तसु शान्ति करण जलधर समान, मिथ्या विष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत्तारण समत्थ, प्रगटचो तस्र प्रणामी हुओ सनत्थ । इम जम्पी शक्र-स्तव करेवि, तव देव देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तव रंभा गीत गान, सुरलोक हुओ मंगल निधान । नर क्षेत्रे आरज वंश ठाम, जिनराज वधै सुर हर्ष धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उच्छव अशेष, जिन शासन मंगल अति विशेष । सुरपति देवादिक हर्ष संग, संयम अरथी जनने उमंग ॥ ८ ॥ शुभ वेला लगने तीर्थ नाथ, जनम्या इन्द्रादिक हर्ष साथ । सुख पाम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाई वधाई थई अतीव ॥ ९ ॥

फूल अक्षत से बधावे, तीन प्रदक्षिणा देवें और फिर श्री शक्र-स्तव कहे । पीछे रोली तथा केशर का हाथ में साथिया करे तथा धूप खेवे ।

॥ ढाल ॥

श्री तीर्थ पतिनो कलश मज्जन गाइये सुखकार ॥ नर क्षेत्र मंडण दुख विहंडण भविक मन आधार । तिहाँ राव राणा हर्ष उच्छव थयो जग जयकार । दिशि कुमरि अवधि विशेष जाणी, लह्यो हर्ष अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण छन्द । जिन जननि पासे आवी पोंहती गहकती आणन्द । हे माय तें जिनराज जायो शुचि वधायो रम्म । अम्ह जम्म निम्मल करण कारण करिस सूइअ कम्म ॥ २ ॥ तिहाँ भूमि शोधन, दीप, दर्पण, वाय विंजण धार । तिहाँ करिय कदली गेह जिन-वर जननी मज्जनकार । वर राखड़ी जिन पाणी बाँधी दिये इम आसीस, जुग कोड़ाकोड़ी चिरंजीवो धर्म दायक ईश ॥ ३ ॥

॥ ढाल इकवीसानी ॥

जग नायक जी त्रिभुवन जन हित कारए । परमातम जी चिदानन्द घन सारए । जिन रयणी जी दश दिस उज्जलता धरे । शुभ लगने जी ज्योतिप चक्र ते संचरे । जिन जनम्या जी जिन अवसर माता घरे । तिण अवसर जी इन्द्रासन पिण थरहरे ॥ १ ॥

॥ त्रोटक ॥

थरहरे आसन इन्द्र चिंते कवण अवसर ए बन्यो ।
जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आनंद ऊपनो ।
निज सिद्धि सम्पति हेतु जिनवर जाणि भगते ऊमह्यो ।
विकसंत वदन प्रमोद वधते देव नायक गह गह्यो ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

तब सुरपति जी घंटानाद करावए । सुरलोके जी घोषणा एह दिरावए । नरखेत्रे जी जिनवर जन्म हुवो अछे । तसु भगतें जी सुरपति मन्दिर गिर गछे ॥१॥

॥ त्रोटक ॥

गछे मन्दिर शिखर ऊपर भवन जीवन जिन तणो । जिन जन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सवि सुर-गणो ॥ तुम शुद्ध समकित थास्ये निर्मल देवाधि देव निहालतां । आपणा पातिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

इम सांभल जी सुरवर कोड़ी बहू मिली । जिन

वन्दन जी मन्दिर गिरि साहमी चली। सोहमपति जी जिन जननी घर आविया। जिन माता जी वन्दी स्वामी वधाविया ॥ १ ॥

॥ त्रोटक ॥

वधाविआ जिनवर हर्ष बहुले. धन्य हुं कृतपुण्य ए। त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पुत्र तुमचो मेरु मज्जन वर करी। उत्संग तुमचे वलिय थापिस आतमा पुण्ये भरी ॥

॥ ढाल ॥

सुर नायक जी जिन निज कर कमले ठव्या। पाँच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक विधि जी तव बत्तीस आगल वहे। सुर कोड़ी जी जिन दरशण ने ऊमहे ॥ १ ॥

॥ त्रोटक ॥

सुर कोड़ काड़ी नाचती वलि नाथ शुचि गुण गावती। अपसरा कोड़ी हाथ जोड़ी हाव भाव दिखावती ॥ जय जयो तूं जिनराय जगगुरु एम दे असीस

ए । अम्ह त्राण शरण आधार जीवन एक तूं जग-
दीश ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

सुर गिरवर जी पाँडुक वन में चिहुं दिसे । गिरि
सिल पर जी सिंहासन सासय वसे ॥ तिहाँ आणी जी
शक्रें जिन खोले ग्रह्या । चउसट्ठें जी तिहाँ सुरपति आवी
रह्या ॥ १ ॥

॥ त्रोटक ॥

आविया सुरपति सर्व भगतै कलश श्रेणि वणाव ए ।
सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि सर्व वस्तु अणाव ए ॥
अच्चुयपति तिहाँ हुकम कीनो देव कोड़ा कोड़ी नें । जिन
मज्जनारथ नीर ल्यावो सबै सुर कर जोड़ी ने ॥

॥ ढाल ॥

(शान्तिने कारणे इन्द्र कलशा भरे)

आतम साधन रसी देव कोड़ी हसी । उल्लसीने धसी
खीरसागर दिशी । पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई ।
तीर्थ जल अमल लेवा भणी ते गई । जाति अड़ अलश

करि सहस अट्ठोत्तरा, छत्र चामर सिंहासण शुभतरा। उपगरणं पुष्फ चंगेरि पमुहा सवे। आगमे भासिया तेम आणीइने। तीर्थ जल भरिय करि कलश करि देवता। गावतां भावतां धर्म उन्नतिरता। तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावतां। धन्य अम्ह शक्ति शुचि भक्ति इम भावतां। समकित बीज निज आतम आरोपतां। कलश पाणी मिसे भक्ति जल सींचतां। मेरु सिहरो वरे सर्व आव्या वही। शक्र उत्संग जिन देखि मन गहगही ॥

॥ गाथा ॥

हंहो देवा २ अणाइ कालो अदिट्ठ पुव्वो। तिलोय तारणो। तिलोय बंधु। मिच्छत्त मोह विद्धंसणो। आणाइ तिण्हा विणासणो देवाहि देवो दिट्ठव्वो हियय कामेहिं।

॥ ढाल ॥

एम पभणंत वण भुवन जोईसरा। देव वैमाणिया भत्ति धम्मायरा। केवि कप्पट्ठिया केवि मित्ताणुगा केई वर रमणी वयणेण अइ उच्छुगा ॥

॥ वस्तु ॥

तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय इन्द्र आदेश। कर जोडी

सब देवगण । लेई कलश आदेश पामिय । अद्भुत रूप स्वरूप जुय । कवण एह पुच्छंत सामिय ॥ इन्द्र कहे जग-तारणो पारग अम्ह परमेश । नायक दायक धम्म निहि । करिये तसु अभिशेष ॥

॥ ढाल ॥

(तीर्थ कमलवर उदक भरीनें पुस्करसागर आवे)

ए—देशी—

पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा । जिनवर अंगे नामें । आतम निर्मल भाव करंता वधते शुभ परि-णामें । अच्युतादिक सुरपति मज्जन लोकपाल लोकान्त । सामानिक इन्द्राणी पमुहा इम अभिषेक करंत ॥ पू० ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

तव ईशान सुरिंदो सक्कं पभणेइ सरिस सुपसाओ । तुम्ह अंके महनाहो । खिणमत्तं अम्ह अप्पेह ॥ २ ॥ तास-किंदो पभणइ । साहम्मि वच्छलम्मि वहुलाहो आणए वं तेणं गिण्हइ होइ कयत्था भो ॥ ३ ॥ (कलश ढाले)

॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषभ रूप कर । न्हवण करे प्रभु अंगे ॥ करिय विलेपन पुष्पमाल ठवि । वरआभरण अभंगे ॥ सो० ॥ नव सुरपति बहु जय जय रव कर । नाचे धरि आणन्द ॥ मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यो । भाजस्यूं हिव भव फंद ॥ सो० ॥ कोड़ बत्तीस सोवन उवारी । वाजंते वरनाद ॥ सुरपति संघ अमर श्री प्रभु ने । जननी ने सुप्रसाद ॥ सो० ॥ आणी थापी एम पयंपे अम्ह निस्तरिया आज । पुत्र तुमारो धणी अमारो तारण तरण जिहाज ॥ सो० ॥ मात जतन करि राखज्यो एहनें । तुम सुत हम आधार । सुरपति भक्ति सहित नंदीश्वर । करै जिन भक्ति उदार ॥ सो० ॥ निय निय कप्प गया सहु निज्जर । कहतां प्रभु गुणसार ॥ दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक । इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ॥ खरतरगच्छ जिन आणा रंगी । राजसागर उवझाय । ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक । सुगुरु तणें सुपसाय ॥ सो० ॥ देवचन्द जिन भक्तें गायो, जन्म महोच्छव छन्द ॥ बोधबीज अंकूरो उलस्यो । संघ सकल आणंद ॥ सो० ॥

॥ राग वेलाउल ॥

इस पूजा भगतें करो । आतम हितकाज ॥ तजिय

विभाव निज भावका । रमतां शिवराज ॥ इम० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हुआ । होस्ये जेह जिणन्द ॥ संपइ श्रीमंधर प्रभु । केवल नाण दिणन्द ॥ इम० ॥ २ ॥ जन्म महोच्छव इण परे । श्रावक रुचिवंत ॥ विरचै जिनप्रतिमा तणो । अनुमोदन गंत ॥ इम० ॥ ३ ॥ देवचंद जिनपूजना । करतां भव पार ॥ जिन पड़िमा जिन सारखी । कही सूत्र मझार ॥ इम० ॥ ४ ॥

इति स्नात्रपूजा सम्पूर्णम्
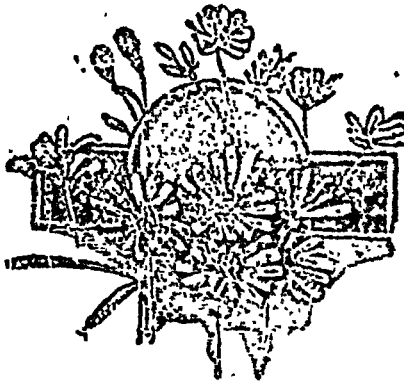
अथ श्री नवपद-पूजा ।

अथ प्रथम पूजा ।

॥ दोहा ॥

परम मन्त्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्यान !
अरिहंत पद पूजा करो, निज २ शक्ति प्रमाण ॥

॥ गाथा ॥

उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाडिहेरासणसंठियाणं । सद्देसणाणंदिय सज्जणाणं, णमो णमो होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

जिए शुद्ध भावें निजात्मा पिछान्यो, स्वबोधे छए द्रव्यनो भेद जान्यो । निज प्राग्भवें सत्तपः कर्म साध्यो । विपाकोदयी तीर्थ कृन्नाम बांध्यो ॥ १ ॥ यदीय प्रभावें

जगत् सुप्रसिद्धा, वसु प्रातिहार्यादि संपत्ति सिद्धा । परा-नंद मग्ना सदा जे विशोका । नमो ते जिनो सर्वदा भव्य लोका ॥ २ ॥ नमोनन्त सन्त प्रमोद प्रदान, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय । यथा जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा. सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ ३ ॥ कर्या कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणे, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणे । करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण काले ॥४॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दिये देशना भव्यने हित धरीने । सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपूता ॥५॥ कर्या घातिया कर्म चारे अलग्गा, भवोपग्रही चार जे छे विलग्गा । जगत् पंचकल्याणके सौख्य पामें, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामें ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

तीरथपति अरिहा नमूं, धरम धुरन्धर धीरो जी ।
देसना अमृत वरसता, निज वीरज वड वीरो जी ॥ती० १॥

॥ त्रोटक ॥

वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकाशता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म भावे चरण थिरता वासता । जिन

नाम कर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज शोभता, जगजन्तु करुणावन्त भगवन्त भविकजन ने थोभता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

(श्री सीमन्धर साहिब आगे ॥ ए-देशी ।)

तीजे भव वर थानक तप करि, जिण बांध्युं जिन नाम । चउसठ इन्द्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे भविका, सिद्धचक्र पद वन्दो जिम चिरकाल अनन्दो रे ॥भ०॥ उपशम रसनो कन्दो रे ॥भ०॥ रत्नत्रयीनो वृन्दो रे ॥भ०॥ वंदी ने आनन्दो रे सेवे सुरनर इन्दो रे ॥ भ० सि० ॥१॥ ए आँकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पिण उजवालूं ॥ सकल अधिक गुण अतिशय धारी, ते जिन नमि अघ टालूं रे ॥ भ० सि० ॥२॥ जे तिहुँ नाण समग्ग उपन्ना, भोग करम क्षीण जाणी । लेइ दीक्षा शिक्षा दिये जग ने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ भ० सि० ॥ ३ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामक सत्थवाह । उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमिये उच्छाह रे ॥भ० सि० ॥ ४ ॥ आठ महा प्रातीहारज छाजे, पैंतीस गुण-युत वांणी । जे प्रतिबोध करे जग जनने, ते जिन नमियें प्राणी रे ॥ भ० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

अरिहन्तपद ध्याती थको, दव्वह गुण पर्याये रे। भेद छेद करी आतमा, अरिहन्तरूपी थाये रे ॥१॥ वीर जिणेसर उपदिसे, सांभलजो चित लाई रे। आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मिले सब आई रे ॥ वी० ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

विमल केवल भासन भास्करं। जगति जन्तु महोदय कारणं। जिनवरं बहुमान जलौघतः। शुचि मनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने, अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये। जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत् आचार्य पदेभ्यां पंचामृतं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, वासं, यजामहे स्वाहा ॥

॥ इति अरिहन्त पद पूजा ॥

अथ द्वितीय पूजा।

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्ध की, कीजे दिल खुसियाल।
अशुभ करम दूरे टले, फले मनोरथ माल ॥१॥

॥ काव्य ॥

सिद्धाणमाणंदरमालयाणं, नमो २ णंत चउक्कयाणं। सम्मग्ग कम्मक्खय कारगाणं, जम्मंजरा दुक्ख निवारगाणं ॥ १ ॥ निजानादि कर्माष्ट क्षय करी ने। जरा मृत्यु जन्मादि दूरे हरीने। स्थिता सर्व लोकाग्र भागे विशुद्धा। चिदा नंद रूपा स्वरूपे प्रसिद्धा ॥ २ ॥ निजानन्त बोधादि युक्ता प्रदेशा। निराबाधता निर्वृता जे अलेशा। निराकार साकार भावे महंता। भजो ते प्रमोदे सदा सिद्ध संता ॥ ३ ॥ करी आठ कर्म क्षये पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या। निरावर्ण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ ४ ॥ त्रिभागोन देहावगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमय जाति वर्णादि लेशा। सदानन्द सौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

सकल कर्म मल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी।
अव्याबाध प्रभुतामई, आतम संपति भूपो जी ॥

॥ त्रोटक ॥

जे भूप आतम सहज सम्पति, शक्ति व्यक्ति पणे करी।

स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकालभावें, गुण अनंता आदरी । स्वस्वभाव गुणपर्याय परणति, सिद्धसाधन परभणी, मुनिराज मानस हंस समवड़, नमो सिद्ध महा गुणी ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

समय पएसंतर अणफरसी चरम तिभाग विशेष । अवगाहन लहि जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते अशेष रे भ० ॥ १ ॥ पूर्व प्रयोग ने गति परिणामे, बन्धन छेद असग । समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥भ० सि०॥ २ ॥ निरमल सिद्धशिलाने ऊपर, जोयण एक लोकन्त । सादि अनन्त तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो सन्त रे ॥ भ० सि० ॥ ३ ॥ जाणें पिण न सके कही पर गुण, प्राकृत तिम गुण जास । ओपमा विण नांणी भवमांहे, ते सिद्ध दीयो उल्लास रे ॥ भ० सि० ॥ ४ ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम, विरमी सकल उपाधि । आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ भ० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

रूपातीत स्वभावजे, केवल दंसण नांणीं रे । ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण खाणीं रे ॥ वी० ॥

॥ श्लोक ॥

विमल केवल० ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने, अनन्तानन्त ज्ञान शक्त्ये । जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत् सिद्ध पदेभ्यो अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ इति श्री सिद्धपद दूजी–पूजा ॥

अथ तृतीय पूजा ।

॥ दोहा ॥

हिव आचारज पद तणी, पूजा करो विशेष ।
मोह तिमिर दूरे हरे, सूझे भाव अशेष ॥१॥

॥ काव्य ॥

सूरीणदूरीकयकुग्गहाणं, नमो नमो सूरिसमप्पहाणं ।
सद्देसणा दाणसमायराणं, अखंड छत्तीस गुणायराणं ॥१॥
नमूं सूरिराजा सदा तत्वताजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ़ साम्राज्य-भाजा । षट् वर्ग वर्गित गुणे शोभमाना, पंचाचारने पालवे सावधाना ॥ २ ॥ जिके पंच आचारज पालें सुभावें ।

अनित्यादि सद्भावना नित्य भावें। जिनेंद्रागमे ज्ञान दानें सुरत्ता। वहु भव्य में जे रहें अप्रमत्ता ॥ ३ ॥ छत्तीसे गुणें दीप्यमाना गणेशा। सदा शासनाधार भूता सुलेशा। वहू भव्य लोका सुमार्गे नयन्ता। हुज्यो सूरि मुज्या सदा तेजवन्ता॥ ४ ॥ भविप्राणि नें देशना देशकाले, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले। जिके शासना धार दिग्दन्त-कल्पा, जगत्ते चिरंजीव ज्यो शुद्ध जल्पा ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

आचारज मुनि पति गुणी। गुण छत्तीसे धामो जी। चिदानन्द रस स्वादता। परभावें निक्कामो जी ॥१॥आ०

॥ त्रोटक ॥

निःकाम निर्मल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधार थी। वर ज्ञान दरसण चरण वीरज, साधना व्यापार थी॥ भवि जीव वोधक तत्व सोधक, सयल गुण सम्पति धरा। सँवर समाधि गति उपाधि, दुविध तप गुण आगरा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

पंच आचार जे सूधा पालें, मारग भाखे सांचो। ते आचारज नमिये नेहसूं, प्रेम करीने जांचोरे भ० ॥१॥

वर छत्तीस गुणें करि शोभें, युग प्रधान जग वोहै। जग मोहै न रहै खिण कोहै, सूरि नमूं ते जोहै रे। भ० सि० ॥ २ ॥ नित अप्रमत्त धरम उवएसे, नहि विकथा न कषाय। जेहनें ते आचारज नमियें, अकलुष अमल अमाय रे ॥भ० सि० ॥ ३ ॥ जे दियें सारण वारण चोयण पडिचोयण वलि जननें। पटधारी गछथंभ आचारज, ते मान्या मुनि मननें रे ॥भ० सि०॥ ४ ॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदीजै जग दीवो। भुवन पदारथ प्रगटन पटु ते, आचारज चिरंजीवो रे ॥ भ० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

ध्याता आचारज भला, महामन्त्र शुभ ध्यानी रे। पंच प्रस्थानें आतमा, आचारज होय प्राणी रे ॥३॥ वीर० ॥

॥ श्लोक ॥

विमल केवल०॥ ॐ ह्रीं परम० आचार्य० ॥

॥ इति श्री आचार्य जी तृतीय पूजा ॥

अथ चतुर्थ पूजा ।

॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना, सुन्दर शोभित गात्र ।
उवझाया पद अरचिये अनुभव रसनो पात्र ॥१॥

॥ गाथा ॥

सुत्तत्थ वित्थारण तप्पराणं । णमोणमो वायग कुंजराणं । गणस्स संधारण सायराणं । सव्वप्पणा वज्जिय मच्छराणं ॥१॥ महा सूत्र सिद्धान्त शुद्धे करीनें । पढ़ावे सुशिष्याँ अनुग्रह धरीनें । करें पूजना लोक मध्ये तदीया स्फुरन्ती इशी जास शक्ति स्वकीया ॥ २ ॥ गणे सार शुद्धि सहर्षं करन्ता । मुनीवर्ग मध्ये प्रमादं हरन्ता । पचीसे गुणे युक्तदेहा सुधूर्या । सदा वन्दिये ते उपाध्याय पूर्या ॥ ३ ॥ नहीं सूरि पण सूरिगुण ने सुहाया । नमूँ वाचका त्यक्त मद मोह माया । वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दाने । जिके सावधाने निरुद्धाभिमाने ॥ ४ ॥ धरे पंच नें वर्ग वर्गित गुणौघा । प्रवादी द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघा । गुणी गच्छ संधारणे स्तम्भ भूता । उपाध्याय ते वन्दिये चित् प्रभूता ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

खन्तिजुआ मुत्तिजुआ । अज्जव मद्दव जुत्ताजी । सच्चं-सोय अकिंचना । तव संयम गुणरत्ता जी ॥१॥खंति०॥

॥ त्रोटक ॥

जे रम्या ब्रह्म सुगुप्त गुप्ता । सुमति सुमता श्रुत धरा । स्याद्वाद वादें तत्ववादक । आतम पर वीभंजन करा । भव भीरु साधन धीर शासन वहनधोरी मुनिवरा । सिद्धान्तः वायण दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

द्वादश अंग सिज्झाय करे जें । पारग धारग तास । सूत्र अरथ विस्तार रसिक ते । नमो उवज्झाय उलासे रे । भ० सि० ॥१॥ अर्थ सूत्र नें दान विभागें । आचारज उव-झाय । भव तीजे जे लहे शिव संपद । नमिये ते सुपसायें रे । भ० सि० ॥२॥ मूरख शिष्य निपायें जे प्रभु । पाहण नें पल्लव आणें । ते उवझाय सकल जन पूजित । सूत्र अरथ सव जाणे रे । भ० सि० ॥३॥ राजकुमर सरिखा गण चिंतक । आचारज पद योगें । जे उवझाय सदा ते नमतां । नावें भव भय सोगे रे । भ० सि० ॥४॥ वावना चन्दन रस सम

वयणे । अर्हित ताप सविटालें । ते उवझाय नमीजे जे वलि । जिन शासन अजुवाले रे । भ० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

तप सिज्झाये रत सदा । द्वादश अंगनो ध्यातारे । उपाध्याय ते आतमा । जग वन्धव जग भ्राता रे । वी० ॥

॥ श्लोक ॥

विमल केवल० ॥ ॐ ह्रीं परम० उपा० ॥

॥ इति श्री उपाध्याय जी चतुर्थ पद पूजा ॥

अथ पंचम पूजा ।

॥ दोहा ॥

मोक्ष मारग साधन भणी, सावधान थया जेह ।
ते मुनिवर पद वंदतां, निर्मल थायें देह ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

साहूण संसाहिय संयमाणं । नमो नमो शुद्ध दयादमाणं । तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाणं मुणीण मानंद

पयट्ठियाणं ॥ १ ॥ जिके दर्शन ज्ञान चरित्र रत्नें । करी मोक्ष साधें प्रधान प्रयत्नें । सुमत्ती गुपत्ती धरे सावधाना। शुभाचार पालें हरें मोह माना ॥ २ ॥ विवर्जें विकत्था प्रमादादि दोषा । जितेंद्री पणें जे महा ज्ञान कोसा । शुभ ध्यान ध्यावें गुणोघें समिद्धा । नमो ते सदा सर्व साधु प्रसिद्धा ॥ ३ ॥ करैं सेवना सूरिवायग गणी नी । कहूं वर्णना तेहनी सी सुणीनी । समेता सदा पंच सुमति त्रिगुप्ता । त्रिगुप्ते नहीं काम भोगेषु लिप्ता ॥ ४ ॥ वली बाह्य अभ्यंतरे ग्रंथि टाली । हुइं मुक्ति नें योग्य चारित्र पाली । शुभाष्टांग योगें रमें चित्त वाली । नमूं साधु ने तेह निज पाप टालीं ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

सकल विषय विषवारनें। निकामी निस्संगी जी। भव दव ताप समावता । आतम साधन रंगीजी ॥ ६ ॥

॥ त्रोटक ॥

जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे देह निर्मम निर्मदा । का उसग्ग मुद्रा धीर आसन ध्यान अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दीपें कर्म जीपें नहीं छीपें परभणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन बंधु प्रणमूं हित भणी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

जिम तरु फूलें भमरो वैसें। पीड़ा तसु न उपावे। लेई रस आतम सन्तोषें। तिम मुनि गोचरि जावे रे। भ० सि० ॥ १ ॥ पंचेन्द्रीनें जे नित जीपें। षट कायक प्रतिपालें। संयम सतरे प्रकार आराधे। वन्दों तेह दयाल रे। भ० सि० ॥ २ ॥ अठार सहस्स शीलांगनाधोरी। अचल आचार चरित्र। मुनि महन्त जयणा युत वन्दी। कीजे जनम पवित्तरे। भ० सि० ॥३॥ नव विध ब्रह्म गुप्त जे पालें। बारह विह तपं सूरा। एहवा मुनि नमिये जे प्रगटें। पूरव पुण्य अंकूरा रे। भ० सि० ॥ ४ ॥ सोनानी परें परिक्षा दीसे। दिन दिन चढ़ते वाने। संयम खप करता मुनि नमिये। देशकाल अनुमाने रे। भ० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

अप्रमत्त जे नित रहे। नवि हर्षे नवि सोचें रे। साधु सुधा ते आतमा। स्युं मूंड़े स्युं लोचे रे। वी० ॥

॥ श्लोक ॥

विमल केवल० ॥ ॐ ह्रीं० परम० साधु० ॥

॥ इति पंचम साधु पद पूजा ॥

अथ पञ्चम पूजा ।

॥ दोहा ॥

जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्त्व तणी परतीत ।
ते सम्यग दर्शन सदा, आदरिये शुभ रीत ॥

॥ गाथा ॥

जिणुत्त तत्ते रुइलक्खणस्स । नमो नमो निम्मल दंशणस्स । मिच्छत्त नासाइ समुग्गमस्स । मूलस्स सद्धम्म महा दुमस्स ॥ ॥अनन्तानुबन्धी कषायादि प्रकारें । महामोह मिथ्यात्व नें जेह वारें । इत्यादि भेदें करी वर्णवीजें । सड़सट्ठि भेदें वली जे थुणीजे ॥ २ ॥ जिनेन्द्रोक्त तत्वार्थ श्रद्धान रूपो । गुणा सर्व मध्ये प्रवर्त्ते अनूपो । विना जेण नाणं चरित्तं न शुद्धं । सुहं दंशणं तं नमःमो विशुद्धं ॥३॥ विपर्य्यास हो वासना रूप मिथ्या । टलै जे अनादि अछें जे कुपथ्या । जिनोक्ते हुए सहज थी शुद्ध ध्यानं । कहीये दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ ४ ॥ विना जेह थी ज्ञान मज्ञान रूप ।

चरित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं। प्रकृति सातने उपशमें क्षयें तेह होवें। तिहां आप रूपे सदा आप जोवें ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

सम्यग दर्शन गुण नमो। तत्व प्रतीत स्वरूपोजी। जसु निरधार स्वभाव छै। चेतन गुण जे अरूपोजी ॥ ५ ॥

॥ त्रोटक ॥

जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटैं। सयल पर ईहा टलैं। निज शुद्ध श्रद्धा भाव प्रगटैं। अनुभव करुणा ऊछलैं। बहुमान परणति वस्तु तत्वैं। अहवसुर कारण पणैं। निज साध्य दृष्टें सर्व करणी। तत्वता संपति गिणैं ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा। सद्दहणा परिणाम। जेह पांमी जे तेह नमीजे। सम्यग्दर्शन नामें रे। भ० सि० ॥१॥ मल उपशम क्षय उपशम क्षयथी। जे होइ त्रिविध अभंग। सम्यगदर्शन तेह नमीजे। जिन धर्मे दृढ़ रंगें रे। भ० सि० ॥ २ ॥ पंचवार उपशम लहीजै। क्षयउपशमिय असंख। एक वार क्षायक ते सम्यग्दर्शन नमिये असंख रे। भ०

सि० ॥ ३ ॥ जे विण नाण प्रमाण न होवें । चारित तरु-
नवि फलियो । सुख निर्वाण न जे विण लहिये । समकित
दर्शन बलियो रे । भ० सि० ॥४॥ सड़सठ बोलें जे अलं-
करियो । ज्ञान चारित्तनूं मूल । समकित दर्शन ते नित
प्रणमं । शिव पन्थ नुं अनुकूल रे । भ० सि० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

शमसंवेगादिक गुणा । क्षय उपशम जे आवें रे । दर्शन
तेहिज आतमा । स्युं होवे नाम धरावें रे । वी० ॥१॥

॥ श्लोक ॥

विमल० केवल० ॐ ह्रीं परम० दर्शन पद० ६ ॥

॥ इति श्री षष्ठम दर्शन पद पूजा ॥

अथ सप्तम पूजा ।

॥ दोहा ॥

सप्तम पद श्री ज्ञानतो, सिद्ध चक्र तप मांहि ।
आराधीजे शुभ मने, दिन दिन अधिक उछाह ॥१॥

॥ गाथा ॥

अन्नाण संमोह तमोहरस्स । नमो नमो नाण दिवाय-
रस्स । पंचप्पयार स्सुवगारगस्स सत्ताण सव्वत्थ पया-
सगस्स ॥१॥ हुए जेह थी सर्व अज्ञान रोधो । जिनाधीश्वर
प्रोक्त अर्थाववोधो । मतीआदि पंचप्रकार प्रसिद्धो ।
जगद्भासने सर्वदैवाविरुद्धो ॥ २ ॥ यदीय प्रभावें सुभक्तं
अभक्तं । सुपेयं अपेयं सुकृत्यं अकृत्यं । जिणे जांणियें लोक
मध्ये सुनाणं । सदा मे विशुद्धं तदेव प्रमाणं ॥ ३ ॥ हुइ
जेह थी ज्ञान शुद्धि प्रबोधे । यथावर्णनासे विचित्राववोधे
तिणे जाणिये वस्तु षड् द्रव्य भावा । नहोवें वितत्थानि-
जेच्छा स्वभावा ॥ ४ ॥ होइ पंचमत्यादि सुज्ञान भेदें ।
गुरु पास थी योग्यता तेण वेदे । वलिज्ञेय हेया उपादेयरूपें ।
लहें चित्तमां जेम ध्यानें प्रदीपें ॥

॥ ढाल ॥

भव्य नमो गुण ज्ञाननें, स्वपर प्रकाशक भावें जी ॥
पर्याय धर्म अनंतता, भेदा भेद स्वभावें जी भ० ॥ १ ॥

॥ त्रोटक ॥

जे मुख्य परणित सकल ज्ञायक । वोध वास विला-

सता । मति आदि पंच प्रकार निर्मल । सिद्धसाधन लंछता । स्याद्वाद संगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता । सविकल्पनें अविकल्प वस्तु । सकल संशय छेदता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

भक्ष अभक्ष न जे विन लहिये । पेय अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जेविन लहिये । ज्ञान ते सकल आधाररे । भ० सि० ॥ १ ॥ प्रथम ज्ञाननें पीछे अहिंसा । श्री सिद्धांते भाख्यूं । ज्ञान नें वंदो ज्ञान मनिंदो । ज्ञानीयें शिव सुख चाख्यूरे । भ० सि० ॥२॥ सकल क्रियानूं मूल जे श्रद्धा । तेहनूं मूलजे कहिये । तेह ज्ञान नित नित वंदीजै । ते विन कहो किम रहिये रे । भ० सि० ॥ ३ ॥ पाँच ज्ञान मांहि जेह सदागम । स्वपर प्रकाशक तेह ॥ दीपक पर त्रिभुवन उपकारी । वलि जिम रवि शशि मेहरे । भ० सि०॥४॥ लोक उरध अध तिर्यग् ज्योतिष । वैमानिक नें सिद्धि ॥ लोक अलोक प्रगट सव जेह थी । ते ज्ञानें मुझ सिद्धि रे । भ० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थाये रे । तो होय एहिज आतमा, ज्ञान अवोधता जाये रे । वी० ।

॥ श्लोक ॥

विमल० केवल० ॐ ह्रीं परम परमात्मने ज्ञान० ॥

॥ इति श्री सप्तम ज्ञान पद पूजा ॥

अथाष्टम पूजा ।

॥ दोहा ॥

अष्टम पद चारित्र नों, पूजो धरी उमंद ।
पूजत अनुभव रस मिलै, पातिक होय उच्छेद ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

आराहिया खंडिअ सक्किअस्स । नमो नमो संयम वीरिअस्स । सज्झावणा संग निवड्डि अस्स निव्वाण दाणाई समुज्जयस्स ॥ १ ॥ फलै जेह संपूर्ण थी तत्त-कालं । सुणाणंपि सर्वात्मभावे विशालं । जिणें आदर्यो जे प्रयत्नें करी नें । दियो लोक नें जे अनुग्रह धरीने ॥ २ ॥ हुवे जेहथी रंक लोकोपि पूज्यो । गुण श्रेणि थी दीपतो जेम सूर्यो । स्वकीये सुभेदैं करी जे विचित्रं । जयो ते सदा लोक मध्ये चरित्रं ॥ ३ ॥ वली ज्ञान फल ते

धरीये सुरंगें । निरासंशता द्वार रोधे प्रसंगे । भवां भोधि संतारणे यान तुल्यं । धरुं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥ ४ ॥ होय जास महिमा थकी रंक राजा । वली द्वादशांगी भणी होइ ताजा । वली पापरूपोपि निः पाप थावे । थई सिद्धते कर्मनें पार जावे

॥ ढाल ॥

चारित्र गुण वलि २ नमो । तत्व रमण जसु मूलो जी । पर रमणीय पणों टलें । सकल सिद्ध अनुकूलो जी ॥ चा० ॥

॥ त्रोटक ॥

प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम तत्व थिरता दम मयी । शुचि परम खंती मुनिंद शम पद । पंच संवर उपचयी । सामायिकादिक भेद धर्मं यथाख्यातें पूर्णता । अकषाय अकुलुप अमल उज्जल काम कश्मल चूर्णता ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

देश विरतिनें सर्व विरतिजे । गृही यती अभिराम । ते चारित्र जगत जयवंतो-कीजे तास प्रणामरे । भ० सि० ॥१॥ तृण परि जे षटखंड सुख छंडी । चक्रवर्त्ति पणि वरियो ॥ ते चारित्र अखय सुख कारण । ते में मन मांहि धरियोरे

भ० सि० ॥२॥ हुआ रंक पिण जेहनें आदरि । पूजित इंद नरिंद । अशरण शरण तेहिज वारु । वरिउ ज्ञान आनंद रे भ० सि० ॥३॥ बारमास परिजायें जेहने अनुत्तर सुख अतिक्रमिये । शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते ऊपर । ते चारित्र नें नमियेरे भ० सि० ॥४॥ चयते आठ कर्म नो संचय । रिक्त करैजे तेह । चारित्र नाम निरुत्तै भाष्यूं । ते वंदूं गुण गेहरे भ० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

जाणी चारित्र ते आतमा । निज स्वभाव मांहि रमतोरे । लेश्या शुद्ध अलंकर्यो । मोह वने नवि भमतोरे ॥वीर०॥१३॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल केवल० ॐह्री परम परमा० चारित्र०

॥ इत्यष्टमी चारित्रपद पूजा ॥

अथ नवम पूजा ।

॥ दोहा ॥

कर्म काष्ट मति जालवा, परतिख अग्नि समान ।
तप पद पूजो भवि सदा, निर्मल धरिये ध्यान ॥१॥

॥ गाथा ॥

उप्पन्नसन्नाण महोमयाणं सपाडिहेरासण संठियाणं । सद्देसणाणंदिअ सज्जणाणं नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ इय नव पयसिद्धं लद्धि विज्जा समिद्धं । पयडिय सरवग्गं ह्रींति रेहा समग्गं । दिसिवइ सुर सारं खोणि पीढा वयारं । तिजय विजय चक्कं सिद्ध चक्कं नमामि ॥ २ ॥ त्रिये जे कह्यो आतमा उज्जवाले । घणा कालनी कर्म राशि प्रजाले । अनेका सुलब्धी लहे यत् प्रभावें । क्षमायुक्त ए साधु महानन्द पावें ॥ ३ ॥ तथा बाह्य अभ्यंतरें भेद भिन्नं । जिनेन्द्रागमें वर्णव्युं जे अछिन्नं । अनासंस भावें तिलोके स्तुवंयं । नमूं ते प्रमोदे तपः पद मनिंद्यं ॥ ४ ॥ इति जिनवर वृन्दं भक्तितो ये स्तुवन्ति । परम पद निधानं मानसे संस्मरन्ति । परभव इह वा श्रीपालवन्मानवानां प्रभवति किल तेषां चारु कल्याण लक्ष्मीः ॥५॥ त्रिकालिक पणें कर्म कषाय टाली । निकाचित पणे बांधिया तेह बाली । कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यन्तर दुभेदे । क्षमा युक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ ६ ॥ होई जास महिमा थकी लद्धि सिद्धि । अवांछक पणें कर्म आवरण शुद्धि । तपो तेह तप जे महानन्द हेते । होई सिद्धि सीमन्तिनी जिम संकेते ॥७॥ इसा नवपद ध्यान नें जेह ध्यावें । सदानन्द

चिद्रूपता तेह पावें । वली ज्ञान विमलादि गुण रत्न धामा नमो तेह वृन्दा सिद्ध चक्र प्रधाना ॥८॥ इम नवपद ध्यावें । परम आनन्द पावें । नव भव शिव जावें । देव नर भव पावें । ज्ञान विमल गुण गावें । श्री सिद्ध चक्र प्रभावें । सवि दुरित समावें । विश्व जयकार पावें ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥

इच्छा रोधन तप नमो । बाह्य अभ्यन्तर भेदें जी । आतम सत्ता एकता । पर परणिति उछेदें जी ॥

॥ त्रोटक ॥

उच्छेद कर्म अनादि सन्तति जेह सिद्ध पणो वरें । योग संग निद्रा आहार टाली । भाव अक्रियता करें । अन्तर महूरत तत्व साधे सर्व संवरता करी । निज आतम सत्ता प्रगट भावें । करो तप गुण आदरी ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥

इम नव पद गुण मण्डलं । चउ निक्षेप प्रमाणेंजी । सातनये जे आदरें । सम्यग् ज्ञाने जाणें जी ॥

॥ त्रोटक ॥

निरधार सेती गुणें गुणनो करें जे बहुमान ए । जसु

करण ईहा तत्त्व रमणे थाये निर्मल ध्यान ए। इम शुद्ध सत्ता भलो चेतन सकल सिद्धी अनुसरे। अक्षय अनन्त महन्त चिद्घन परम आनंदता वरे ॥१॥

॥ कलश ॥

इम सयल सुख कर गुण पुरंदर सिद्धचक्र पदावली। सवि लद्धि विज्जा सिद्धि मन्दिर भविक पूंजो मनरली॥ उवझाय वर श्री राजसागर ज्ञान धर्म सुराजता। गुरु दीपचन्द सु चरण सेवक देवचन्द सुशोभता॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

जाणंता तिहुं ज्ञाने संयुत, ते भव मुक्ति जिणंद। जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप सुर तरु कन्द रे॥ भ० ॥ १ ॥ करम निकाचित पिण क्षय जावे, क्षमा सहित करंतां। ते तप नमिये तेह दिपावे, जिन शासन उजपंतां रे॥ भ० ॥ २ ॥ आमोसही पमुहा बहु लद्धि, होई जास प्रभावे। अट्ठ महा सिधि नव निधि प्रगटे, नमिये ते तप भावे रे॥ भ० ॥ ३ ॥ फल शिवसुख मोटुं सुर नर वर, सम्पति जेहनूं फूल। ते तप सुर तरु सरिखो वंदूं, सम मकरन्द अमूल रे॥ भ० ॥ ४ ॥ सर्व मंगल

मांहिं प्रहिलुं मंगल, वरणवियुं जे ग्रंथे। ते तप पद त्रिकरण नित नमिये, वर सहाय शिव पंथे रे ॥भ०॥५॥
इम नव पद थुणतो तिहाँ लीनो, हुओ तन्मय श्रीपाल। सुजस विलास छे चौथे खंडे, एह इग्यारमी ढालरे ॥भ०॥ ६॥

॥ ढाल ॥

इच्छा रोधे संवरी, परणति समता योगे रे। तप ते एहिज आतमा, वरते निज गुण भोगे रे ॥ वीर० ॥ १ ॥ आगम नो आगम तणो, भाव ते जाणो सांचो रे। आतम भावे थिर हुओ, पर भावे मत राचो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घट मांहे रिद्धि दाखी रे। तिम नव पद रिद्धि जाणज्यो, आतमराम छे साखी रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नव पद मुख्य ते जाणो रे। एह तणे अवलंबने, आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥वीर०॥४॥ ढाल बारमी ए हवी, चौथे खंडे पूरी रे। वाणी वाचक जस तणी, कोई नये न अधूरी रे ॥५॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल केवल० ॐ ह्रीं तप से० ॥

॥ इति तप पद पूजा ॥

॥ इति बृहन्नवपद पूजा सम्पूर्ण ॥

॥ अथ नवपद जी को आरती ॥

जय जय जग जन वंछित पूरण सुर तरु अभिरामी। आतम रूप विमलकर तारक अनुभव परिणामी ॥ज०॥१॥ जय २ जग सारा, भविजन आधारा, आरति पार उतारा, सिद्ध चक्र सुखकारा ॥ ज० ॥ २ ॥ जग नायक जग गुरु जिन चन्दा, भज श्री भगवंता। आतम राम रमा सुख भोगी, सिद्धा जयवंता ॥ ज० ॥ ३ ॥ पंचाचार दिये आचारज, युगवर गुणधारी। धारक वाचक सूत्र अरथना पाठक भव तारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ सम दम रूप सकल गुण धारक, मोटा मुनिराया। दरसण नाण सदा जयकारक, संजम तप गाया ॥ ज० ॥ ५ ॥ नवपद सार परम गुरु भाषै, सिद्ध चक्र जयकारी। इह भव परभव रिधि सिद्धि दायक, भव सायर वारी ॥ ज० ॥ ६ ॥ कर जोड़ी सेवक जस गावे, मन वांछित पावे। श्रीजिनचन्द चरण परि पूजक शिव कमला पावे ॥ ज० ७ ॥

॥ इति नवपद आरती सम्पूर्णा ॥

॥ श्री नवपद जी की आरती ॥

ए नवपद प्राणी नित ध्यावो, पंचम गति सासय सुख पावो ॥ टेर ॥ धुर थी अरिहंत पद ध्याई जे, थिरताए

श्री सिद्ध सुणीजे ॥ए०॥ १ ॥ आचारज तीजे आराधो, शुद्धे मन निज कारज साधो ॥ए०॥ २ ॥ उवझाया पंचम अणगारा, प्रणमंताँ पामे भव पारा ॥ ए० ॥ ३ ॥ दंसण नाण चरण भलाँ दीपे, तप तपताँ कर्म अरि ने जीपे ॥ए० ॥ ४ ॥ ए नवपद प्राणी नित थुणताँ, गिरुआ नर भव सफल गिणंतां ॥ ए० ॥ ५ ॥ सिद्धचक्र नी कीजे सेवा, मन वांछित लहिए नित मेवा ॥ए०॥ ६ ॥ अजर अमर सुख दायक साचो, रूडे मन से नित प्रति राचो ॥ए० ७॥
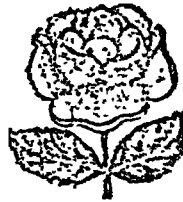
॥ अथ अष्ट प्रकारी पूजा ॥

॥ जल पूजा ॥

विमल केवल भासन भास्करं जगति जंतु महोदय-कारणं। जिनवरं वहु मान जलौघतः शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

॥ चन्दन पूजा ॥

सकल मोह तिमिश्र विनाशनं, परम शीतल भाव युतं जिनं। विनय कुंकुम दर्शन चन्दनैः, सहजतत्वविकाश-कृतेऽर्चये ॥२॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

॥ पुष्प पूजा ॥

विकच-निर्मल-शुद्ध-मनोरमै, विशद-चेतन-भाव समुद्भवैः। सुपरिणाम प्रसून घनैर्नवैः, परमतत्वमयं हि यजाम्यहं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त

ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ धूप पूजा ॥

सकल कर्ममहेन्धन दाहनं, विमल-संवर-भाव-सुधूपनं। अशुभ पुद्गल संग विवर्ज्जनं, जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्माने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ दीप पूजा ॥

भविक निर्मल बोध विकाशकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं। सुगुण-राग-विशुद्धि समन्वितं, दधतु भाव-विकाशकृते जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ अक्षत पूजा ॥

सकल मंगल केलि निकेतनं, परम मंगल भाव मयं जिनं। श्रयंत भव्य जना इति दर्शयन्, दधतु नायपुरोऽक्षत स्वस्तिकं ॥६॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त

ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु- निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ नैवेद्य पूजा ॥

सकल-पुद्गल-संग-विवर्ज्जनं, सहज-चेतन-भाव विलासकं । सरस भोजन नव्य निवेदनात्, परम-निर्वृति भाव महं स्पृहे ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

॥ फल पूजा ॥

कटुक-कर्म-विपाक विनाशनं, सरस-पक्व-फल व्रज-ढौकनं । विहित-मोक्ष-फलस्य विभोः पुरः, कुरुत सिद्धि फलाय महाजनाः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ अर्घ पूजा ॥

इति जिनवर वृन्दं भक्तितः पूजयन्ति, परम सुख निधानं देवचन्द्रं स्तुवन्ति । प्रति दिवसमनन्तं तत्व सुद्भासयन्ति, परम सहज रूपं मोक्ष-सौख्यं श्रयंति ॥१॥ ॐ ह्रीं

परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय अर्घ्यं यजामहे स्वाहा ॥१॥

॥ वस्त्र पूजा ॥

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैल चूला-
सिंहासनोपरि गतः स्नपनावसाने ।
दध्यक्षतैः कुसुम-चन्दन-गंध-धूपैः,
कृत्वार्च्चनं तु विदधाति सुवस्त्र-पूजां ॥

तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिना लंकार-वस्त्रादिकां । पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्या र्हताम् ॥ नीरागस्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥

श्रीनवपद वासक्षेप पूजा।

अरिहंत पद पूजा ॥१॥

तीरथपति अरिहा नमूं, धर्म धुरंधर धीरोजी।
देशना अमृत वरसतो, निजवीरज वड़वीरोजी ॥१॥
वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्वभाव प्रकाशता,
निज शुद्ध सत्ता आत्म भावे चरण थिरता वासता।
जिन नाम कर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज शोभता,
जगजंतु करुणावंत भगवंत भविक जनने थोभता ॥२॥
ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञान शक्तये जन्म जरा
मृत्यु निवारणाय वासं यजामहे स्वाहा॥

सिद्ध पद पूजा ॥२॥

सकल करम मल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी।
अव्याबाध प्रभुतामयी, आतम संपति भूपोजी ॥१॥
जे भूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्तिपणे करी,
स्वद्रव्य क्षेत्र सुकाल भावे गुण अनंता आदरी।
स्व स्वभाव गुण पर्याय परिणति सिद्ध साधन पर भणी,
मुनिराज मानस हंस समवड़ नमो सिद्ध महागुणी ॥२॥
ॐ ह्रीं परमात्मने० वासं यजामहे स्वाहा॥

आचार्य पद पूजा ॥३॥

आचारज मुनिपति गणी, गुण छत्तीसे धामोजी।
चिदानन्द रस स्वादता, परभावे निक्कामोजी ॥१॥
निकाम निरमल शुद्ध चिदघन साध्य निज निरधार थी,
वर ज्ञान दरसन चरण वीरज साधना व्यापार थी।
भवि जीव बोधक तत्व शोधक सयल गुण संपति धरा,
संवर समाधि गत उपाधि दुविध तपगुण आगरा ॥२॥
ॐ ह्रीं परमात्मने० वासं यजामहे स्वाहा ॥

श्री उपाध्याय पद पूजा ॥४॥

खंति जुआ मुत्ति जुआ, अज्जव मद्दव जुत्ता जी।
सच्चं सोय अकिंचणा, तव संयम गुण रत्ताजी ॥१॥
जे रम्या ब्रह्म सुगुप्ति गुप्ता सुमति सुमता श्रुतधरा।
स्याद्वाद वादें तत्व साधक आतम पर विभजन करा।
भव भीरु साधन धीर शासन वहन धोरी मुनिवरा,
सिद्धान्त वायणदान समरथ नमो पाठक पद धरा ॥२॥
ॐ ह्रीं परमात्मने० वासं यजामहे स्वाहा ॥

श्री साधु पद पूजा ॥५॥

सकल विषय विष वारिने, निक्कामी निस्संगी जी।
भवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी जी ॥१॥

जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा,
काउसग्ग मुद्रा धीर आसन ध्यान अभ्यासी सदा ।
तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै परभणी,
मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन बंधु प्रणमूं हितभणी ॥२॥
ॐ ह्रीं परमात्मने० वासं यजामहे स्वाहा ॥

श्री दर्शन पद पूजा ॥६॥

सम्यग् दर्शन गुण नमो तत्व प्रतीत सरुपो जी ।
जसु निर्धार स्वभाव छे, चेतनगुण जे अरूपोजी ॥१॥
जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रकटै सयल पर ईहा टलै,
निज शुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा ऊछलै ।
वहुमान परिणत वस्तु तत्वें अहव तसु कारणपणें,
निज साध्य दृष्टे सरव करणी तत्वता संपति गिणे ॥२॥
ॐ ह्रीं परमात्मने० वासं यजामहे स्वाहा ।

श्री ज्ञान पद पूजा ॥७॥

भव्य नमो गुण ज्ञान ने, स्वपर प्रकाशक भावेजी ।
पर्याय धर्म अनन्तता, भेदाभेद स्वभावेजी ॥१॥
जे मोक्ष परिणत सकल ज्ञायक वोध भाव सुलक्षणा,
मति आदि पंच प्रकार निर्मल सिद्ध साधन लच्छना ।
स्याद्वाद संगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता,

सविकल्पने अविकल्प वस्तु सकल संशय छेदता ॥२॥
ॐ ह्रीं परमात्मने० वासं यजामहे स्वाहा ।

श्री चारित्र पद पूजा ॥८॥

चारित्र गुण वलि वलि नमो, तत्व रमण जस्र मूलोजी,
पर रमणीयपणो टले, सकल सिद्धि अनुकूलोजी ॥१॥
प्रतिकूल आश्रव त्याग संवर तत्व थिरता दम मयी,
शुचि परम खंति मुनिंद समपद पंच संवर उपचयी ।
सामायिकादिक भेद धर्मं यथा ख्यातें पूर्णता,
अकसाय अकलुप अमल उज्वल काम कश्मल चूर्णता ॥२॥
ॐ ह्रीं परम त्मने ० वासं यजामहे स्वाहा ।

श्री तप पद पूजा ॥६॥

इच्छा रोधन तप नमूं बाह्य अभ्यन्तर भेदें जी ।
आतम सत्ता एकता, परपरिणति उच्छेदें जी ॥१॥
उच्छेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्ध पणो वरे,
शुभ जोग संग आहार टालो भाव संवरता करे ।
अन्तर मुहूरत तत्त्व साधै सर्व संवरता करी,
निज आतम सत्ता प्रकट भावे करो तपगुण आदरी ॥२॥

कलश ।

इम नवपद गुण मण्डलं, चौं निक्षेप प्रमाणोजी ॥

सात नयें जे आदरे, सम्यग ज्ञानें जाणोजी ॥१॥
निरधार सेती गुणें गुणणों करे जे बहुमान ए,
जसु करण ईहा तत्व रमणों थाय निरमल ध्यान ए।
इम शुद्ध सत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरे,
अक्षय अनंत महंत चिदघन परम आनंदता वरे ॥२॥
इम सयल सुखकर गुण पुरन्दर सिद्ध चक्र पदावली,
सवि लब्धि विज्जा सिद्धि मन्दिर भविक पूजो मनरली।
उवज्झाय वर श्रीराज सागर ज्ञान धर्म सुराजता,
गुरु दीपचन्द्र सुचरण सेवक देवचंद्र सुशोभता ॥३॥
ॐ ह्रीं परमात्मने० वासं यजामहे स्वाहा।

इति श्री वासक्षेप पूजा समाप्ता।

वासक्षेप पूजा के बाद में श्री नवपद स्तवना के प्रसंग मे नव चैत्य वन्दन-स्तवन-स्तुति मधुर कण्ठ से सविधि कहे।

अरिहंत पद चैत्यवंदन।

जय जय श्री अरिहंत भानु, भवि कमल विकाशी।
लोकालोक अरूपी रूपी, समस्त वस्तु प्रकाशी ॥१॥
समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल राशि।
शुक्ल-चमर-शुचि पादसे, भयो वर अविनाशी ॥२॥

अंतरंग रिपुगण हणीए, हुय अप्पा अरिहंत।
तसु पदपंकज में रही हीर धरम नित संत ॥३॥

श्री अरिहंत पद स्तवन ॥

(तर्ज–पूजो मनरली; हां हो दादा कुशल सूरींद)

श्री तेरम गुण ठाणके कंत, कर्मकुं भंजे श्री अरिहंत। मन मान ले। अष्ट समय में समय तीन, सर्व आहार थी होवे हीन ॥१॥ बादर काये मन वच भोग, तनु तनु से फुन दृढ़ तनुयोग ॥ मन० ॥ सुखम कायते, मन वच रोक निज वीर्यें ताकुं कर फोक ॥ मन० ॥ २ ॥ संज्ञी मात्र के मन व्यापार, बेंईद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० आदि समय रह्यो पणक सुजीव, सुखम लह्यो तिण जोग अतीव ॥ मन० ॥३॥ एपा योगथी समये एक, हीना संखगुणों कर छेक ॥ म० ॥ समयां संखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥मन० ॥ ४ ॥ वेद न समे, ना हारता पाय, कुशल कहे ते श्री जिनराय ॥ म० ॥ तेरमे गुणमें गुण समे देव, आपो साता जगकुं नितमेव ॥ मन० ५ ॥

श्री अरिहंत पद स्तुति

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोकालोक सरूपोजी।
केवलज्ञानकी ज्योति प्रकाशक, अनंत गुणे करी पूरोजी ॥

तीजे भव थानक आराधी, गोत्र तीर्थंकर नूरोजी
बार गुणाकर एहवा अरिहंत, आराधो गुण भूरोजी ॥

श्री सिद्धपद चैत्यवंदन

श्री शैलेशी पूर्वप्रांत, तनु हीन त्रिभागी। पुव्व पओग पसंग से, ऊरध गति जागी ॥ १ ॥ समय एक में लोक प्रान्त गये निगुण निरागी, चेतन भूपे आतम रूप सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंसण नाणथी ए रूपातीत स्वभाव, सिद्ध भये तसु हीर धर्म, वंदे धरी शुभ भाव ॥ ३॥

श्री सिद्धपद स्तवन

(तर्ज—थांरेमहिलां ऊपर मेह झरोखे बीजली)

अष्ट वरस नव मास हीना कोड़ी पूर्व में म्हारा लाल हो०॥ उत्कृष्टो करे वास सयोगी धाम में म्हा० त० ॥अजोगी के अंत तजे भव भव्यता म्हा० त०॥ शैलेशी लहे कर्म दले गुणश्रेणिता म्हा० द० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहे ते योग में म्हा० र० । तेरस प्रकृतिनो अन्त करीने अन्त में म्हा० क० ॥ गमन करे नगरज्ज से अक्रिय होयने म्हा० अ०॥ पुव्व पयोग असंग स्वभाव अबन्धने म्हा० स्व०॥५॥ इणु गुण

नव ४५ परमाण जोजन लचे कही म्हा० जो० ॥ वर्तुल विशदा भास निरालंबन सही म्हा० नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अन्त में म्हा० घ० ॥ मक्षी पक्ष थी हीन भणी सिद्धान्त में म्हा० भ० ॥ ३ ॥ तनुप्रभारा नाम शिलासे जोयने म्हा० शि० ॥ जुग लोचन में भाग, अलोक कुं स्पर्श ने म्हा-अ० ॥ लघु अंगुल वत्तीस प्रमाण अवगाहना म्हा० प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणा से हीनता म्हा० गु० ॥ मिलिया एक में नन्त अवाधा ना लही म्हा० अ० ॥ ४ ॥ अष्ट प्राण धरी रम्य सिरीही जो सही म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्री सिद्ध धरो मन गेह में म्हा० ध० ॥ कुशल भये जगजीव मिलोगा तेहमें म्हा० मि० ॥ ५ ॥

॥ श्री सिद्ध पद स्तुति ॥

अष्ट करमकुं धमन करीने, गमन कियो शिव वासी जी ।
अव्यावाध सादि अनादि, चिदानन्द चिद्राशि जी ॥
परमातम पद पूर्ण विलासी, अघ घन दाघ विनाशीजी ।
अनन्त चतुष्टय शिव पद ध्यावो, केवल ज्ञानी भाषीजी ॥

॥ श्री आचार्य पद चैत्यवन्दन ॥

जिनपदकुल मुखरस-अनिल, मितरस गुणधारी ।
प्रबल सबल घन मोह की, जिणते चमुहारी ॥१॥ लज्वा-

ऋष्भादिक जिनराज गीत, नयतन विस्तारी।
भव कूपे पापे पडत, जगजन निस्तारी ॥२॥
पंचाचारी जीव के, आचारिज पद सार।
तिनकूं वन्दे हीर-धर्म, अठोत्तर सौ बार ॥३॥

श्री आचार्य पद स्तवन।

(तर्ज-नणदल बींदली लैं)

खंती खडग थी जेणे, हण्यो क्रोध सुभट समदेणें।
हो गणपति गुणपेखी ॥टेर॥
मान महागिरि वयरे, अतिशोभन मद्दव वयरें ॥हो ग० १॥
दम्भ रूप विषवेली, वर अज्जव कीले ठेली ॥हो ग० २॥
मूर्छा वेलथी भरियो, लोह सागर मुत्तेतरियो ॥हो ग० ३॥
मदन-नाग मद हीनो, जिण दम सम जंत्रे कीनो ॥हो ग० ४॥
मोह महामल्ल ताड्यो, पुण वैराग मुगरें पाड्यो ॥हो ग० ५॥
दोस गयंद वस कीनो, धरि उपशम अंकुश लीनों ॥हो ग० ६॥
अंतरंग-रिपु भेद्या, सुरवर पिण जेण निषेध्या ॥हो ग० ७॥
रस-कृति-गुण थी लीनो, सूत्र अरथै आगम पीनो ॥हो ग० ८॥
आचारिज पद एहवो, धरी जीव कुशलता सेवो ॥हो ग० ९॥

श्री आचार्य पदस्तुति

पंचाचार को पाले उजवाले, दोष रहित गुणधारी जी।

गुण छत्तीसे आगमधारी, द्वादश अंग विचारी जी।
प्रबल सबल घनमोह हरणको, अनिल समो गुण खाणी जी।
क्षमा सहित जे संयम पाले, आचारज गुण ध्यानी जी॥

॥ श्री उपाध्याय पद चैत्यवंदन ॥

धन धन श्री उवझाय राय, शठता घन भंजन॥ जिनवर दिसत दुवालसंग, कर कृत जनरंजन॥ १॥ गुणवण भंजण मण गयंद, सुय शृणि क्रिय गंजण॥ कुणालंब लोय लोयणे, जत्थय सुय मंजण॥ २॥ महा प्राणमें जिन लहोए, आगमसे पद तुर्य॥ तिनपे अहनिश हीर धर्म, वंदे पाठकवर्य॥ ३॥

॥ श्री उपाध्यायपद स्तवन ॥

(तर्ज–सांवलिया अलगा रहोने)

हुयने हुयने हुयने दूरी हुयने, चेतन भापे शठने दूरी हुयने। तूं मुझ पास क्युं आवे। दू०। तुजने कुण बतलावे दू०॥ टेर॥ तो संगे निज पंचेन्द्रियनो, रचना चरम भूलाणो॥ माणावरणी खय उपशमसे, भावेंद्री मंडाणो॥दू०॥१। द्रव्ये ते परजाप्ते कीना, जाति नाम व्यपदेश॥ एवं तो गो तुरग गजादिक, किण कर्मे उपदेश॥ दू०॥

॥२॥ इत्यादिक बहु मुझको शंका, तेरे संगे लागी ॥
नील वर्ण की समता सेती, मैं भयो तोसूं रागी ॥ दू०॥
॥३॥ उप कहीए इणीयो भवियानो, अथियाँ लाभत आय॥
आधीनां मन पीड़ा नामे, मायो रोन विलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥
आधिक्ये स्मरिए वर आगम, सूत्रसे ते उवझाय ॥ ता-
सेवाते इणी शठताकुं, चेतन कुशलता पाय ॥दू०॥ ५ ॥

॥ श्री उपाध्याय पदस्तुति ॥

अंग इग्यारे चउदे पूरव, गुण पचवीसना धारीजी ।
सूत्र अरथधर पाठक कहिए, जोग समाधि विचारी जी ॥
तप गुण शूरा आगम पूरा, नय निक्षेपे तारीजी ।
मुनि गुणधारी बुध विस्तारी, पाठक पूजो अविकारीजी ॥

॥ श्री साधु पद चैत्यवंदन ॥

दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥
धर्म शुक्ल शुचि चक्र से, आदिम खय कामी ॥ १ ॥
गुण पमत्त अपमत्त ते, भये अंतरजामी ॥ मानस इंदिय
दमनभूत, शम दम अभिरामी ॥२॥ चारु ति घन गुण
गण भर्या ए, पंचम पद मुनिराज ॥ तत्पदपंकज नमत है,
हीर धर्म के काज ॥ ३ ॥

॥ श्री साधुपद स्तवन ॥

(तर्ज मालन मालन मति कहो)

निकषाया जगजन कहे, थारे चउगति वसन से रोष हो ॥ मुनींदजी ॥ राग हीन भय तु करे, साहिबा शिव रमणी से हेत हो ॥ मुनींदजी ॥१॥ सर्व प्रमाद तजी रहे ॥सा०॥ छट्ठे पूरव कोड़ हो ॥मु०॥ शत सागम आगम करे ॥सा०॥ लघुकाले गुण आदि हो ॥मु०॥२॥ स्त्यानर्द्धि निद्रा उदे ॥सा०॥ पामे कर्म निकन्द हो ॥ मु० ॥ प्रचला निद्रा में रही ॥ सा० ॥ बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख करे ॥ सा० ॥ जो गुण संख्यातीत हो ॥ मु० ॥ तो पिण तिण जग में लही ॥ सा० ॥ त्रिक वन गुणनी ख्यात हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ रयण त्रयसे शिवपथे ॥ सा० ॥ साधन परवर जीव हो ॥मु०॥ साधु हुवइ तसु धर्म में ॥ सा० ॥ कुशल भवतु जगतीव हो ॥ मु० ॥ ५ ॥

॥ श्री साधुपद स्तुति ॥

सुमति गुपति कर संजम पाले, दोष बयालीश टालेजी ॥ षट्काया गोकुल रखवाले, नवविध ब्रह्मव्रत

पालेजी ॥ पंच महाव्रत सूधां पाले, धर्म शुक्ल उजवालेजी ॥ क्षपकश्रेणि करी कर्म खपावे, दमपद गुण उपजावेजी ॥

॥ श्री दर्शनपद चैत्यवन्दन ॥

हुय पुग्गल परियट्ट, अड्ढ परिमित संसार ॥ गंठिभेद तव करी लहे, सव गुण आधार ॥ १ ॥ ज्ञायक वेदक शशी असंख, उपशम पण वार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नहीं हुवे शिव दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लच्छन अभिराम ॥ दरशन को गणि हीर धर्म, अहनिश करत प्रणाम ॥ ३ ॥

॥ श्री दर्शनपद स्तवन ॥

(तर्ज—रामचन्द्र के बाग आंबो मोह रह्यो री)

देव श्री जिनराज, गुरु ते साधु भण्यो री ॥ धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, लच्छण बोध तणोरी ॥१॥ बोधिलाभ के काज, सप्तम नरक भलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥ २ ॥ मिथ्या तापे तप्त, बोध ही छाँह लहे री ॥ उपशम क्षायक वेद, ईश्वर तीन कहे री ॥३॥ भवसागर है अपार, पुनि अस्ताघ कह्योरी ॥ जसु लाभे ते होय, गोस्पद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यदभावे अप्रमाण,

नाण चारित्त भला री ।। बोध धर्म में जीव, लाभे कुशल कला री ।। ५ ।।

श्री दर्शनपद स्तुति ।

जिनपन्नत्त तत्त सुधा सरधे, समकित गुण उजवालेजी ।।
भेद छेद करी आतम निरखी, पशु टाली सुर पावेजी ।।
प्रत्याख्याने सम तुल्य भाख्यो, गणधर अरिहंत शूराजी ।।
ए दरशनपद नित नित वंदो, भवसागर को तीराजी ।।

श्री ज्ञानपद चैत्यवन्दन ।

क्षिमादिक रस राम वन्हि, मित आदिम नाण ।। भाव मिलाप से जिन जनित, सुय वीश प्रमाण ।। १ ।। भवगुण पज्जव ओहि दोय, मण लोचन नाण ।। लोकालोक सरूप जाण, इक केवल भाण ।। ५ ।। नाणावरणी नाशथी ए, चेतन नाण प्रकाश ।। सप्तम पद में हीर धर्म, नित चाहत अवकाश ।। ५ ।।

श्री ज्ञानपद स्तवन ।

(तर्ज—म्हारे अति उछरंगे)

जिनवर भाषित आगम भणिया, तत्त्व यथास्थिति गमियाजी ।। म्हारे जगजनतारु, ते उत्तम वर नांण कहाये

भविजन अहनिशि चाहे जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ भक्ष्याभक्ष्य कुपंथ सुपंथा, पेया पेय अग्रंथाजी ॥म्हा०॥ देव कुदेव अहित हित धारी, जाणे जेण विचारीजी ॥म्हा०॥२॥ श्रुति मति दोय छे इन्द्री सारु, तेण परोक्ष विचारुजी ॥ म्हा० ॥ उही मण केवल है वारु, जीव प्रत्यक्ष सुधारुजी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयवि जस्स बले जग जाणे, लोकादिक अनुमानेजी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजे जासु पसाये, धारी शुभ अध्य-वसायेजी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाण विलासेजी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पद में भवि-जन हरषे, निशदिन कुशलता निरखेजी ॥ म्हा० ॥५॥

श्री ज्ञानपद स्तुति ।

मति श्रुति इन्द्री जनित कहीए, लहिये गुण गंभीरोजी। आतमधारी गणधर विचारी; द्वादश अंग विस्तारोजी ॥ अवधि मन पर्यव केवल वली प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी॥ ए पंच ज्ञानको वंदो पूजो, भविजनने सुखकारोजी ॥ ७ ॥

श्री चारित्र पद चैत्य वन्दन ।

जस्स पसाये साहु पाय, जुग जुग समितेंद । नमन करे शुभ भाव लाय, फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जंपे धरी अरिहंत राय, करी कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति

युत, दे सुख अमंद ॥ २ ॥ इषु कृति मान कषायथी ए, रहित लेश शुचिवंत । जीव चरित्तकुं हीर धर्म, नमन करत नित संत ॥३॥

श्री चारित्र पद स्तवन ।

निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाभास निस्संग ॥ सुग्यानी सांभलो ॥ मूर्तिहीन चेतन करे, रूपी पुद्गल रंग सु० १॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा, कार्ये कारण भाव ॥ सु० ॥ कृत्वा जोग सुधामता, लब्धा संख स्वभाव ॥ सु० २ ॥ पर्याप्ता लघु जोग में, वृद्धि लहे जुगमान ॥ सु० ॥ मध्ये वसु समये लहे, अंते द्वौ ते नाण ॥ सु० ३ ॥ सहकारी मानस मुखा, कारण रम्य क्लेश ॥ सु० ॥ प्राप्ताघस्त प्रकारता, सप्त प्राभृत का तेन ॥ सु० ४ ॥ तद्रोधन रूपी भलो, चेतन संयमधाम ॥ सु० ॥ कर घन मित्त पद धर्म में, कुशल भवतु अभिराम ॥ सु० ५ ॥

श्री चारित्र पद स्तुति ।

कर्म अपचय दूर खपावे, आतम ध्यान लगावेजी ॥ बारे भावना सुधी भावे, सागरपार उतारे जी ॥ षट् खंड राजको दूर तजी ने, चक्री संजम धारे जी ॥ एहवो चारित्र पद नित वंदो, आतमगुण हितकारे जी ॥

श्री तपपद चैत्य वन्दन ।

श्री ऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव शिव जाण ॥ विहि अन्तरपि बाह्य मध्य, द्वादश परिमाण ॥१॥ वसु कर मित आमोसही, आदिक लब्धि निदान ॥ भेदे समता युत खिणे, दग्धन कर्म विमान ॥ २ ॥ नवमो श्री तपपद भलो ए, इच्छारोध सरूप ॥ वंदन से नित हीर धर्म, दूर भवतु भवकूप ॥ ३ ॥

॥ श्री तपपद स्तवन ॥

बारस भेद भण्या जिनराजे, बाह्य मध्य तणा जगकाजे रे ॥ शिवपद श्रेणि ॥ तिण भव सिद्धि तणा वर ज्ञाता, जिनवर पिण तप ना कर्ता रे ॥ शि० ॥ १ ॥ समता सहिते जिनते भारी, भली कर्म चमु पिण हारी रे ॥ शि० ॥ जीव कनक से कर्म कचोरा, दहे तप पावन का जोरा रे ॥ शि०॥२॥ तप तरुवर ना कुसुम है ऋद्धि, देव नरनी फल तें सिद्धि रे ॥शि०॥ पाप सकल है तमनी राशि, तप भानु से जाये नाशी रे ॥ शि० ॥ ३ ॥ जस्स पसाये लहीए वारु, लब्धि सघली जगहितकारु रे ॥शि०॥ अति दुक्कर कुण साध्यता हीना, काम ताते वारुकीना रे ॥ शि० ॥ ४ ॥ इच्छारोधनरूपी कहिए, तपपद ही चेतन

वहिए रे ।।शि०।। पाठक हीर धर्म कृपा से । नवपद कुशल कु भासै रे ।। शि० ।। ५ ।।

।। श्री तपपद स्तुति ।।

इच्छारोधन तप ते भाख्यो, आगम तेहनो साखी जी ।।
द्रव्य भावसे द्वादश दाखी, जोगसमाधि राखीजी ।।
चेतन निज गुण परिणित पेखी, तहीज तप गुण दाखीजी ।।
लब्धि सकलनो कारण देखी, ईश्वर से मुख भाखी जी ।।

श्री चारित्रनन्दी गणि विरचित

श्री नवपद
चैत्य वन्दन-स्तवन-स्तुति

श्री अरिहन्त पद चैत्यवन्दनम् ।।

श्री अरिहंत अनन्त नाण, दंसण अनुरागी ।
लोका लोक प्रकाश रूप, आतम गुणरागी ।।१।।
मणपरयायें शुद्ध रूप, प्रगट भेद विलासी ।
भासक द्रव्य स्वभाव, गुण पर्यायक भासी ।।२।।
अंत समय क्षयकरम करीए, पायो शिव पद वास ।
"निद्धि उदय चारित गणिए" वन्दे जिन पद तास ।।३।।

श्री अरिहन्त पद स्तवनम् ।

राग—भैरव

श्री अरिहंत अनन्त सरूपी, वन्दत बहु सुख पाया ।
सर्व विभाव नो संग तजीने, निज भावे लयलाया ॥श्री० १॥
धर्मादिक षटद्रव्य प्रकाशक, भासक गुण परयाया ।
नित्यादिक इम पक्ष करीनें, बहुविध भेद दिखाया ॥श्री० २॥
अन्य निवर्तक निज पर भासक, वीतराग गुण भाया ।
'सिद्धि उदय कर चारित्र नंदी' अरिहंतरूप बताया ॥श्री० ३॥

श्री अरिहंत पद स्तुति ।

सुरनर अभिनंदित वंदित त्रिभुवन ईश ।
भाती द्वादश अतिशय शोभें जसु चउतीस ॥
पंचत्रिंश गुणें करि वाणी जसु गम्भीर ।
श्री अरिहंत नमिये कर्म निकन्दन वीर ॥१॥

श्री सिद्धपद चैत्य-वन्दनम् ।

ह्रस्वाक्षर पण मान, काल चउदम गुण ठाणे ।
वसकर कीनो योग, रोध शैलेशी ध्याने ॥१॥
पर परणति अनुराग, त्याग शुद्धातम संगी ।
नभ परदेशें श्रेणि एक, निष्ठा शिवरंगी ॥२॥

ज्ञाता ज्ञायक ज्ञेय ध्येय, चित ज्योति सरूपी ।
'निधि उदय चारित्र नंदि' प्रणमें निज रूपी ॥३॥

श्री सिद्धपद स्तवनम् ।

(तर्ज–सोइ सोइ सारी रैन गमाई)

शुद्ध सरूपी आतम रूपी, सेवो निज परिणति चिद्रूपी ।
॥ टेर ॥

सहजानन्दी आतम विलासी, सर्व समें चउनंत अभ्यासी ।
शुद्ध सरूपी० १ ॥

अव्यक्ति शक्ति सहज प्रवरती, सर्व विभाव नो संगनिवरती
शुद्ध सरूपी० २ ॥

सादि अनादि अनन्त अरूपी, अव्यावाधवगाह सरूपी ।
शुद्ध सरूपी० ३ ॥

ज्ञायक ग्राहक व्यापक भोगी, परमानन्दी तन्मय योगी ।
शुद्ध सरूपी० ४ ॥

'निद्धि उदयकर चारित्र नन्दी' तादात्म्यताये त्रिकरण वन्दी ॥
शुद्ध सरूपी० ५ ॥

श्री सिद्धपद स्तुति ।

परसंग तजी नें लीन भयो निज संग ।
जसु रूप अरूपी आतम सत्तारंग ॥
इक सिद्धऽवगाहे सिद्ध अनन्त समाय ।

भक्ति भर प्रणमूं सिद्ध सकल गुणदाय ॥२॥

श्री आचार्य पद चैत्य-वन्दनम् ।

जैनागम सुप्रकाश भास भविजन मन मोहन ।
पट त्रिंशद् गुण धार सार चारित पद सोहन ॥१॥
तप संजम कर सूरवीर रिपु करम विहंडण ।
संवर भाव सुवास निज परिणति गण मंडण ॥२॥
पँचाचार सुभीन लीन अप्रमत गुण थानक ।
निधि उदय चारित्र गणि नमत सूरि गुण दायक ॥३।

श्री आचार्य पद स्तवनम् ।

(तर्ज—गणपति गुण पेखी)

आचारज गुण धामी, एतो धरम धुरन्धर रामी हो ।
भविजन सेवज्यो ॥टेर॥
पंचाचार सुरागी, एतो निज गुण मांहि पागी हो ॥भ०१॥
जैनागम सुप्रकाशी, मत स्याद्वाद सुविलासी हो ॥ भ० ॥
शास्त्रार्णव खूब वीलोई, नवतत्व रतन सहु होई हो ॥ भ० ॥
साधक सत्तासुविलासी, शुभ धरम-ध्यान-अभ्यासी हो ॥
'निद्धि चारित्र' सुहाई एतो अविचल पद सुखदाई हो
॥ भ० २ ॥

श्री आचार्य पद स्तुति ।

आचारज नमियै तीजे गुण गण धार ।
गच्छ भार धुरंधर पंचाचार विचार ॥
अप्रमत्त गुण ठाणे चिदानन्द रस स्वाद ।
जिन श्रुत अनुसारे भापें श्री स्याद्वाद ॥१॥

श्री उपाध्याय पद चैत्यवन्दनम् ।

पाठक गुण भवि ध्याय, ध्याय मन मन्दिर मांहें ।
जिनवर देशित योगवाह, श्रुत जलधि अगाहें ॥२॥
उपसामीपें आधिनाण, गुण आयते पामें ।
निज्जुतें ए अत्थ भाय, शिल पल्लव यामें ॥२॥
मदन कृत्य गुण जास भास सठ गहन दवानल ।
वन्दे पाठक भाव निद्धि उदय गणि चारित निम्मल ॥३॥

श्री उपाध्याय पद स्तवनम् ।

(राग-भैरव)

हम तुमरी बलिहारी हो ज्ञान दिनंदा ॥ टेर ॥
मारदव वज्जे मद गिरि भज्जे, शमअसि क्रोध निवार्यो
हो ज्ञान दिनंदा ॥१॥
माया तरुवल्ली आरजव छेदी, इच्छा जलधि उतार्यो
हो ज्ञान दिनंदा ॥२॥

दुरधर मोह महारिपु छेदन, दंड वैराग उपाड्यो ।
हो ज्ञान दिनंदा ॥३॥
द्वेष नाग वश करवा काजे, उपशम अंकुश मार्यो ।
हो ज्ञान दिनंदा ॥४॥
प्रवचने लाधी संजम सेरी, नाग कुटिलता वार्यो ।
हो ज्ञान दिनंदा ॥५॥
द्वादश अंग सिझाय करीने, शासन शोभा वधार्यो ।
हो ज्ञान दिनंदा ॥६॥
"सिद्धि उदय गणि चारित नंदी" पाठक पद चित धार्यो ।
हो ज्ञान दिनंदा ॥७॥

श्री उपाध्याय पद स्तुति ।

पाठक पद नमिये आचारज पद योग ।
त्रिविधे श्रुत भाषे देइ अरथ उपयोग ॥
सुर गिरि सम धीरा सागर सम गंभीर ।
इषु वर्ग गुण संवर अर्थ सूत्र नो सीर ॥१॥

श्री साधु पद चैत्यवन्दनम् ।

दिग गिरि संयमपाल वायु गुण संवर भावें ।
प्रवचन दंसण नाण धार निज रूप रमावें ॥१॥

मित्रादिक चउदिट्ठि रूप निज विरति विचारे ।
सम्यग दरशण भाव मांहि स्थैर्यादि संभारे ॥२॥
मन वश कारण दिट्ठियोग सद्गुण अभिरामें ।
निद्धि उदय चारितगणि साधु भक्ति सिरनामें ॥३॥

श्री साधु पद स्तवनम् ।

(तर्ज—पीले न अवधू हो मतवाला प्याला प्रेम प्रभु रसकारे)

समता सागर मुनि पद ध्याऊं, शिवरामा विरचित रमाऊं ।
संयम ध्याने गुप्ति सुगुत्ता, नित अप्रमत्त कषाय विमुत्ता ॥
समता सागर० ॥१॥
इन्द्री पँच प्रमाद ने जीता, काय बन्धु नग भय थी रीता ।
मदवसु खंडन अव्रत वारक, धरम यती तप पडिमा धारक
समता सागर० ॥२॥
अठारे सहस शीलाँगरथ धोरी, कर्म भूमि विचरै नव कोडी
निद्धि उदय चारित्र नन्दि, वन्दे, साधु सकलगुण पूनमचन्दे
समता सागर० ॥३॥

श्री साधु पद स्तुति ।

पंचम पद नमिये शिव साधन अनुकूल ।
आश्रव प्रति रोधन संवर गुण अमूल ॥

प्रमत्त अप्रमत्ते वरतें वारम्वार।
सहु करम खपावें श्रुत धरम व्यवहार ॥१॥

श्री दर्शनपद चैत्य वन्दनम्।

जैनागम रुचि रूप शुद्ध, आतम गुण भासन।
कारक दीपक भाव रुचि, तिहुँ भेद प्रकाशन ॥१॥
इच्छा रागी नैमत्तिग, पर इहा टाले।
धरम निपुणता भक्ति राग, दृढ़ संवेगोन्नति पाले ॥२॥
संवेगी शांति भाव ए, दया वेद वखाण।
निद्धि उदय चारित्त हिय ए यह समकित गुण ठाण ॥३॥

श्री दर्शन पद स्तवनम्।

(राग—चलत में)

सम्यग दर्शन है पायो दृढतर- गंठी भेद करायो।
उतकृष्ट भावे है आयो झाझेरो छासठि जलधि रहायो ॥१॥
सड़सठि भेदे है जायो, निर्मल साधक सत्ता कहायो।
त्रिकलिंगी शुद्धी है भायो, श्रधा चउपण गुण दिखलायो ॥२
दुरधर दूपण है वार्यो, भूपन यतना थान पट धार्यो।
भाव अगारे है संभार्यो, प्रभावक वेयावच सार्यो ॥३॥
दर्शन पद थी है पायो, श्रुत नाणी पिण सफल दिखायो।
"निद्धि उदय थी" पाम्यो "चारितनन्दी" दर्शन भाम्यो।

श्री दर्शन पद स्तुति ।

त्रिक करण करीनें पामें दरशन योग ।
इगदुग त्रिक चउपण दस विध भेद नो भोग ॥
भवि वंछित पूरण शिव लच्मी सुर कल्प ।
सुध परिणति कारण सेवो स्वाद अनल्प ॥

श्री ज्ञानपद चैत्य वन्दनम् ।

लोकालोक प्रकाश रूप, निज परिणति भासे ।
काल अनादिनी भूल, मिटे श्रुत ज्ञान अभ्यासे ॥१॥
चेतन पुद्गल द्रव्य भेद, गुण पर्यय भासें ।
सूच्म नभ परदेश, श्रेणि गोलादि प्रकाशें ॥२॥
वर्गणा गुरुलघु काल, अनन्त निजरूप पिछाने ।
वन्दे श्री श्रुत ज्ञान "निद्धि चारित" निज ध्यानें ॥३॥

श्री ज्ञानपद स्तवनम् ।

(राग–गुजराती)

मत्यादिकपण नाण भाव विकाशी रे, तेहमां मति श्रुत दोय मुख्य जिनवर भासी रे। मति श्रुतविणानविहाय जग उपगार रे, गुण सत रस कृत्य धी विविध प्रकार रे॥१॥

त्तिमादिक चुध भेद, नख इम गुणिये रे। जिनपदे श्रुत नाण, तेहीज थुणिये रे। सकल क्रिया नो मूल चार प्रमाणे रे। दरसन पिण नवि थाइ, श्रुत नवि जाणे रे॥ शेष नाण श्रुत हीण, मूक कहावे रे। निज विषये लय लीन नवि बतलावे रे। तिण कारण शुभ भाव श्रुतिभवि वंदोरे। "निद्धि उदय चारित्त", त्रिकरण वंदोरे॥

श्री ज्ञान पद—स्तुति।

मत्यादिक भेदे ध्यावो नाण सरूप।
स्वपर प्रकाशक भासक आतम रूप॥
द्रव गुण पर्याये भेद अनंतानंत,।
षटद्रव्य विभासन मारतंड नाण अनंत॥

श्री चारित्र पद चैत्यवन्दनम्।

चारित दुग विधे सरव देश, भवि जन मन ध्यावें।
जसु परसादे रंक पिण नर सुर सुख पावें॥१॥
भरतादिक पिण राज त्याग, त्रिविधे मन धार्यो।
इण परसादें नाण पाय, निज पद संभार्यो॥२॥
सहजानन्द समाधि रूप गुण भूप संसारे।
नव "निद्धि चारित" कल्परूप, सुख संजम धारे॥३॥

श्री चारित्र पद—स्तवनम् ।

(तर्ज—शेत्रुंजा को वासी प्यारो लागे मोरा राजींदा)

दुविध चारित सुखदाई मेरे मन में सुहाइ मेरे मनमें ।
ते चारित में तद् हेतु अमृत, निज गुण भास वधाई शोभन में ॥ दुविध० ॥१॥

अनुष्ठाँन विष गरल तजीने, निर्मल किरिया सुभाइ पलक में ॥ दुविध० ॥२॥

पापी निर्गुण पिण इण जोगे, सुर नर सेव करे सुखलक में ॥ दुविध० ॥३॥

रङ्कादिक पिण चारित्र धारी, सादी अनन्त सुख पाइ मुगत में । दुविध० ॥४॥

"निद्धि उदय कर चारित्र" पायो, गुण गण वृद्धि कराइ जगत में ! दुविध० ॥५॥

श्री चारित्र पद—स्तुति ।

चारित पद नमियें भजियें शम अनुठाण ।
उपचार विचारें कर्म त्रिपाके मान ॥
ए तीन विभागे प्रीति भक्ति गुण खांण ।
शुभ धर्म वचन में निस्संगं वचन प्रमाणं ॥१॥

श्री तप पद चैत्य वन्दनम् ।

सेवो तप भवि वार वार, वसुकर्म विहंडन ।
दुष्कर मिच्छ-कषाय, अविरति दल खंडन ॥१॥
इच्छा-रोधन शांति रूप, जे तप पद ध्यावे ।
परमानन्द पद सादिनंत, अविचल सुख पावे ॥२॥
इण परभावे श्री कनक केतु, पद तीर्थङ्कर साध्यो ।
निद्धि-उदय चारित गणी श्री तप पद आराध्यो ॥३॥

श्री तप पद स्तवनम् ।

(राग—वीर सुणो मोरी विनति)

द्वादश विध तप धारिये, जिम पामे हो भव सायर पार के । करि कर्म तरु उन्मूलने, नित आपे हो रिध मणी भंडार के ॥ द्वादशविध० ॥ १ ॥

भाँगे बहुविध रोगने-भूनादिक हो जति धर्म विधान के । ते माँहि आ द्वादश विधं, नवकारसि हो आदे देइ जान के ॥ द्वादश विध० ॥ २ ॥

कनकावली-रतनावली हो मुगतावली चन्द्रायण मुख्य के । "निद्धि उदय चारित्त" भणे, एथी पामे हो नर सुर शिव सुक्ख के ॥ द्वादश विध० ॥ ३ ॥

श्री तप पद स्तुति ।

तप परम आलम्बन वुधविध समता ध्यान ।
धन करम दवानल निर्वाञ्छक परधान ॥
जिन चरमशरीरी तप कर करम खपाय ।
शिवरामा परणी चार अनन्त मिलाय ॥

इति श्री निद्धिउदय चारित्र गणी कृत नवपद
चैत्यवन्दन, स्तवन, स्तुतिपद;
❀ सम्पूर्णम् ❀

श्री नव पद चैत्यवंदनम् ॥१॥

सिरिसिद्धचक्क नवपय महल्ल पढमिल्ल पय मय जिणंद । असुरिंदचिय पयपंकय नाह तुज्झ नमो ॥१॥

सिरिरिसहेसर सासिय-फल-दाण-कप्पतरु-कप्प कंदप्प गंजण भवभंजण देव तुज्झ नमो ॥२॥

सिरिनाभिनामकुलगरकुलकमलुल्लास परमहंससम असमतमतमोभर-हरणिक्क-पईव तुज्झ नमो ॥३॥

सिरि मरुदेवासामिणि उदरदरी दरिय केसरी किसोर घोर भुय दंड खंडिय पयंड मोहस्स तुज्झ नमो ॥४॥

इक्खागुवंसभूसण गयदूसण दुरिय–मयगल मईंद चंद सम वयण वियसिय नीलुप्पल नयण तुज्झ नमो ॥५॥

कल्लाण–कारणुं सम–तत्त–कणय–कलस–सरिस संठाण कंठ ठिय कल कुंतल नीलुप्पल कालेय तुज्झ नमो ॥६॥

आईसर जोईसर लयगय मण लक्ख लक्खिय सरुव भवकूव पडिय जंतु तारण जिणनाह तुझ नमो ॥७॥

सिरि सिद्धसेल मंडण दुह खंडण खयरराय नयपाय सयपय सिद्धिदाय जिणनायग होउ तुज्झ नमो ॥८॥

तुज्झ नमो तुज्झ नमो तुज्झ नमो देव तुज्झ चेव नमो। पणयसुररयण सेहर रुइरंजिय पाय तुज्झ नमो ॥६॥इति॥

श्री नव पद चैत्य वंदनम् ॥२॥

नियंतरंगारिगणे सुनाणे, सपाडिहेराईसयप्पहाणे ।
संदेहसंदोहरयं हरंतो, झाएह निच्चंपि जिणेरहंतो ॥१॥
दुट्ठट्ठ कम्मावरणप्प मुक्के, अणंतनाणाई सीरीचउक्के ।
समग्ग लोगट्ठ पयत्थ सिद्धे, झाएह निच्चंपि समग्गसिद्धे ॥२
न तं सुहं देहि पीया न माया, जे दिंति जीवानिह सूरिपाया ।

तम्हाहु ते चेव सया भजेह, जं मुक्ख सुक्खाइ लहु लहेह ॥३
सुत्तत्थ संवेगमय सुनाए, संनीरखीरामय विस्सुएणं ।
पीणंति जेते उवझायराए, झाएह निच्चंपि कयप्पसाए ॥४
खंतेय दंतेय सुगुत्ति गुत्ते, सुत्तेय संते सुण-जोगजुत्ते ।
मयप्पमाए गय मोहमाए, झाएह निच्चं मुणिराय पाए ॥५
दव्वत्थि कायेसु ज सद्दहाणं, तं दंसणं सव्व गुणप्पहाणं ।
कुग्गाहि वाही उवयंति जेणं, जहाविहेणं सुरसायणेणं ॥६॥
नाणं पहाणं नयचक्क सिद्धं तत्तव्व बोहिक्क मयं पसिद्धं ।
धरेह चित्तावसए फुरंतं, माणिक्कदीवुव्वतमो हरंतं ॥७॥
सुसंवरं मोहनिरोधसारं, पंचप्पयारं त्रिगमाइयारं ।
मूलोत्तराणेग गुणं पवित्तं, पालेह निच्चंपि हु सच्चरित्तं ॥८
वज्झं तहाभिंतर भेय भेयं, कषाय दुब्भेयकुकम्मभेयं ।
दुक्खक्खयत्थे कयपावनासं, तवेण दाहागमयं निरासं ॥९॥
एयाइ जे केवि नवप्पयाई, आराहयंतिठ्ठ फलप्पयाइं ।
लहंति ते सुक्ख परंपराणं, सिरि सिरिपालनरेसरुव्व ॥१०॥

नवपद चैत्यवंदनम् ॥३॥

उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाडिहेरासण संठियाणं ।
सद्देसणाणंदियसज्जणाणं, नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥१
सिद्धाणमाणंद रमालयाणं, नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं ।

सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं, नमो नमो सूर समप्पहाणं ॥२
सुतत्थवित्थारण तप्पराणं, नमो नमो वायग कुंजराणं ।
साहूण संसाहिअ संजमाणं, नमो नमो सुद्ध दयादमाणं ॥३॥
जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स ।
अन्नाणसंमोह तमोहरस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥४॥
आराहि अ खंडीय सक्किअस्स, नमो नमो संजम वीरिअस्स ।
कम्मद्दुमोम्मूलण कुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥५॥

इयनवपय सिद्धं लद्धि विज्झासमिद्धं,
पयडिय सुरवग्गं ह्रींतिरेहा समग्गं ।
दिसिवइसुरसारं, खोणिपीढ वयारं,
तिजयविजय चक्कं सिद्धचक्कंनमामि ॥६॥

श्रीनवपदचैत्यवंदन ॥४॥

जो धुरि सिरि अरिहंत मूल दिढ पीढिपइठ्ठिओ ।
सिद्धि सूरि उवज्झाय साहु चिहुँ साहगरिठ्ठिओ ॥
दंसण नाण चरित्त तवहि पाडसाहे सुन्दरु ।
तत्तक्खर सरवग्ग लद्धि गुरुपय दल डंवरु ॥
दिसिवाल जक्ख जक्खिणी पमुह सुर कुसुमेहिं अलंकियउ
सो सिद्धचक्क गुरु कप्पतरु अम्ह मनवंछिय दियउ ॥१॥

श्री नव पद चैत्यवंदन ॥५॥

श्री अरिहंत उदार कांति, अति सुन्दर रूप ।
सेवो सिद्ध अनन्त शांत, आतम गुण भूप ॥१॥
आचारज उवझाय साधु, समता रस धाम ।
जिन भापित सिद्धांत शुद्ध, अनुभव अभिराम ॥२॥
बोधिबीज गुण संपदाए, नाण चरण तव सुद्ध ।
ध्यावो परमानन्द पद, ए नव पद अविरुद्ध ॥३॥
इह परभव आनन्द कंद, जग मांहि प्रसिद्धो ।
चिन्तामणि सम जास जोग बहु पुण्ये लद्धो ॥४॥
तिहुअण सार अपार एह, महिमा मन धारो ।
परिहर पर जंजाल जाल, नित एह संभारो ॥५॥
सिद्धचक्र पद सेवतां, सहजानन्द स्वरूप ।
अमृतमय कल्याणनिधि, प्रगटे चेतन भूप ॥६॥

॥ इति श्री सिद्ध चक्र चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

श्री नव पद स्तवन संग्रह

स्तवन—१

अरिहंतादिक पद तणो, ध्यान धरी मन मांह,
सिद्धचक्र गुणवरणवुं, त्रिकरण धरिउच्छांहि ॥१॥
राजग्रही नयरी भली, समवसर्या गणधार ।
सिद्धचक्र गुण वरणव्या ते सुणजो अधिकार ॥२॥

(ढाल—१)

(तर्ज जगजीवन जगवाल हो !)

श्री गौतम गणेसरु, पभणेभवि सुखकार लालरे ।
श्रेणिकपमुहा सांभले, उत्तम धर्म विचार ला० श्री० ॥३॥
दुर्लभ मानुष भव लही, सेवो श्री जिन धर्म ला०
दानादिक चउभेदथी, आराधिलहोशर्म ला० श्री ॥४॥
भावविना जे दानछे, शिव सुखतेहथी न थाय ला०
शील ते निष्फललोकमां, भावविना कहिवाय ला० श्री० ॥५
भाव वीहूणो तप सही, भवविस्थारणहेतु ला०
दानादिक भावे मिल्या, भवसागर ना सेतु ला० श्री० ॥६॥
भावमनोविपयी कह्यो, सालंबन मनआण ला०
आलंबन बहु जातिना, नवपदप्रथम सुजाण ला० श्री० ॥७॥

अरिहंत सिद्ध आचारज, उवज्झाय साधुवखाण ला०
दर्शन ज्ञान चारित्रवलि, तप ए नवपद जाण ला० श्री॥८॥

ढाल २

(भरतरीनी ! देशी)

नव पद ध्यावो भविजना ! त्रिकरण करि इक तारजी ।
गोतम स्वामी उपदिसै, श्रेणिक नरपति सारजी ॥९॥
अठार दोष दूरे टल्या, केवल ज्ञान प्रकाशजी ।
देवदाणवपति प्रणमता, प्रगट करे तत्व खासजी ॥१०॥
एवा श्री अरिहंत ने, ध्यावो चतुर सुजाणजी ।
भाव सहित आराधताँ, शिव लहो महिराणजी ॥११॥
पनर भेद प्रसिद्ध छे, कर्म रहित सुखदायजी ।
सिद्ध अनंत चतुष्कला, ध्यावो सिद्धलय लायजी ॥१२॥
पंचा चार ने पालता परउपगार प्रधानजी ।
शुद्ध सिद्धाँत वखाणता, आचारज गुनखानजी ॥१३॥
गणतुप्ति करता भला, सूत्र अर्थनो दानजी ।
शिष्यादिकने आपता, नमोउवज्झाय सुजानजी ॥१४॥
कर्म भूमिमाँ विचरता, रत्न त्रयनाधारजी ।
सुमति गुपति मुनि पालता निकषाया सुविचारजी ॥१५॥
जिन प्रणित जे शास्त्र माँ, तत्व सद्दहण स्वरूपजी ।

दरशणरयणप्रदीप ने, धारो चितमां अनूपजी ॥१६॥
जीवादिक पदार्थ नो, बोध स्वरूप विचारजी ।
विनये करि सीखो सदा, नाणछे सर्व आधारजी ॥१७॥
अशुभ क्रियानो त्यागछै, शुभ किरिया अप्रमादजी ।
उत्तर गुण निरुक्त थी लहो चरण नो स्वादजी ॥१८॥
सघन करम तम हरणकुं भानु समो तप जाणजी ।
कषायरहित बार भेदछै तपपद मनमाँ आणजी ॥१९॥

(ढाल ३)

(कपूरहुवे अति उजलोजी, ए देशी)

ए नवपद जिनधर्मनोजी, सारभूतकहिवाय ।
सिव सुखनो कारक सहीजी, आराधो गुरु सहाय,
भविकजन सेवो जिन उपदेश, पमणे प्रथमगणेश भ० ॥२०
ए नवपदथी नीपजैजी, सिद्धचक्र यंत्रराज ।
आराधीने सुख लह्योजी, जिम श्रीपाल महाराज भ० ॥२१
तव पूछे मगधेसरुजी, कुण श्रीपाल नरेश ।
किम आराधी सुख पामियोजी, करुणाकरो गणेश भ० ।२२
गौतम स्वामी उपदिशेजी निसुणे श्रेणिक राजान ।
चंपा नगरी नो राजीयो जी, श्रीपाल नामसुजाण भ० ॥२३
उंबर रोगे पीडियोजी परणी राज कुमारि ।

उज्जयणीमाँजुहारियाजी रिषभेश्वर मनुहार भ० ॥२४॥
मुनिचंद गुरु उपदेश थीजी आराध्यो सिद्ध चक्र।
रोगगयो वलि सुख लह्योजी संपदा पामी जिमशक्र भ०॥२५॥
नवपद उली आँविल तणीजी, नवराणी ने साथ ।
उज्जमणी पूरण हुआ जी, करि खरच्यो घणो आथ भ०॥२६॥
नव पडिमा देरासरुजी, नव जीरण उद्धार ।
पहिलो पद आराधियोजी नव पूजा मनुहार भ० ॥२७॥
इम नवपद विस्तारथी जी पूजी लह्यो सुखसार ।
आयु पूरण करिध्यानथीजी, नवमे स्वर्ग अवतार भ०।२८॥
इम श्रीपाल ना भव थकी जी, नवमे भव सहुसार ।
निरुपम शिव सुख पामसेजी, कहेगौतम गणधार भ०॥२६
श्रेणिक सुणिहरखितथयोजी प्रभुजीना वांद्या पाय ।
वीर जिनेसर इमभणेजी, सुणश्रेणिकनरराय भ० ॥३०॥॥
एक एक पद आराधतांजी, केई पाम्या भव अंत।
नवपद ते निज आतमाजी, ध्याता ध्येय लहंत भ० ॥३१॥
तीर्थंकर पद पामस्येजी, तूं इण भरत मझार ।
इम सांभलिनृपआनंदियोजी, निजघरपोतोसुखकार भ०।३२।

कलश ।

इम वीर जिनवर भुवनदिनयर, नवपदमहिमावरण्यो ।

सुरतबंदर रहि चौमासो सिद्धचक्र गुणगणस्तव्यो ॥
संवत उगणीसै पचोतर आश्विनशुदीसातमदिनं ।
जिन कृपाचन्द्र सूरि पभणं वर्तो मंगल मतिदिनं ॥२३॥

स्तवन ॥२॥

(तर्ज–महावीर तुमारी मोहन मूरति देखी मन ललचाय)
मनवा धरले नव पद ध्यान अभय पद तुझको आन वरे ॥टेर॥
नव पद की महिमा भारी, है तीन भुवन विस्तारी ।
कहते नहीं आवे पारी, सुर गुरु मन में खेद धरे ॥मनवा॥
पूरन नव अंक परा है, वह अनुपम भाव भरा है ।
निज रूप न और धरा है, गिनती कितनी क्यों न करें ॥म०
है योग असंख्य गिनाये, अक्षय पद प्राप्ति उपाये ।
नव पद ही मुख्य दिखाये, उनसे गौण सुनो सिगरे ॥म०॥
पहले पद है अरिहंता, निज द्रव्य–भाव–अरिहन्ता ।
है उपकारी जयवंता, सेवा सुरपति नित्य करे ॥म०॥
सब लोका लोक विलोके, निज केवल ज्ञानालोके ।
ऐश्वर्य अनन्त त्रिशोके, तेरमे गुण ठाणे विचरे ॥म०॥
शठ आठ करम क्षयकारी, आत्मिक गुण आठ प्रकारी ।
शैलेशि करण निधारी, सिद्ध सिला पर जाय ठरे ॥म०॥
निज जन्म मरण भय टारी, अजरामर भाव विहारी ।

हैं सिद्ध परम सुखकारी, सच्चित् ज्योति से ज्योति भरे ॥म०॥
जिन शासन थंभ समाना, छत्तीस परम गुणवाना ।
आचार विचार प्रधाना, आचारज भव रोग हरे ॥म०॥
श्री उपाध्याय पदवासे, मूरख मति बोध विकासे ।
अज्ञान तिमिर भर नाशे, सूत्र अरथ का भान करे ॥म०॥
जो द्रव्य भाव मुंडित हैं, अनगार हुए पण्डित हैं ।
की मोह चमू खंडित है, जिनने वे हैं साधु खरे ॥म०॥
जिन देशित तत्त्व विचारे, श्रद्धान अटल चित्त धारे ।
परभाव हृदय से टारे, दर्शन दुःख को दूर हरे ॥म०॥
तव मोह तिमिर भर त्रासे, अनहद आनंद विलासे ।
भुवन त्रय नाटक भासे, जब वर ज्ञान कला प्रसरे ॥म०॥
आत्मिक गुण रमण निदानं, कृत परमातम पद दानं ।
चारित्र पवित्र विधानं, जिससे कर्म सभी विखरे ॥म०॥
जहँ भाव रहे अविकारी, निज इच्छा रोधन कारी ।
तप द्वादश विध जयकारी, नव में पद सन्ताप हरे ॥म०॥
ये नव पद शिव पद दाता, ध्यावो मिले सुख साता ।
तोडो जगत से नाता, चउगति चक्कर जासु टरे ॥म०॥
उन्नीस सत्यासी साले, आसो तेरस उजियाले ।
जयपुर में नव पद ध्यावे, कीर्ति "हरि-कवीन्द्र" उचरे॥म०॥

स्तवन ॥ ३ ॥

(तर्ज रामचन्द्र के बाग में चंपो मोरी रह्यो०)

सुरमणि सम सहु मंत्रमाँ, नव पद अभिरामी रे लोय
करुणासागर गुण निधि, जग अंतरजामी रे लोय ॥अहो०
त्रिभुवन जन पूजित सदा, लोकालोक प्रकाशी रे लोय ।
एहवा श्री अरिहंतजी, नमूं चित उल्लासी रे लोय॥ अ०॥
अष्ट करमदल क्षय करी, पाया सिद्ध सरूपी रे लोय ।
सिद्ध नमो भविभाव थी, जे अगम अरूपी रे लोय ॥अहो
गुण छत्तीसे शोभता, सुन्दर सुखकारी रे लोय ।
आचारज तीजे पदे, वंदूं अविकारी रे लोय ॥अहो वं०॥
आगमधारी उपशमी, तप दुविध आराधी रे लोय ।अहो।
चौथे पद पाठक नमो, संवेग समाधि रे लोय ॥ अहो०॥
पंचाचार पालणपरा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय । अहो पं०।
गुणरागी मुनि पाँचमे, प्रणमूं वड भागी रे लोय ॥अहो ॥
निज पर गुण ने ओलखे, श्रुत श्रद्धा आवे रे लोय । अहो
छट्ठे गुण दरशण नमो, आतम शुभ भावे रे लोय॥अहो०॥
ज्ञान नमो गुण सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय । अहो ।
स्व पर प्रकाशक दिनमणि, अज्ञान निवारे रे लोय॥ अ०॥
आठमे चारित्रपद नमो, परभाव निवारी रे लोय । अहोप०
खाँत्यादिक दश धर्मनो, जेह छे अधिकारी रे लोय ॥अ०॥

नवमे वली तपपद नमो, बाह्याभ्यंतर भेद रे लोय । अहो
बांध्यां काल अनंतनां, जे कर्म उच्छेद रे लोय ॥अ०॥
ए नव पद बहुमान थी, ध्यान शुभ भावे रे लोय । अहो
नृप श्रीपाल तणी परे, मनवंछित पावे रे लोय ॥अ०॥
आसु चैत्रक मासमां, नव आँबिल करिए रे लोय । अहो
नव ओली विधि युत करी शिव कमला वरिए रे लोय॥अ०
सिद्ध चक्रनी बहु परे, वर महिमा कीजे रे लोय । अहो ।
श्री जिन लाभ कहे सदा, अनुपम जश लीजे रे लोय ॥

श्री नव पद जी का स्तवन ॥ ४ ॥

(देखण दो गणगोर भँवर म्हाने देखण दो गणगोर, इस राग में)

धरलो निर्मल ध्यान भविक जन, धर लो निर्मल ध्यान ।
शिवसुख के सनेही भविक जन, धर लो निर्मल ध्यान ॥ टेर

चार कर्म को क्षय करीने, होते अरिहंत रूप ।
बारे गुण के धारक जिनवर, सेवो शुद्ध स्वरूप ॥
सेवो शुद्ध स्वरूप, भविक० ॥१॥

अगम अगोचर अलख निरंजन, बीजे पद में सिद्ध ।
अष्ट कर्म के वारक धारक, गुण के आठ प्रसिद्ध ॥
गुण के आठ प्रसिद्ध भविक० ॥२॥

गुण छत्तीस से गाजे गणधर, त्याजे विषय कषाय।
पंचाचार को पाले पलावें, अतिशय-चार सुहाय ॥
अतिशय चार सुहाय, भविक० ॥३॥

पाठक शिक्षा नित प्रति देते, गुण पच्चिस लो मान।
ज्ञान कुठार को हाथ में लेके, छेदे मोह अज्ञान ॥
छेदे मोह अज्ञान भविक० ॥४॥

निर्ग्रंथ अणगार अनुपम, गुण हैं सत्तावीस।
सम परिमाणे निहारे जगको, तारे विश्वा बीस ॥
तारे विश्वाबीस भविक० ॥५॥

भव संताप के दूर करण को, मानो औषधि एक।
मूल पाँच गुण हैं अति सुन्दर, समकित शुद्ध विवेक ॥
समकित शुद्ध विवेक, भविक० ॥६॥

ज्ञान विज्ञान महान मनोहर, पांच प्रकार प्रमाण।
लोकालोक विलोकन कारण, दीपक मान सुजाण ॥
दीपक मान सुजाण, भविक० ॥७॥

दस प्रकार गुणों का आकर, चारित्र गुण मणिमाल।
आश्रव अवगुण रोध करीने, संवर गुण को संभाल ॥
संवर गुण-को संभाल, भविक० ॥८॥

तप दोय भेद जिनेश प्ररूपे, कठिन कर्म है नाल।

ध्यान पवन के जोग करीने शुद्ध करे तत्काल ॥
शुद्ध करे तत्काल, भविक० ॥९॥

ये नव पद के ध्यान करण से, पावो सुख भरपूर ।
रोग शोक संताप विपति सब, कष्ट वियोग हो दूर ॥
कष्ट वियोग हो दूर, भविक० ॥१०॥

विधि संयुत गुरु मुख से पढ़ के आराधो शुद्ध भाव ।
आसोज चैत्रो दोय वर्ष में, करिये हर्ष उच्छाव ॥
करिये हर्ष उच्छाव, भविक० ॥११॥

साढा चार वर्ष में होवे, इक्यासी आँबिल सार ।
व्रत उजमणो करिये भविजन, तरिये भवजल पार ॥
तरिये भव जल पार, भविक० ॥१२॥

संवत उन्नीसे इक्यासी वर्षे, जोधनगर के माँय ।
चैत सुदी नवमी रवि पुष्पे, हरि गावे हरषाय ॥
हरि गावे हरषाय, भविक० ॥१३॥

स्तवनम् । ५ ।

(तर्ज—छोड़ गयो छोड़ गयो छोड़ गयो रे)

रंग गयो रंग गयो रंग गयो रे,
नव पद के सुरंग मन रंग गयो रे ॥ टेर ॥

शुद्ध शुक्ल ध्यान शुक्ल लेश्या विशेष से ।

अरिहन्त शुक्ल रंग रंग गयो रे—नव पद के० ॥ १ ॥
ध्यान अग्नि से कुकर्म काष्ठ को जलाय के।
सिद्ध ज्योति रक्त रंग रंग गयो रे—नव पद के० ॥२॥
शासन सम्राट सूरि बाह्य अन्त रंग से।
असली सुवर्ण रंग रग गयो रे—नव पद के ॥ ३ ॥
ज्ञान नेत्र दायि दोष दूर हारि दिव्य रूप।
पाठक के नील रंग रंग गयो रे—नव० ॥ ४ ॥
अंतरंग श्यामता को खींच के निकारते।
साधु बाह्य श्याम रंग रंग गयो रे—नव० ॥ ५ ॥
दर्शन व ज्ञान चरण तप पद से शुक्ल ध्यान।
वृद्धि होते शुल्क रंग रंग गयो रे—नव० ॥ ६ ॥
चपला चमत्कार अधिक चंचल यह चित्त खूब।
पाय के निमित्त रंग रंग गयो रे—नव० ॥ ७ ॥
देव गुरु धर्म का प्रसंग रंग जो लगा।
मिथ्या अनादि कुरंग गयो रे—नव० ॥ ८ ॥
शुद्ध ध्येय ध्यान लीन ध्याता जो हो गया।
विमल आप एक रंग रंग गयो रे—नव० ॥ ९ ॥
पुष्ट साध्य होत हैं सुपुष्ट साधनों को पाय।
सिद्ध चक्र पुष्ट रंग रंग गयो रे—नव० ॥ १० ॥

श्री हरि पूज्य नव पद में कवीन्द्र चित्त ।
अब तो सम्पूर्ण रंग रंग गयो रे—नव० ॥ ११ ॥

स्तवन । ६ ।

सिद्ध चक्र वर सेवा कीजे, नर भव लाहो लीजे जी ।
विधिपूर्वक आराधना करतां, भव भव पातिक छीजे ॥१॥
भवियण भजियेजी' अवर अनादिनी चाल नित्यत्यजियेजी
देवनी देव दयाकर ठाकर, चाकर सुर नर इन्दाजी ।
त्रिगडे त्रिभुवन नायक बैठा, प्रणमो श्री जिनचन्दा भ०अ०२
अज अविनाशी अकल अजरामर, केवल दंसण नाणीजी ।
अव्याबाध अनंतु वीरज, सिद्धप्रणमो भविप्राणी ।भ०अ०३ ।
विद्या सौभाग्य लक्ष्मी पीठ, मंत्र जोगराज पीठ जी ।
सुमेर पीठ पंच प्रस्थाने, नमो आचारज इष्ट ।भ० अ० ४
अंग उपाँग नंदी अनुयोगा, छः छेद ने मूल चार जी ।
दश पयन्ना एम पणयालीस, पाठक तेहना धार ।।भ०अ०५
वेद त्रण ने हास्यादिक षट् मिथ्यात्व चार कषाय जी ।
चौद अभ्यंतर नव विध, बाह्यनी ग्रंथि त्यजे मुनिराज ।भ०६
उपशम क्षय उपशम ने क्षायिक, दरशण त्रण प्रकारे जी ।
श्रद्धा परणति आतम केरी, नमीए वारंवार ॥ भ० अ० ७

अठ्यावीश चौद ने पट् दुग एक, मत्यादिकना जाणजी ।
एम एकावन भेदे प्रणमो, सातमुं पद वर नाण । भ० अ० ८
निर्वर्ति अप वर्ति भेदे, चारित्र छे व्यवहार जी ।
निज गुण थिरता चरण ते प्रणमो निश्चय शुद्धप्रकार । भ० ६
बाह्य अभ्यंतर तप ने संवर, समता निर्जरा हेतु जी ।
ते तप नमिए भाव धरी ने भव सायर मा सेतु । भ० अ० १०
ए नव पद मां पण छे धर्मी, धरम ते वर्ते चार जी ।
देव गुरू ने धर्म ते एहमां दो तीन चार प्रकार ॥ भ० अ० ११
मारग देशी अविनाशी पणो, आचार विचार संकेत जी ।
सायपण धरता साधुजी प्रणमो एहीज हेतुजी । भ० अ० १२
विमलेश्वर यत्त सेवा सारे, उत्तम जे आराधे जी ।
पद्म विजय इरिते भवि प्राणी, निज आतम हित साधे ।
भ० अ० १३ ॥ इति ॥

स्तवन । ७ ।

(राग धनासरी)

शिव सुख के दातार, सेवो भवि नव पद जग सुखकार । टेर ।
बार गुणे करि शोभे जिनेश्वर, करते जग उपकार ।
घन घाती को दूर हटावे, केवल ज्ञान उदार । से० । १
अलख निरंजन सर्व शिरोमणी, निर्मल गुण भंडार ।

सिद्ध शिला पर सिद्ध विराजे, महिमा अपरंपार । से० । २
गच्छ थंभण आचारज सेवो, पाले पंचाचार । से० ।
अवधारे छत्तीस छत्तीसी, ते संघ के आधार । से० । ३
चौथे पद पाठक विज्ञानी, आगम अगम विचार ।
संघ सकल को वाचना देवे, संशय छेदन हार । से० । ४
पंच महाव्रत उत्कट पाले, गुण सत्तावीस धार ।
तप जप ध्यान सज्झाय करत हैं, वंदो भवि अणगार । से० । ५
सम्यग दर्शन सम्यग धारो, हो जावो भव पार ।
जब लग समकित हाथ न आवे, भटके भव संसार । से० । ६
सम्यग ज्ञान सुरत्न चिन्तामणि, दर्शन चरण आधार ।
तीन लोक में दिव्य दिवाकर, वन्दों वारम्वार । से० । ७
अष्टम पद पूजो भवि हर्षे, चरण शरण मनुहार ।
आगम रीते जो भवि पाले, सफल गिनो अवतार । से० । ८
अन्तिम पद में शोभे तपस्या, कर्म निकन्दन हार ।
द्वादश विध जो ध्यावे दिलधर, पावे शिवपद सार । से० ९
सेवो वन्दा भाव धरीने, नव पद जग जय कार ।
मन वाँछित फल पावोगे जिम, श्री श्रीपाल कुमार । से० १०
सुखसागर भगवान महा मुनि, त्रैलोक्य गुरु दिलधार ।
आनन्द से आनन्द गुण गाया, आनन्द आनन्दकार । से० ११

स्तवन ॥ ८ ॥

(तर्ज लावणी)

जगत में नव पद जयकारी, पूजतां रोग टले भारी । टेक ।
प्रथम पद तीर्थ पती राजे, दोष अष्टादश कूं त्याजे ॥
आठ प्रातिहारज छाजे, जगत प्रभु गुण बारे साजे ।
अष्टकरम दल जीत के, सकल सिद्ध ते थाय ॥
सिद्धअनंत भजो बीजे पद, एक समय शिवजाय ।
प्रगट भयो निज स्वरूप भारी । जगत में० । १ ।
सूरि पद में गौतम केशी, ऊपमा चन्द्र सूरज जैसी ।
उधार्यो राजा परदेशी, एक भव मांहे शिवलेशी ॥
चौथे पद पाठक नमूं, श्रुत धारी उवझाय ।
सर्व साहु पचम पदे, धन धन्नो मुनिराय ॥
वखाण्यो वीर जिणंद भारी । जगत में० । २ ।
द्रव्यपट की श्रद्धा आवे, सम संवेगादिक पावे ।
विना यह ग्यान नही किरिया, जैन दर्शन से सब तिरिया ॥
ज्ञान पदारथ सात में, पद में आतम राम ।
रमता रम्य अध्यातमें, निज पद साधे काम ॥
देखता वस्तु जगत सारी । जगत में० । ३ ।
जोग की महिमा बहु जाणी, चक्रधर छोडी सब राणी ।

यती दश धरम करी सोहे, मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥
करम निकाचित कापवा, तप कुठार कर ध्याय ।
क्षमा युत नवमा पद धारे, कर्म मूल कट जांय ॥
भजो तुम नव पद सुखकारी । जगत में० । ४ ।
श्री सिद्ध चक्र भजो भाई,अचामल तप विधि से पाई ।
पाप तिहुं जोगे परि हरजो, भाव श्रीपाल तने करजो ॥
संवत उगणीस सतरा समें, जैपुर श्री जिन पास ।
चैत्र धवल पूनम दिने, सफल फली मुझ आस ॥
बाल कहे नव पद छवि प्यारी । जगत में० । ५ ।

स्तवन । ९ ।

हमारे नव पद का आधार, हमारे नवपद का आधार ।
नवपद ध्यान जहाज से होवे, भव सागर निस्तार । टेर ।
नवपद पयड़ी के आलम्बन, मुक्ति शिखर इकतार ।
पहोंचत हैं तिहुँ काल में प्रानी, जहां सुख अपरंपार ॥
हमा० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, अरु
सुव्रति अणगार । दर्शन ज्ञान चरण तप ये हैं, नवपद
तारण हार ॥ हमारे० २ ॥ आगम पूरव ग्रन्थ सभी
में, जो देखा निर्धार । नवपद ही बस नज़रों आया,

सब सारों का सार ॥ हमा० ३ ॥ काल कराल की धाक चिहूँ दिश, छाय रही संसार । नवपद सेवक से तो वह डर, करता दूर विहार ॥ हमा० ४ ॥ नव पद ध्यान किये जिस पद को, पावत हैं नर नार । चक्रवर्ति धरणीन्द्र इन्द्र पद, है इससे बेकार ॥ हमा० ५ ॥ अगम अगोचर और अनूपम, आत्मा सिद्धि भण्डार । नव पद गुण ऐसे है जिनमें, वाणी का प्रचार ॥ हमा०-६ ॥ लट भवरी के न्याय सुखद कर, नव पद ध्यान विचार । जीवन नव पद मय होता है, जग जीवन हितकार ॥ हमा० ७ ॥ श्री श्रीपाल नरेश्वर मयणा, कीना बेड़ा पार । विधि पूर्वक श्री नवपद जी का, ध्यान हृदय में धार ॥ हमा० ८ ॥ सुख सागर भगवान हमारे, नवपद है आधार । श्री हरि पूज्य प्रभू नव पद की, कहे कवीन्द्र जयकार ॥ हमा० ९ ॥

स्तवन । १० ।

श्री सिद्ध चक्र आराधो, मन वाँछित कारज साधो रे ॥भवियां॥
श्री सिद्ध चक्र आराधो ॥ ए टेर ॥

पद पहिले अरिहंत ध्यावो, जेम अरिहंत पदवी पावो रे ॥ भवि० श्री० ॥ पद दूजे सिद्ध मनावो, जिम सिद्ध सरूपी होई जावो रे ॥ भवि० श्री० ॥ सूरि त्रीजे गुणवंता

जगनायक जग जयवंता रे ॥ भवि० ॥ श्री० ॥ चौथे पद उवझाया, जिन मारग आण वताव्या रे। भवि० ॥ श्री० ॥ साधु सकल गुणधारी, पद पंचमे जग हितकारी रे । भ० श्री० ॥ दरसण पद छठे वन्दो, जेम कीरति होय चिर नन्दो रे ॥ भ० श्री० । ज्ञान पद सातमे दाख्यो, चारित्र पद आठमे भाख्यो रे । भ० श्री० । तप नवमे पद चोख्यो. जेम वीरजी ने वचने राख्यो रे । भ० श्री० । श्रीपाल ने मयणा लीधो, नवमे भव कारज सिधो रे । भ० श्री० । नव पद महिमा जाणी, जिन चन्द्र हिये मन आणी रे ॥ भ० श्री० ॥

स्तवन । ११ ।

(तर्ज—कहो सब जय जय श्री महावीर)

तीरथ नायक जिनवरु जी, अतिशय जास अनूप । सिद्ध अनन्त महा गुणी जी. परमानन्द सरूप । १ । भविक मन धारजो रे, धारजो नवपद ध्यान ॥ भविक० टेर ॥ श्री आचारज गणधरु रे, गुण छत्तीस निवास । पाठक पद धर मुनिवरू जी, श्रुत दायक सुविलास । भवि० २ सुमति गुपतिधर शोभता जी, साधु समतावंत । सम्यग-दर्शन सुंदरु जी, ज्ञान प्रकाश अनन्त । भवि० ३ संवर साधना चरण छेरे, तप उत्तम विधि होय । ए नवपद ना

ध्यान थी, निरूपाधिक सुख होय ॥ भवि० ४ ॥ अमृत सम जिन धर्मनो रे, मूल ए नव पद जाण। अविचल अनुभव कारणे जी, नित्त प्रति नमत कल्याण ।भवि० ५।

स्तवन । १२ ।

(राग सारंग वृन्दावनी)

श्री सिद्ध चक्र भजोनी भविक जन, श्री सिद्ध चक्र भजोनी । टेर । जाको भजन सुदुर्लभ जानी, दूर प्रमाद तजोनी ॥ भ० ॥ १ ॥ श्री अरिहंत अनन्त सुज्ञानी, ताकी सेव सजोनी । भ० । २ । जाकी जगत में नाहि निशानी, ऐसे सिद्ध अजोनी । भ० । ३ । श्री आचारज आतम ध्यानी, पाठक चरण यजोनी । भ० । ४ । साधु सुधर्म महाधन दानी, दर्शन ज्ञान ग्रहोनी । भ० । ५ । चारित्र धर निज आतम धरनी, तप कर कर्म दहोनी । भ० । ६ । कहत क्षमाकल्याण सुवानी, यह भज मुक्ति भजोनी । भ० । ७ ।

स्तवन । १३ ।

(राग सोरठी सारंग)

धर नवपद से रंग मेरे मन, धर नव पद में रंग ॥ टेर ॥ निर्मल निरुपम हैं रूप जाको, मुक्ति निमित्त

अभंग ॥ मेरे० ॥ १ ॥ श्री जिनराज प्रथम पद जपियें, दूजे सिद्ध अनंग । मेरे० । २ । आचारज उवज्झाय नमो नित, साधु सुमति के संग । मेरे० । ३ । सम्यग दर्शन ज्ञान महा गुण, चारित्र तप पद चंग । मेरे० । ४ । तीन भुवन बिच निज महिमा से, ए नव पद उत्तंग । मेरे० । ५ । अविचल अनुभव रूप अखंडित, याही के परसंग । मेरे० । ६ । शुद्ध क्षमाकल्याण महागुण, उपजत भविजन अंग । मेरे० । ७ ।

स्तवन । १४ ।

जिया चतुर सुजाण ! नव पद के गुण गायरे ॥टेर ॥ नव पद महिमां जग में मोटी, गणधर पार न पाय रे । जि० १। करम निकाचित दूर करण को, सुन्दर शुद्ध उपाय रे । जि० २ । इनका पुष्ट आलंबन करतां, अजरामर सुख पाय रे । जि० ३ । ए जिन भये आगामी होंगे । नव पद संग पसाय रे । जि० ४ । परम क्षमा शिव रमणी वर के । समर समर गुण गायरे ॥ जि० ५ ॥

स्तवन ॥ १५ ॥

अवसर पामिने रे, कीजे नव आंबिलनी ओली ॥ ओली करतां आपद जाये, ऋद्धि सिद्धि लहिए बहुली

॥ अ० ॥ १ ॥ आसो ने चैत्रे आदरसूं, सातम थी संभाली रे ॥ आलस महेली आँबिल करसे, तस घर नित्य दिवाली ॥ अ० ॥ २ ॥ पूनम ने दिन पूरी थाते, प्रमेशु पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधी, जाप जपे जपमाली ॥ अ० ॥ ३ ॥ देहरे जइने देव जुहारो, आदीश्वर अरिहंत रे । चोवीसे चाहीने पूजो, भावेसुं भगवंत ।अ० । ४ । बे टंके पडिक्कमणुं बोल्युं, देववंदन त्रण काल रे ॥ श्री श्रीपाल तणी परे समजी, चित्तमां राखो चाल ।अ० । ५। समकित पामी अंतरजामी, आराधो एकांत रे । स्याद्वाद-पंथे संचरतां, आवे भवनो अंत ।अ० ।६। सत्तर चोराणुं सुदि चैत्रीए, बारशे बनावी रे ॥ सिद्धचक्र गातां सुख संपति, चालीने घेर आवी ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन वाचक उपदेशे, जे नर नारी चाले रे ॥ भवनी भावठ ते भांजी ने, मुक्तिपुरी माँ महाले । अ० । ८ ।

स्तवन ॥ १६ ॥

(ढाल १)

॥ जीहो कुंवर बैठा गोखडे ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो प्रणमुँ दिन प्रत्ये जिनपति ॥ लाला ॥ शिव सुखकारी अशेष। जीहो आसोइ चैत्री तणी ।लाला। अट्ठाइ विशेष । भविकजन । जिनवर जग जयकार ।१।

जीहो जिहां नव पद आधार ।भ०। ए आंकणी । जीहो तेह दिवस आराधना । लाला । नंदीश्वर सुर जाय । जीहो जीवाभिगम माँहे कह्यु । ला० । करे अठ दिन महिमाय । भ० । २ । जीहो नव पद केरा यंत्रनी । ला० । पूजा कीजे रे जाप । जीहो रोग शोक सवि आपदा । ला० । नासे पापनो व्याप । भ० । ३ । जीहो अरिहंत सिद्ध आचारज । ला० । उवज्झाय साधु ए पंच । जीहो दंसण नाण चारित्र तवो ।ला०। ए चऊ गुणनो प्रपंच । भ० ।४। जीहो ए नवपद आराधतां । ला० । चंपापति विख्यात । जीहो नृप श्रीपाल सुखियो थयो । ला०। ते सुणजो अवदात । भ० । ५। इति ।

(ढाल २)

॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ मालव धुर उज्जैनिए रे लो, राज्य करे प्रजापाल रे । सुगुणी नर । सुरसुन्दरी मयणासुन्दरी रे लो, बे पुत्री तस बाल रे ॥ सु० ॥ श्री सिद्धचक्रआराधीए रे लो ।१। जेम होय सुखनी माल रे । सु० । श्री० । ए आंकणी । पहिली मिथ्याश्रुत भणी रे लो, बीजी जिनसिद्धांत रे । सु० । बुद्धिपरीक्षा अवसरे रे लो, पूछी समस्या तुरन्त रे । सु० । श्री० । २ । तूठो नप वर आपवा रे लो, पहिली

करे ते प्रमाण रे ॥ सु० ॥ बीजी कर्म प्रमाणथी रे लो, कोप्यो ते तत्र नृपाण रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥३॥ कुष्ठी वर परणावियो रे लो, मयणा वरे धरी नेह रे ॥ सु० ॥ रामा हजीय विचारीए रे लो, सुन्दरी विणसे तुज देह रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सिद्धचक्रभावथी रे लो, नीरोगी थयो जेह रे ॥ सु० ॥ पुण्यपसाये कमला लही रे लो, वाध्यो घणो ससनेह रे ॥ सु० ॥ श्री ॥ ५ ॥ माउले वात ते जव लही रे लो, वांदवा आव्यो गुरु पास रे ॥ सु० ॥ निज घर तेडी आवियो रे लो, आपे निज आवासरे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ श्रीपाल कहे वा॰नो सुणो लो, हुं जाउं परदेश रे ॥ सु० ॥ माल मता बहु लाव-शुं रे लो, पूरशुं तुम तणी खांत रे ॥ सु० ॥ श्री ॥ ७ ॥ अवधि करी प्यारा वरपनी रे लो, चाल्यो नृप परदेश रे ॥ सु० ॥ शेठ धवल साथे चल्यो रे लो, जलपंथे सुवि-शेष रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ ॥

॥ हमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ परणी बब्बरपति सुता रे, धवल मूकाव्यो ज्यांह ॥ जिनहर बार उघारते रे, कनककेतु बीजी त्यांह ॥ १ ॥ चतुर नर, श्री श्रीपाल चरित्र ॥ ए आंकणी ॥ परणी

वस्तुपालनी रे, समुद्रतटे आवंत ॥ मकरकेतु नृपनी सुता रे, वीणावादे रीझंत ॥ च० ॥ २ ॥ पांचमी त्रैलोक्य-सुन्दरी रे, परणी कुब्जारूप ॥ छठी समस्या पूरती रे, पंच सखीसूं अनूप ॥ च० ॥ ३ ॥ राधा वेधी सातमी रे, आठमी विष उतार ॥ परणी आव्यो निज घरे रे, साथे बहु परिवार ॥ च० ॥ ४ ॥ प्रजापाले साँभली रे परदल केरी वात ॥ खंधे कुहाड़ो लेइ करी रे, मयणा हुई विख्यात ॥ च० ॥ ५ ॥ चंपा राज्य लेई करी रे, भोगवी कामित भोग ॥ धर्म आराधी अवतयो रे पहोतो नवमे सुरलोग ॥ चतुर नर ॥ ६ ॥

॥ ढाल ४ ॥

॥ कंत तमाकू परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ एम महिमा सिद्धचक्रनो, सुणी आराधे सुविवेक ॥ मोरे लाल ॥ श्री सिद्धचक्र आराधिए ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अरुदल कमलनी थापना, मध्ये अरिहंत उदार ॥ मो० ॥ चिहुंदिशे सिद्धादिक चउ, वक्र दिशे तुं गुणधार ॥मो०॥ श्री० ॥ २ ॥ बे पड़िकमणां जंत्रनी, पूजा देववंदन त्रिकाल ॥ मो० ॥ नवमे दिन सविशेषथी, पंचामृत कीजे पखाल ॥ मो० ॥ श्री० ॥ ३ भूमिशयन ब्रह्मविध धारणा, रुंधी राखो त्रण जोग ॥ मो० ॥ गुरु वैय्यावच्च कीजिए, धरो

सद्दहणा भोग ॥ मो० ॥ श्री० ॥ गुरु पड़िलाभी पारिए, साहमीवच्छल पण होय ॥ मो० ॥ उजमणाँ पण नव नवां, फल धान्य रयणादिक ढोय ॥ मो० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इह भव सवि सुखसंपदा, परभवे सवि सुख थाय ॥ मो० ॥ पंडित शान्तिविजय तणो, कहे मानविजय उवझाय ॥ मोरे लाल ॥ श्री० ॥

स्तवन ॥ १६ ॥

॥ नव पद ध्यान सदा जयकारी ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु देखो गुणरूप उदारी ॥ नव पद० ॥ १ ॥ दरशन ज्ञान चारित्र है उत्तम, तप दोय भेदे हृदय विचारी ॥ नव० ॥ २ ॥ मंत्र जड़ी और तंत्र घणेरा, उन सबकुं हम दूर विसारी ॥नव० ॥३॥ बहुत जीव भवजल से तारे, गुण गावत हे बहु नर नारी ॥ नव० ॥ ४ ॥ श्री निज भक्त मोहन मुनि वंदन, दिन दिन चढते हरख अपारी ॥ नव० ॥ ५ ॥

स्तवन ॥ १७ ॥

॥ नव पद धरजो ध्यान, भवि तुम नव पद धरजो ध्यान ॥ ए नव पदनुं ध्यान करंताँ, पामे जीव विसराम ॥ भवि० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साध

सकल गुणदान ॥ भवि० ॥ २ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए उत्तम, तप तपो करी बहुमान ॥ भवि० ॥ ३ ॥ आसो चैत्रनी सुदी सातम थी, पूनम लगे परमान ॥ भवि० ॥४॥ एम एकाशी आँबिल कीजे, वरष साड़ाचारनुं मान ॥ भवि० ॥ ५ ॥ पड़िक्कमणां दोय टंकनां कीजे, पड़िलेहण बे वार ॥ भवि० ॥ ६ ॥ देववंदन त्रण टंकनाँ कीजे, देव पूजो त्रिकाल ॥ भवि० ॥ ७ ॥ बारह आठ बत्तीश पचवीशनो, सत्यावीश सम सार ॥ भवि० ॥ ८ ॥ एकावन सित्तेर पचासनो, काउसग्ग करो सावधान ॥भवि० ॥६॥ एक एक पदनुं गणणुं, गणीए दोय हजार ॥भवि ॥ १० ॥ एनी विधेगुण जे ए तप आराधे, ते पामे भवपार ॥ भवि० ॥ ११ ॥ कर जोरी सेवक गुण गावे, मोहन गुण मणि माल ॥ भवि० ॥ १२ ॥ तास शिष्य मुनि हेम कहे वे, जन्म मरण दुःख वार ॥ भवि० ॥ १३ ॥

स्तवन ॥ १८ ॥

॥ राग प्रभाती ॥

नव पद ध्यान धरो रे भविका, नव पद ध्यान धरो रे ।टेर मन वच काया कर एकान्ते, विकथा दूर हरो रे । भवि० ।१। मंत्र झड़ी और तंत्र घणेरा, इन सबको विसरो रे । भवि० ।२ ।अरिहंतादिक नव पद जपने, पुण्य भंडार

भरो रे । भवि० । ३ । अड सिद्ध नव निध मंगल माला, सम्पत्ति सहज वरो रे । भवि० । ४ । लालचन्द थांकी बलिहारी, शिवतरु बीज खरो रे । भवि० । ५ ।

(इति श्री सिद्ध चक्र स्तवन संग्रह समाप्त ।)

श्री सिद्धिचक्र स्तुति । १ ।

(उपजाति वृत्तम्)

पूर्णाङ्क पूतं कृतसंव सातं,
यशः प्रवातं प्रकृत प्रभातम् ।
गतारि चक्रं नत साधु शक्रं,
श्री सिद्धचक्रं भजतादचक्रम् । १ ।
सिद्ध-यन्ति सेत्स्यन्ति तथैवसिद्धा,
लोके यदाराध्य जनाः प्रसिद्धाः ।
भवन्तु कर्मौघ-विनाश सिद्धा,
रिचदात्म सिद्ध्यै विशु-सचिदिद्धा ।२।
योगेष्वने केषु शिवप्रदेषु,
मुख्यापदाना मिह वै नवानां,
सेवा जिनोक्तास्तु भिदे भवानाम् । ३ ।
श्री सिद्धिचक्रं सततं श्रितानां,

तदेक संद्ध्यान-लयंगसोनां ।
दिश्यात्सं यक्षो विमलेश्वरोऽरं,
यशः कवीन्द्रोहितमिन्दुगौरम् । ४ ।

नवपद की स्तुति । २ ।

निरूपम सुखदायक जगनायक लायक शिव गति गामीजी,
करुणागर निजगुण आगर शुभ समता रस धामी जी ।
श्री सिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगे जी,
ते मानव श्रीपाल तणी परे पामे सुख सुर संगे जी ।१।
अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु महागुणवंता जी,
दरसण नाण चरण तप उत्तम नवपद जग जयवंता जी ।
एहनुं ध्यान धरतां लहिये अविचल पद अविनाशी जी,
उते सघला जिन नायक नमिये जिण ए नीति प्रकाशीजी ।२
आसू मास मनोहर तिम वलि चैत्रक मास जगीशे जी,
उजवाली सातम थी करिये नव आँबिल नव दिवसे जी ।
तेर सहस वलि गुणिये गुणणुं नव पद केरा सारो जी,
इण परि निर्मल तप आदरिये आगम साख उदारों जी ।३।
विमल कमल दल लोयण सुन्दर श्री चक्केसरि देवी जी,
नवपद सेवक भविजन केरा, विघ्न हरो सुर सेवी जी ।
श्रीखरतरगच्छ नायक सद्गुरु श्री जिनभक्ति मुणिंदाजी,
तासु पसाये इण परि पभणे श्री जिनलाभ सुरिंदाजी ।४।

॥ इति ॥

श्री चारित्रनंदी गणिकृत श्री नवपद स्तुति संग्रह ।

श्री अरिहंत पद स्तुति । १ ।

सहु मंत्र शिरोमणि सिद्ध चक्र सुखकार,
आतम गुण वरधन शशि सागर अनुहार ।
अपतित जग जनने तारण तरण तरंड,
त्रिकरण प्रणमंता पामें लील अखंड ।१।
सुर नर अभिनंदित, वंदित त्रिभुवन ईश;
प्रातीहारज अतिशय शोभै जसु चउतीस ।
पंचत्रिंशगुणे करि वाणी जसु गंभीर;
श्री अरिहंत नमियै कर्म निकंदन वीर ।२।
रस द्रव्य प्रकाशक भासक तत्त्वस्वरूप,
द्रव्य-गुण-परयाये नय-निक्षेप प्ररूप ।
निष्कारण बन्धु भवि बोधक गुण भूप,
जिन आगम भजिते दृढतर प्रवहण रूप ।३।
सर कमल अनूपम, भूषण भूषित अंग;
अह निस सुरनर गण सेव करे स्तुति संग ।
मृगपति जसु वाहन श्री चक्केसरी पाय,
हिव 'निद्धि उदय' करो 'चारित्रनंदी' मन भाय ।४।

श्री सिद्धपद स्तुति । २ ।

निज भाव विलाशी पर भावें निष्काम,
भवि वंछित पूरण काम कुंभ अभिराम ।
सुरवृन्द अलंकृत गुण गण जलधि समान,
सिद्धचक्र प्रणमंता पावें शिव सुख खान ।१।
पर संगत जीनें हीन भयो निज संग,
जसु रूप अरूपी आतम सत्तारंग ।
इम सिद्ध अवगाहें सिद्ध अनंत समाय,
भक्ति भर प्रणमुं सिद्ध सकल गुण दाय ।२।
भवताप समावन भावन अमृत वाह,
भविदायक संवर संवल शिव पथ मांह ।
अहिपाश पाश वसु वारण गारुडि जाण,
ए प्रवचन भज भवी भजियो अभिमत नाण ।३।
जिन शासन पालक धोरे जिनवर आण,
अह निशि जिन पद कज सेव करे बहुमान ।
सौभाग्य शिरोमणि श्री चक्रेसरी माय,
परसाद करो 'निधि उदय चारित्र,मनलाय ।४।

श्री आचार्य पद स्तुति । ३ ।

धन धन सिद्ध चक्के प्रणमुं वारंवार,
शिव सुर तरु कंदे श्री जिन पंक्ति मझार ।

सिद्धादिक साखा बहुविध गुण गण धार,
नर रिद्धि सुर पुष्पें शिव सुख फल संभार ।१।
आचारज नमिये तीजे गुण गण धार,
गछभार धुरंधर पंचाचार विचार ।
अप्रमत्त गुण ठाणें चिदानन्द रस स्वाद,
जिनश्रुति अनुसारें भाषे श्री स्याद्‌वाद ।२।
जैनागम पंटक शिव पुरपारथ वाह,
षट द्रव्य प्रकाशक आगम जलधि प्रवाह ।
संवर सुसमाधि त्यागें पर गुण वाह,
श्रुति श्रवण रमणकर वंदूं निज मन माहि ।३।
जो यह पद ध्यावे तप जप कर शुभभाय,
वररूप कलानिधि परिकर सुर नमें पाय ।
संघ सानिध कारी श्री चक्केसरी माय,
ते 'निद्धि उदय करो, चारित्रनंदि सुख थाय ।४।

श्री उपाध्याय पद स्तुति । ४ ।

सहु पाप पणासण नवपद श्री सिद्ध चक्र,
भव कानन छेदक दायक निजगुण शक्र ।
पुण्योदय पायो चिन्तामणि सम सार,
भविजन धर भावें सेवो भक्ति उदार ॥ १ ॥
पाठक पद नमिये आचारज पद योंग,

त्रिविधे श्रुत भांपे देई अरथ उपयोग।
सुरगिरि सम धीरा सागर सम गंभीर,
इम वर्णित गुणमय सूत्र अर्थ नो सीर ॥ २ ॥
नव तत्व प्रकाशक आगम ग्रन्थ विलोय,
निक्षेपनयें करी स्यादवाद मन जोय।
परमत इमपंडन दुरधर केशरिसिंह,
जिन आगम भजतां पटमत वाद अबीह ॥ ३ ॥
मुख पूनम शशि सम नेत्र कमल सुखकार,
मणि कनक विनिर्मित निरुपम भूषण सार।
जसु वाहन केसरी सेवै वहु जन पाय,
'निधि उदय चरितनंदि, देवी करे सुपसायं ॥ ४ ॥

श्री साधु पद स्तुति । ५ ।

सुर तरु सम ध्यावो सिद्ध चक्र गुण धाम,
जन पतित उधारन आपे इच्छित काम।
सहु ताप समावन जल धर सम सुखकार,
शिव तरुफल साधन साधु धरम दातार ।१।
पंचम पद नमियें शिव साधन अनुकूल,
आश्रव प्रति रोधन संवर गुणनो मूल।
प्रमत्त-अप्रमत्ते वरते वारम्वार,
सहु करम खपावें शुद्ध धरम व्यवहार ।२।

सिद्धान्त नमोनित विनय करी बहुयोग,
श्री ज्ञान आराधो छेदो करमनो भोग ।
श्रुति जलधि अगाधे निज परणति अवगाहे,
'श्रद्धातम भासी तत्त्वरमणनी चाहे ।३।
अष्टम शशि भाले शुभ लोचन कञ्ज मान,
भ्रु धन सम राजे नासा शुक मुख जान ।
इम कमल मनोहर जिन शासन उजवाल,
'निधि उदय चरितनंदि' चक्केसरि रखवाल ।४।

श्री दर्शन पद स्तुति ।६।

अनुपम सिद्ध चक्र पूजो भवि चित लाय,
मन मंदिर मांहे ध्येय-ध्यान मिलाय ।
निजरूपनिमित्ते कार्य रूप ठहराय,
ज्ञिमदण्ड निमित्तें मृत घट कार्य कहाय ।१।
त्रिकरण करीने पामे दरशन योग,
इक दुगत्रिक चउवण दस विधनो गुण भोग ।
भवि वंछित पूरण शिव पथ भास्कर कल्प,
सुध परणति कारण सेवो स्वादम् अल्प ॥ २ ॥
प्रवचन सुर तरुनो बीज तत्व रुचि रूप,
उपसर्ग निसर्ग घुडपण विधसाख स्वरूप ।
जसुदस विध कुसुमे निज पद सुख फल भार,

श्रुति जे नित सेवे पामें ज्ञान भंडार ॥ ३ ॥
शासन रखवाली श्री चक्केसरी माय,
जसु कीरति प्रीतें प्रतिदिन सुरगण गाय।
जसु मेहर नजर तें पामें भवी आनन्द,
निधि उदय चारित भणे देवी करो सुख कन्द ॥४॥

श्री ज्ञान पद स्तुति ॥ ७ ॥

सुर नर मुनि वंदित भक्ति भर इकचित्त,
अविचल सुख धामी सेवो परम पवित्त।
निज परणति भापें पर परणति करे त्याग,
सिद्ध चक्र परसादे प्रगट्यो सुभ वैराग।१।
मत्यादिक भेदें ध्यावो नांण स्वरूप,
स्वपर प्रकाशक भासक आतम रूप।
द्रव्य गुण-परयायें भेद अनन्तानन्त,
षट द्रव्य विभासन भार तंडनान अनन्त।२।
धारण अठावीस चउद वीस श्रुति ज्ञान,
रस अवधि असंखे मन परयव दुय जान।
लोका लोक विभासक केवल एक प्रकार,
द्वादशाँगी रूपे श्रुति भजो भवि उपगार।३।
लखमी प्रति रूपे सरसति सम गुणधार,
सेवक श्रुति दायक बोधक भाव प्रकार।

भवि वंछित पूरण काम गवी अनुहार,
निधि उदय चारित भणी चक्केसरि सुखकार ।४।

श्री चरित्र पद स्तुति ।८।

सिद्धि चक्र प्रणमंतां पामें आतम रूप,
निज रूपनो कारण परमातम गुणभूप ।
है अगम अगोचर शुद्ध चेतना वान,
शुभ सहजानंदी अलख सरूपी जान ।१।

चारित पद नमिये भजिये शम अनुठाण,
उपचार विचारे शम वीपाकें मान ।
ए तीन विभागें प्रीति भक्ति गुण खान,
शुभ धरम बचन में निसंग वचन सत जान ।२।

काउसग्ग प्रतिक्रमणें प्रत्याखाने प्रति,
वन्दन सामायिक चउवी सप्पे भत्ति ।
ए आवश्यक मांहि अनुष्टान नो संग,
जैनागम वचने केवल ज्ञान अभंग ।३।

माइ विघन निवारण काम गवि सुखकार,
सेवक ने आपें राज रमणी भंडार ।
सुर नर वर वंदै पूजै पद अभिराम,
'निधि उदय चारित्र' ने वंछित पूरै काम ।४।

श्री तप पद स्तुति ॥९॥

त्रिकरण भवि ध्यावो सिद्ध चक्र सद्भाव,
तम दूरी नवि नासन अरूण सुभ रुचि भाव।
जेतन्मय सेवें व्रत नियमादिक संग,
ते समश्री पाले पामे लील अभंग।१।
तप परम आलंबन बुध त्रिधि नमता नान,
धन करम दवानल निर वाँछक परधान।
जिनवर मशरीरी तप कर करम खपाय,
शिव रामा परणीं च्यार अनंत मिलाय।२।
इम लोचन लब्धी थाये सहन स्वभाव,
जंघादिक विद्या सिद्धि श्रुत पर भाव।
तप श्रुति आदरता रोग भयादिक नाश,
श्रुति भज कर पामें तपधारी शिववास।३।
आभरण अलंकृत सोहैं चक्केसर देव,
अहनिशि सुर सुरिगण धारे तसु पद सेव।
निज सेवग वंछित पूरण कलप समृद्धि,
'निधि उदय चारित्र' भणि देवी करो जसवृद्धि।४।

नव पद स्तुति ॥ १० ॥

नित प्रति हुँ प्रणमुं, सिद्ध चक्र शुभ भाव,
हिव कारज सिद्धनो, साधो एह उपाय।

तुज नाम पसाये, आरति व्याधि पुलाय,
इक तुज अनुग्रहथी, सुख संपति सुज थाय ।१।
श्री अरिहंत नमिए, सिद्ध सूरि उवझाय,
मुनिवर त्रिक करणे, दंसण नाण सुहाय ।
दुगविध चारित्तं, दुव विध तप मन भाय,
ए नव पद ध्यावतां, निरुपम शिवसुख थाय ।२।
विद्या पर वादे, जाणो ए अधिकार,
श्री गुरु उपदेशें सिद्ध चक्र उद्धार ।
प्रवचन अनुसारे भाख्यो एह विचार,
भविजन नित ध्यावो, सुर तरु गुण भंडार ।३।
जिन धरम अनुरागी, चक्केसरी सुखकार,
सेवकने आपे, सुख संपत्ति परिवार ।
हिव निधि उदयगणी, चारित्र नंदी मन भाय,
जिनचंद सूरीश्वर, खरतर पति सुपसाय ।४।

इति श्री निधि उदयगणी शिष्य वर श्री चारित्रगणी विरचित

श्रीनवपद स्तुतिः समाप्ता ।

॥ प्रथम की विधि ॥

श्री अरिहन्त पद का वर्ण सफेद है (शुद्ध ध्यान में वर्त्तमान होने के कारण) इस पद की आराधनार्थ आंबिल

सफेद वर्णका करे। चांवल-गरम पानी इन द्रव्यको लूंगा इस भाव से श्रीगुरु महाराज से अथवा अरिहन्त-आत्मा आदि की साक्षी से आंबिल का प्रत्याख्यान करे। श्री अरिहन्त के १२ गुणों का चिन्तवन करे। खमासमण पूर्वक १२ नमस्कार करे।

(अरिहन्त पद १२ नमस्कार)

१—अशोक वृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ॥
२—पुष्पवृष्टि प्राति हार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ॥
३—दिव्य ध्वनि प्राति हार्य संयुताय श्रीअर्हते नमः ॥
४—चामर युग प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ॥
५—सुवर्ण सिंहासन प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ॥
६—भामंडल प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ॥
७—दुंदुभि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ॥
८—
९—छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ॥
१०—ज्ञानातिशय संयुताय श्री अर्हते नमः ॥
११—पूजातिशय संयुताय श्री अर्हते नमः ॥
१२—वचनातिशय संयुताय श्री अर्हते नमः ॥
अपाया पगमातिशय संयुताय श्री अर्हते नमः ॥

नमस्कार के वाद अभत्य कह फर १२ लोगस्स का

काउसग्ग करे, ऊपर प्रकट लोगस्स कहे । स्नात्र पूजा-अष्ट प्रकारी पूजा वासक्षेप पूजा-आदि करे । प्रभातमें दुपहरमें-संध्या समयमें (तीनबार) देव वंदन करे । पडिक्कमणा दोनों टंक करे । आंबिल का पच्चक्खाण पारतेसमय चैत्यवंदन करे । आंबिल के बाद चैत्यवंदन करे । श्रीपाल चरित्र पढ़े या सुने । ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं" । इस पदकी बीस माला गुणे । रात्रिमें राई संथरा पोरसी पढ़े-आत्म चिंतन करता हुआ राग-द्वेष रहित भावसे-ब्रह्मचारी-अरिहंत पद प्राप्तिके लिये उनके गुणों का चिन्तन-मनन-निदिध्यासन करता हुआ रात्री जागरण करे ।

॥ द्वितीय दिन की विधि ॥

सिद्धपदका वर्णलाल (ज्योति स्वरूप होनेके कारण) इस पदकी आराधना के लिये आंबिल लाल वर्णका करे-गेहूँ और गरम जल दो द्रव्योंको लूंगा इस भावसे आंबिल पच्चक्खाण करे । श्रीसिद्धके ८ गुणोका चिन्तन करे खमा-समण पूर्वक आठ नमस्कार करे ।

॥ श्री सिद्धपदके ८ नमस्कार ॥

१ अनन्त ज्ञान संयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
२ अनन्त दर्शन संयुताय श्री सिद्धायनमः ॥
३ अव्याबाधगुण संयुताय ,, नमः ॥

४ अनन्त चारित्र गुण संयुताय ,, नमः ॥
५ अक्षय स्थिति गुण संयुताय ,, नमः ॥
६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय ,, नमः ॥
७ अगुरु-लघु गुण संयुताय ,, नमः ॥
८ अनन्त वीर्य गुण संयुताय ,, नमः ॥

नमस्कारके बाद अन्नत्थ कह कर आठ लोगस्सका काउसग्ग करें। प्रकट लोगस्सके बाद ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं इस पदकी बीस माला गुणें और विधि प्रथम दिनके जैसी करे सिद्ध स्वरूप आत्म चिंतन करे।

॥ तृतीय दिन की विधि ॥

श्री आचार्य महाराज का वर्ण सुवर्ण के जैसा पीला है (शासनके सम्राट-देश-जाति-कुल-गुण आदिमें सर्वोत्तम पुण्यवान होने के कारण) इस पदके आराधनार्थ चणे, और गरम जल दो द्रव्य लूंगा इस भाव से आंबिलका प्रत्याख्यान करे। श्रीआचार्य महाराजके छत्तीस गुणोंका चिंतवन करे। ३६ नमस्कार करे—

॥ श्रीआचार्य पदके ३६ नमस्कार ॥

१ प्रतिरूप गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंयुताय ,, नमः ॥
३ युगप्रधानागमसंयुताय ,, नमः ॥

४	मधुरवाक्यगुणसंयुताय	श्रीआचार्याय	नमः ॥
५	गंभीर्यगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
६	धैर्यगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
७	उपदेश गुणसंयुताय	,,	नमः ॥
८	अपरिश्रावि गुणसंयुताय	,,	नमः ॥
९	सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय	,,	नमः ॥
१०	शीलगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
११	अपरिग्रह गुणसंयुताय	,,	नमः ॥
१२	अविकथकगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
१३	अचपलगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
१४	प्रसन्नवदनगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
१५	क्षमागुणसंयुताय	,,	नमः ॥
१६	ऋजुगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
१७	मृदुगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
१८	सर्वसंगमुक्तिगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
१९	द्वादश विधतपगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
२०	सप्तदश विधिसंयमगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
२१	सत्यव्रतगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
२२	शौचगुण संयुताय	,,	नमः ॥
२३	अकिंचनगुणसंयुताय	,,	नमः ॥
२४	ब्रह्मचर्यगुणसंयुताय	,,	नमः ॥

२५ अनित्य भावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
२६ अशरणभावनाभावकाय ,, नमः ॥
२७ संसारस्वरूपभावनाभावकाय ,, नमः ॥
२८ एकत्वस्वरूपभावनाभावकाय ,, नमः ॥
२९ अन्यत्वभावनाभावकाय ,, नमः ॥
३० अशुचिभावनाभावकाय ,, नमः ॥
३१ आश्रवभावनाभावकाय ,, नमः ॥
३२ संवरभावनाभावकाय ,, नमः ॥
३३ निर्जराभावनाभावकाय ,, नमः ॥
३४ लोकस्वरूपभावनाभावकाय ,, नमः ॥
३५ बोधिदुर्लभभावनाभावकाय ,, नमः ॥
३६ धर्मदुर्लभभावनाभावकाय ,, नमः ॥

नमस्कार के बाद अन्नत्थ कहकर ३६ लोगस्स का काउसग्ग करे। प्रकट लोगस्स कहे "ॐ ह्रीं णमो आय-रियाणं" इस पदकी बीस माला गुणे। दूसरी विधि पूर्वके जैसी करे।

॥ चतुर्थ दिन की विधि ॥

श्रीउपाध्यायजी महाराजका हरा वर्ण है (हरे वर्णसे ज्ञान नेत्रकी पुष्टि होती है इसकारण से) इस पदके आराधनार्थ मूंग और गरमजल दो द्रव्य लूंगा इस भावसे

आंबिल का प्रत्याख्यान करे। श्री उपाध्यायजी महाराजके गुणोंका चिन्तवन करे। २५ नमस्कार करे—

॥ श्रीउपाध्याय पदके २५ नमस्कार ॥

१ श्रीआचारांगसूत्रपाठनगुणयुक्तायश्रीउपाध्यायाय नमः॥
२ श्रीसूयगडांगसूत्रपाठनगुणयुक्ताय ,, नमः॥
३ श्रीठाणांगसूत्रपाठनगुणयुक्ताय ,, नमः॥
४ श्रीसमवायांगसूत्रपाठनगुणयुक्ताय ,, नमः॥
५ श्रीभगवतीसूत्रपाठनगुणयुक्ताय ,, नमः॥
६ श्रीज्ञातासूत्रपाठनगुणयुक्ताय ,, नमः॥
७ श्रीउपासकदशासूत्रपाठनगुणयुक्ताय ,, नमः॥
८ श्रीअन्तगड़दशासूत्रपाठनगुणयुक्ताय ,, नमः॥
९ श्रीअणुत्तरोववाइसूत्रपाठनगुणयुक्ताय,, नमः॥
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्रपाठनगुणयुक्ताय,, नमः॥
११ श्री विपाकसूत्रपाठनगुणयुक्ताय ,, नमः॥
११ श्रीउत्पादपूर्वपाठनगुणयुक्ताय ,, नमः॥
१३ आग्रायणी ,, ,, नमः॥
१४ वीर्यप्रवाद ,, ,, नमः॥
१५ अस्तिप्रवाद ,, ,, नमः॥
१६ ज्ञानप्रवाद ,, ,, नमः॥
१७ सत्यप्रवाद ,, ,, नमः॥

१८	आत्मप्रवादपूर्वपाठनगुणयुक्तायश्रीउपाध्यायय			नमः ॥
१९	कर्मप्रवाद	,,	,,	नमः ॥
२०	प्रत्याख्यान	,,	,,	नमः ॥
२१	विद्याप्रवाद	,,	,,	नमः ॥
२२	अविंध्यप्रवाद	,,	,,	नमः ॥
२३	प्राणायाम	,,	,,	नमः ॥
२४	क्रियाविशाल	,,	,,	नमः ॥
२५	लोकविंदुसार	,,	,,	नमः ॥

नमस्कारके बाद अन्नत्थ कह कर २५ लोगस्स का काउसग्ग करें। प्रकट लोगस्स कहे। "ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं" इस पदकी वीस माला गिणे। दूसरी विधि पूर्वके जैसी करे।

॥ पञ्चम दिन की विधि ॥

श्रीसाधु महाराज का स्याम वर्ण है (अन्तरंग स्यामता को खींचकर बाहिर निकालनेके कारण) इस पदके आराधनार्थ उड़द और गरम जल लूंगा इस भावसे आंबिलका प्रत्याख्यान करे श्रीसाधु पदके २७ गुणोंका चिन्तवन करे। २७ नमस्कार करे।

॥ श्री साधुपद के २७ नमस्कार ॥

१	प्राणातिपात विरमणव्रतयुक्ताय	श्रीसाधवे	नमः ॥
२	मृषावाद विरमणव्रतयुक्ताय	,,	नमः ॥
३	अदत्तादान विरमणव्रतयुक्ताय	,,	नमः ॥
४	मैथुन विरमणव्रतयुक्ताय	,,	नमः ॥
५	परिग्रह विरमणव्रतयुक्ताय	,,	नमः ॥
६	रात्रिभोजन विमणव्रतयुक्ताय	,,	नमः ॥
७	पृथ्वीकायरक्षकाय	,,	नमः ॥
८	अप्कायरक्षकाय	,,	नमः ॥
९	तेउकायरक्षकाय	,,	नमः ॥
१०	वाउकायरक्षकाय	,,	नमः ॥
११	वनिस्पतिकायरक्षकाय	,,	नमः ॥
१२	त्रसकायरक्षकाय	,,	नमः ॥
१३	एकेन्द्रियजीवरक्षकाय	,,	नमः ॥
१४	बेइन्द्रियजीवरक्षकाय	,,	नमः ॥
१५	तेइन्द्रियजीवरक्षकाय	,,	नमः ॥
१६	चौरिन्द्रियजीवरक्षकाय	,,	नमः ॥
१७	पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय	,,	नमः ॥
१८	लोभनिग्रहकारकाय	,,	नमः ॥
१९	क्षमागुणयुक्ताय	,,	नमः ॥
२०	शुभभावनाभावकाय	,,	नमः ॥

२१ प्रतिलेखनादिशुद्धक्रियाकारकाय श्रीसाधवे नमः ॥
२२ संयमयोगयुक्ताय " नमः ॥
२३ मनोगुप्तियुक्ताय " नमः ॥
२४ वचनगुप्तियुक्ताय " नमः ॥
२५ कायगुप्तियुक्ताय " नमः ॥
२६ शीतादिद्वात्रिंशतिपरिषहसहनतत्पराय " नमः ॥
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय " नमः ॥

नमस्कारके बाद अन्नत्थ कहकर लोगस्सका काउसग्ग करे। प्रकट लोगस्स कहे। ॐ ह्रीं णमो लोएसव्व साहूणं इस पदकी २० माला गुणे। दूसरी विधि पूर्ववत् करे।

॥ षष्ठ दिन की विधि ॥

श्रीदर्शपदका वर्ण शुक्ल है, (शुक्ल ध्यानकी वृद्धि का कारण होने से) इस पदके आराधनार्थ चांवल और गरमजल लूंगा इस भाव से आंबिलका प्रत्याख्यान करे। श्री दर्शनपद के ६७ भेदों का चिन्तन करे। ६७ नमस्कार करे।

॥ श्रीदर्शन पदके ६७ नमस्कार ॥

१ परमार्थ संस्तवरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञातृसेवनरूप " नमः ॥

३ व्यापन्न दर्शनवर्जन रूप	सद्दर्शनाय	नमः ॥
४ कुदर्शन वर्जनरूप	,,	नमः ॥
५ शुश्रूषारूप	,,	नमः ॥
६ धर्मरागरूप	,,	नमः ॥
७ वैयावृत्त्यरूप	,,	नमः ॥
८ अर्हद्विनयरूप	,,	नमः ॥
९ सिद्ध विनयरूप	,,	नमः ॥
१० चैत्यविनयरूप	,,	नमः ॥
११ श्रुतविनयरूप	,,	नमः ॥
१२ धर्मविनयरूप	,,	नमः ॥
१३ साधुवर्ग विनयरूप	,,	नमः ॥
१४ आचार्यविनयरूप	,,	नमः ॥
१५ उपाध्याय विनयरूप	,,	नमः ॥
१६ प्रवचन विनयरूप	,,	नमः ॥
१७ दर्शनविनयरूप	,,	नमः ॥
१८ संसारे जिनसारमितिचिंतनरूप	,,	नमः ॥
१९ संसारे जिनमतिसारमितिचिंतनरूप	,,	नमः ॥
२० संसारे जिनमतिस्थितसाध्वादि सारमितिचिंतनरूप	,,	नमः ॥
२१ शंकादूषणरहिताय	,,	नमः ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय	,,	नमः ॥

२३ विचिकित्सारूप दूषणरहिताय	,,	नमः ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषणरहिताय	,,	नमः ॥
२५ तत्परिचय दूषणरहिताय	,,	नमः ॥
२६ प्रवचनप्रभावकरूप	,,	नमः ॥
२७ धर्मकथाप्रभावकरूप	,,	नमः ॥
२८ वादिप्रभावकरूप	,,	नमः ॥
२९ नैमित्तकप्रभावकरूप	,,	नमः ॥
३० तपस्विप्रभावकरूप	,,	नमः ॥
३१ प्रज्ञप्त्यादिविद्याभृत्प्रभावकरूप	,,	नमः ॥
३२ चूर्णांजनादिसिद्धप्रभावकरूप	,,	नमः ॥
३३ कविप्रभावकरूप	,,	नमः ॥
३४ जिन शासने कौशलभूषणरूप	,,	नमः ॥
३५ प्रभावनाभूषणरूप	,,	नमः ॥
३६ तीर्थसेवाभूषणरूप	,,	नमः ॥
३७ धैर्यभूषणरूप	,,	नमः ॥
३८ जिनशासने भक्तिभूषणरूप	,,	नमः ॥
३९ उपशमगुणरूप	,,	नमः ॥
४० संवेगगुणरूप	,,	नमः ॥
४१ निर्वेदगुणरूप	,,	नमः ॥
४२ अनुकंपागुणरूप	,,	नमः ॥
४३ आस्तिक्यगुणरूप	,,	नमः ॥

४४ परतीर्थकादिवंदनवर्जनरूप	,,	नमः ॥
४५ परतीर्थकादिनमस्कारवर्जनरूप	,,	नमः ॥
४६ परतीर्थकादिआलापवर्जनरूप	,,	नमः ॥
४७ परतीर्थकादिसंलापवर्जनरूप	,,	नमः ॥
४८ परतीर्थकादिअशनादिदानवर्जनरूप	,,	नमः ॥
४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादिप्रेषणवर्जनरूप	,,	नमः ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्त	,,	नमः ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्त	,,	नमः ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्त	,,	नमः ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्त	,,	नमः ॥
५४ कांतारवृत्त्याकारयुक्त	,,	नमः ॥
५५ गुरुनिग्रहाकारयुक्त	,,	नमः ॥
५६ सम्यक्त्वं चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिं०	,,	नमः ॥
५७ सम्यक्त्वं धर्मपुरस्य द्वारमिति चिं०	,,	नमः ॥
५८ सम्यक्त्वं धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिं०	,,	नमः ॥
५९ सम्यक्त्वं धर्मस्याधारमिति चिं०	,,	नमः ॥
६० सम्यक्त्वं धर्मस्य भाजनमिति चिं०	,,	नमः ॥
६१ सम्यक्त्वं धर्मस्य निधिसंनिभमिति चिं०	,,	नमः ॥
६२ अस्तिजीव इति श्रद्धानस्थानयुक्त	,,	नमः ॥
६३ स च जीवो नित्य इतिश्रद्धानस्थानयुक्त	,,	नमः ॥
६४ स च जीवः कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान युक्त	,,	नमः ॥

६५ स च जीवः कृतकर्म्माणि
वेदयतीति श्रद्धानस्थानयुक्त श्री सद्दर्शनाय नमः ॥
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयुक्त ,, नमः ॥
६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपाय इति श्रद्धानस्थानयुक्त ,, नमः ॥

नमस्कार के बाद अन्नत्थ कहकर ६७ लोगस्स का काउस्सग्ग करे। प्रकट लोगस्स कहे । " ॐ ह्रीं णमो दंसणस्स " इस पदकी २० माला गुणे। दूसरी विधि पूर्ववत् करे।

॥ सप्तम दिन की विधि ॥

श्री ज्ञान पदका वर्ण सफेद है (शुक्ल ध्यानकी वृद्धि का कारण होने से) इस पदके आराधनार्थ चावल और गर्मजल लूंगा इस भाव से आंबिल का प्रत्याख्यान करे। श्री ज्ञानपद के ५१ भेदों का चिन्तन करे। ५१ नमस्कार करे।

॥ श्रीज्ञान पदके ५१ नमस्कार ॥

१ स्पर्शनेंद्रिय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्रियव्यंजनावग्रह ,, नमः ॥
३ घ्राणेंद्रियव्यंजनावग्रह ,, नमः ॥
४ श्रोत्रेंद्रियव्यंजनावग्रह ,, नमः ॥

५ स्पर्शनेंद्रियव्यंजनावग्रह	मतिज्ञानाय	नमः ॥
६ रसनेंद्रियअर्थावग्रह	"	नमः ॥
७ घ्राणेंद्रियअर्थावग्रह	"	नमः ॥
८ चक्षुरिंद्रियअर्थावग्रह	"	नमः ॥
९ श्रोत्रेंद्रियअर्थावग्रह	"	नमः ॥
१० मनोऽर्थावग्रह	"	नमः ॥
११ स्पर्शनेंद्रियईहा	"	नमः ॥
१२ रसनेंद्रियईहा	"	नमः ॥
१३ घ्राणेंद्रियईहा	"	नमः ॥
१४ चक्षुरिंद्रियईहा	"	नमः ॥
१५ श्रोत्रेंद्रियईहा	"	नमः ॥
१६ मन ईहा	"	नमः ॥
१७ स्पर्शनेंद्रियअपाय	"	नमः ॥
१८ रसनेंद्रियअपाया	"	नमः ॥
१९ घ्राणेंद्रियअपाय	"	नमः ॥
२० चक्षुरिंद्रियअपाय	"	नमः ॥
२१ श्रोत्रेंद्रियअपाय	"	नमः ॥
२२ मनोऽपाय	"	नमः ॥
२३ स्पर्शनेंद्रियधारणा	"	नम ॥
२४ रसनेंद्रियधारणा	"	नमः ॥
२५ घ्राणेंद्रियधारणा	"	नमः ॥

२६ चक्षुरिंद्रियधारणा मतिज्ञानाय नमः ॥
२७ श्रोत्रेंद्रियधारणा ,, नमः ॥
२८ मनोधारणा ,, नमः ॥
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३० अनक्षर ,, नमः ॥
३१ संज्ञि ,, नमः ॥
३२ असंज्ञि ,, नमः ॥
३३ सम्यक् ,, नमः ॥
३४ मिथ्या ,, नमः ॥
३५ सादि ,, नमः ॥
३६ अनादि ,, नमः ॥
३७ सपर्यवसित ,, नमः ॥
३८ अपर्यवसित ,, नमः ॥
३९ गमिक ,, नमः ॥
४० अगमिक ,, नमः ॥
४१ अंगप्रविष्ट ,, नमः ॥
४२ अनंगप्रविष्ट ,, नमः ॥
४३ अनुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
४४ अननुगामि ,, नमः ॥
४५ वर्धमान ,, नमः ॥
४६ हीयमान ,, नमः ॥

४७ प्रतिपाति अवधिज्ञानाय	नमः ॥
४८ अप्रतिपाति ,,	नमः ॥
४९ ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानाय	नमः ॥
५० विपुलमति मनः ,,	नमः ॥
५१ लोकालोकप्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय	नमः ॥

नमस्कारके बाद् अन्नत्थ कह कर ५१ लोगस्स का काउसग्ग करे। प्रकट लोगस्स कहे। "ॐ ह्रीं णमोनाण स्स" इस पदकी २० माला गुणे। दूसरी विधि पूर्व के जैसी करे।

॥ अष्टम दिन की विधि ॥

श्रीचारित्र पदका वर्ण सफेद है। (शुक्ल ध्यान की वृद्धि के कारण) इस पदकी आराधना के लिये चावल-गर्म जल दो द्रव्य लूंगा इस भावसे आंबिलका पच्चक्खाण करे। श्रीचारित्रपदके ७० भेदों का चिन्तवन करे। ७० नमस्कार करे।

॥ श्रीचारित्र पदके ७० नमस्कार ॥

१ प्राणातिपातविरमण रूपचारित्राय	नमः ॥
२ मृषावाद विरमण ,,	नमः ॥

३ अदत्तादान विरमण रूपचारित्राय नमः ॥
४ मैथुन विरमण ,, नमः ॥
५ परिग्रह विरमण ,, नमः ॥
६ क्षमा धर्म ,, नमः ॥
७ आर्जव ,, ,, नमः ॥
८ मृदुता ,, ,, नमः ॥
९ मुक्ति ,, ,, नमः ॥
१० तप ,, ,, नमः ॥
११ संयम ,, ,, नमः ॥
१२ सत्य ,, ,, नमः ॥
१३ शौच ,, ,, नमः ॥
१४ अकिंचन ,, ,, नमः ॥
१५ ब्रह्म ,, ,, नमः ॥
१६ पृथ्वीरक्षा संयमचारित्राय नमः ॥
१७ उदकरक्षा ,, नमः ॥
१८ तेउरक्षा ,, नमः ॥
१९ वाउरक्षा ,, नमः ॥
२० वनस्पतिरक्षा ,, नमः ॥
२१ बेइंद्रियरक्षा ,, नमः ॥
२२ तेइंद्रिय रक्षा ,, नमः ॥
२३ चौरिंद्रियरक्षा ,, नमः ॥

२४ पंचेंद्रियरक्षासंयम चारित्राय नमः ॥
२५ अजीवरक्षासंयम ,, नमः ॥
२६ प्रेक्षासंयम ,, नमः ॥
२७ उपेक्षासंयम ,, नमः ॥
२८ अतिरिक्तवस्त्रभक्तादिपरठणत्यागरूप संयम नमः ॥
२९ प्रमार्जनरूपसंयमचारित्राय नमः ॥
३० मनःसंयमचारित्राय नमः ॥
३१ वाक्संयमचारित्राय नमः ॥
३२ कायासंयमचारित्राय नमः ॥
३३ आचार्यवैयावृत्त्यरूपसंयमचारित्राय नमः ॥
३४ उपाध्यायवैयावृत्त्यरूपसंयमचारित्राय नमः ॥
३५ तपस्वि वैयावृत्त्यरूप चारित्राय नमः ॥
३६ लघुशिष्यादि ,, ,, नमः ॥
३७ ग्लानसाधु ,, ,, नमः ॥
३८ साधु ,, ,, नमः ॥
३९ श्रमणोपासक ,, ,, नमः ॥
४० संघ ,, ,, नमः ॥
४१ कुल ,, ,, नमः ॥
४२ गण ,, ,, नमः ॥
४३ पशुपंडगादिरहितवसतिवसन ब्रह्मगुप्ति चारित्राय नमः ॥
४४ स्त्री हास्यादि विकथावर्जन ,, नमः ॥

४५ स्त्रीआसन वर्जन	ब्रह्मगुप्तिचारित्राय	नमः ॥
४६ स्त्री अंगोपांगनिरीक्षण वर्जन	,,	नमः ॥
४७ कुड्यंतरस्थितस्त्रीहावभावश्रवणवर्जन	,,	नमः ॥
४८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जन	,,	नमः ॥
४९ अतिसरसआहारवर्जन	,,	नमः ॥
५० अतिआहारकरणवर्जन	,,	नमः ॥
५१ अंगविभूषावर्जन	,,	नमः ॥
५२ अनशनतपो	रूपचारित्राय	नमः ॥
५३ ऊनोदरीतपो	,,	नमः ॥
५४ वृत्तिसंक्षेपतपो	,,	नमः ॥
५५ रसत्यागतपो	,,	नम ॥
५६ कायक्लेशतपो	,,	नमः ॥
५७ संलेखनातपो	,,	नमः॥
५८ प्रायश्चित्ततपो	,,	नमः ।
५९ विनयतपो	,,	नमः ॥
६० वेयावच्चतपो	,,	नमः ॥
६१ सज्झायतपो	,,	नमः ॥
६२ ध्यानतपो	,,	नमः ॥
६३ उपसर्गतपो	,,	नमः ॥
६४ अनंतज्ञान संयुक्त	,,	नमः ॥
६५ अनंतदर्शनसंयुक्त	,,	नमः ॥

६६ अनंतचारित्रसंयुक्त चारित्राय		नमः ॥
६७ क्रोधनिग्रहकरण	,,	नमः ॥
६८ माननिग्रहकरण	,,	नमः ॥
६९ मायानिग्रहकरण	,,	नमः ॥
७० लोभनिग्रहकरण	,,	नम ॥

नमस्कार के बाद अन्नत्थ कहकर ७० लोगस्सका काउसग्ग करे। प्रकट लोगस्स कहे ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्स इस पदकी २० माला गुणे॥ दूसरी विधि पूर्ववत् करे।

॥ नवम दिन की विधि ॥

श्रीतप पदका वर्ण सफेद है (शुक्ल ध्यान वृद्धि का कारण होने से) इस पदकी आराधना के लिये चावल-गर्म जल दो द्रव्य लूंगा। इस भाव से आंबिल का प्रत्याख्यान करे। श्रीतप पदके ५० भेदोंका चिन्तवन करे। ५० नमस्कार करे।

॥ श्री तप पदके ५० नमस्कार ॥

१ यावत्कथिकतपसे	नमः ॥
२ इत्वरतपोभेदतपसे	नमः ॥
३ बाह्यऊनोदरीतपोभेदतपसे	नमः ॥
४ अभ्यंतरऊनोदरीतपोभेदतपसे	नमः ॥

५ द्रव्यनपो वृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नमः ॥
६ क्षेत्रतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदसे नमः ॥
७ कालतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नमः ॥
८ भावतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नमः ॥
९ कायक्लेशतपोभेदतपसे नमः ॥
१० रसत्यागतपोभेदतपसे नमः ॥
११ इंद्रियकषाययोगविषयकसंलीनतातपसे नमः ॥
१२ स्त्रीपशुपंडकादिवर्जितस्थानअवस्थितसंलीनता नमः॥
१३ आलोयणप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
१४ पडिक्कमणप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
१५ मिश्रप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
१६ विवेकप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
१७ उपसर्गप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
१८ तपः प्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
१९ छेदप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
२० मूलप्रायश्चित्तपसे नमः ॥
२१ अनवस्थितप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
२२ पारंचियप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
२३ ज्ञानविनयरूपतपसे नमः ॥
२४ दर्शनविनयरूपतपसे नमः
२५ चारित्रविनयरूपतपसे नमः ॥

॥ देववंदन विधि ॥ १ ॥

खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवन्दन करूं इच्छं कह कर बाँयागोडा ऊंचा कर के श्री नवपदजी का चैत्यवन्दन कह कर नमोत्थुणं कहे। तदन्तर खमा० देकर इरियावही पडिक्कमे-तस्सउत्तरी-अन्नत्थ बोल कर एक लोगस्स या ४ नवकार का काउसग्ग करे प्रकट लोगस्स कहे। बाद में खमा० देकर इच्छा० सं० भ० चैत्यवन्दन करूं ? इच्छं कह कर फिर बांयागोडा ऊंचा करके श्री नवपदजी का चैत्यवन्दन कहे जंकिंचि-णमोत्थुणं-अरिहंत चेइयाणं-अन्नत्थ कह कर एक नवकार का काउसग्ग करे नमोऽर्हत० कह श्री नवपदजी की एक स्तुति कहे। बाद में लोगस्स-सव्वलोए-अन्नत्थ कह कर एक नवकारक काउसग्ग करे श्री नवपदजी की दूसरी स्तुति कहे। फिर पुक्खवरदीवड्ढे-सुअस्स भगवओ करेमि काउसंग्गं वंदणवत्तियाए-अन्नत्थ कह कर एक नव० काउस० कर तीसरी स्तुति कहे। बाद सिद्धाणं बुद्धाणं-वेयावच्चगराणं-अन्नत्थ कह एक नव० काउ० नमोऽर्हत्० कह कर चौथी, स्तुति कहे । इसी प्रकार दूसरी बार नमुत्थुणं अरिहंत चेइयाणं-अन्नत्थ आदि कहते हुए ४ स्तुतियें कहे। बाद में नमोत्थुणं-जावंति चेइयाइं-जावंत केविसाहू-नमोऽर्हत्-नवपदजी का स्तवन-जयवियराय कहे बाद में नमोत्थुणं कहे।

॥ पच्चक्खाण पारने की विधि ॥२॥

खमासमणा देकर इरिया वही पडिक्कमे-तस्स उत्तरी-अन्नत्थ

एक लोगस्स का काउसग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। खमा० दे। चैत्यवन्दन-जयउसामी से जयवियराय पर्यन्त कहे। फिर खमा० दे इच्छा० संदि० भग० पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं कह मुह० पडि लेहे, पीछे खमा० दे इच्छा० संदि० भग० पच्चक्खाण पारूं ? यथाशक्ति। खमा० दे इच्छा० भग० पच्चक्खाण पारेमि ? तहत्ति कहकर मुट्ठी बांध कर तीन नवकार गिने बाद पोरसी-साढ पोरसी-पुरिमड्ढ या अवड्ढ जो भी किया हो उसका नाम लो यथा-पोरिसी पच्चक्खी चौविहार आंबिल पचक्खा निविहार फासियं पालियं सोहियं तिरियं कीटियं आराहियं जंच न आराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं। उपरतीन नवकार गिने। अतिथि सत्कार कर के आंबिल जिस वर्णका हो उस वर्ण के अनाज का करे।

॥ पडिलेहण विधि ॥ २ ॥

खमा० दे इरियावही पडिकमे बाद खमा० इच्छा० संदि० भग० पडिलेहण संदि साहुं ? इच्छं। फिर खमा० दे इच्छा० संदि० भग० पडिलेहण करूं ? इच्छं कह कर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे खमा० दे इच्छा० संदि० भग० अंग पडिलेहण संदिसाउं ? इच्छं ॥ खमा० दे इच्छा० संदि० भग० अंगपडिलेहण करूं ? इच्छं। कह कर चरवला-आसन-कंदोरा धोती आदि वस्त्रों की पडिलेहण करे। पीछे खमा० दे इच्छकार भगवन्। पसाउ करी पडिलेहणा पडिलेहाओ जी कह कर स्थापना चार्यजी की-शुद्ध

स्वरूप धारु' इत्यादि १३ बोलों से पडिलेहणा करे। उंचे स्थान पर विराजमान करके। खमा० दे इच्छा० संदि० भगवान् उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? कह कर मुहपत्ती पडिलेहे पीछे खमा० इच्छा० उपधिपडिलेहण संदिसाउं ? इच्छं। खमा० इच्छा० उपधि पडिलेहणं करूं इच्छं कह कर कम्बल वस्त्रादि पडिलेहवे। पीछे वसति प्रमार्जन करे। विधिपूर्वक परठवे। बाद खमा० दे इर्यावही पडिक्कमे। खमा० दे कर इच्छा० संदि० भग० सज्झाय संदिसाउं इच्छं। खमा० इच्छा० सज्झाय करूं कह कर—आठ नवकार गिने अथवा उपदेशमाला आदि की गाथाओंको विचारे। ऊपर एक नवकार कहे।

॥ तपस्या ग्रहण के लिये गुरु के पास जाने की विधि ॥

प्रथम शुभ दिन शुभ घड़ी देखकर-शोभनिक वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर, तिलक करके हाथ में मोली बांध के सुपारी-श्रीफल-नैवेद्य-यथाशक्ति रोकड़ नाणा लेकर नवकार गिनता हुआ श्रीगुरु महाराज के पास जावे। द्वादशावर्त्त वन्दन करे, ज्ञान पूजा करे। पट् साक्षीसे प्रमोद भावना से ओलीव्रत श्रीगुरु महाराज के पास से ग्रहण करे।

॥ तपश्चर्या ग्रहण विधि ॥

प्रथम पांच साथीया करे।

नमंत सामंत महीवनाहं-देवाय पूयं सुविहेय पुव्वं।
भत्तीय चित्तं मणिदामएहिं, मंदार पुप्पं पसंवेहि नाणं ॥१॥

तहेव सड्ढा मणि मुत्तिगहिं, सुगंध पुप्फेहिं वरंसिगहिं ।
पूयंति वंदंति नमंति नाणं, नाणस्स लाभाय भवक्खयाय ॥२॥

ऊपर लिखित गाथाओं को पढ़कर शक्ति माफिक ज्ञान पूजा करे। इरियावही पडिक्कमे तस्सउत्तरी-अन्नत्थ १ लोगस्स का काउसग्ग प्रकट लोगस्स कहे। नीचा बैठकर मुहपत्ति पडिलेहे। दो वांदणा देवे। खमासमण दे इच्छकारी भगवन् नवपद ओलीतप गहणत्थं चेइयं वंदावेह। कह कर चैत्य वंदन करे णमोत्थुणं अरिहंतचेइयाणं अन्नत्थ आदि को कह के ४ थुई कहे। चौथी स्तुति कह कर नीचा बैठ णमोत्थुणं कहे। खड़े होकर ॥ श्रीशांतिनाथ स्वामी आराधनार्थं करेमि काउसग्गं। अन्नत्थ कह कर १ लोगस्सका काउसग्ग करे। पार कर नमोर्हत्० कह कर—

श्रीमते शान्तिनाथाय नमः शान्ति—विधायिने।
त्रैलोक्यस्यामराधीश—मुकुटाभ्यर्चितांह्रये ॥ १ ॥

यह स्तुति कह कर शांति देवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं। अन्नत्थ कह कर १ नवकार का काउसग्ग करे पार कर नमोऽर्हत्० कह कर—

शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः।
शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥

बाद क्रम से अन्नत्थ आदि कह कर श्रुतदेवता का १ नवकार का काउसग्ग करे पार "कमल दल०" की स्तुति कहे। भुवन

देवता का १ नवकार का काउसग्ग कर के पार—"चतुर्वर्णाय संघाय" की स्तुति कहे। क्षेत्रदेवता का १ नवकार का काउसग्ग करके, पार, "यस्याःक्षेत्र०" की स्तुति कहे। शासन देवता का १ नवकार का काउसग्ग करके पार कर

या पाति शासनं जैनं-संघं प्रत्यूह नाशिनी।
साभिप्रेत समृद्धयर्थं-भूयाच्छासन देवता ॥ १ ॥

बाद समस्त वैयावृत्य कर देवी देव आराधनार्थ १ नवकार का काउसग्ग करे पारकर स्तुति कहे—

श्री शक्र प्रमुखा यक्षा जिन शासन संस्थिता।
देवा देव्यस्तदन्येऽपि संघं रक्षन्त्वपायतः ॥१॥

बाद नीचे गोडालीये बैठ कर नमोत्थुणं—जयवियराय पर्यन्त कहे खमा० दे भग० ओली तप गहणत्थं करेमि काउसग्गं १ लोगस्सका काउसग्ग करे। प्रकट लोगस्स कहे। खमा० दे ३ नवकार गिने फिर खमा० दे भगवन् ? ओली तप गहण दंडक उच्चरावोजी। गुरु वचन—उच्चरावेमो

(उच्चारण पाठ)

अहंणं भंते! तुम्हाणं समीवे ओली तव उपसंपजत्ताणं विहरामि तंजहा-दव्वओ-खित्तओ-कालओ-भावओ। दव्वओणं ओलीतवं, खित्तओणं-इत्थवा अन्नत्थवा, कालओणं सड्ढचउ-वरिस परिमाणं, भावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि, छलेणं न

छलिज्जामि, सन्निवाएणं न भविज्जामि जाव अएणेण व केणइ रोगायंकादि परिणाम वसेण वा, एसो मे परिणामो न पडिवज्जइ ताव मे एस तवो (अन्नत्थ) रायाभियोगेणं-गणाभियोगेणं, बलाभियोगेणं देवाभियोगेणं गुरु निग्गहेणं वित्ती कंतारेणं अन्नत्थणाभोगेणं, सहस्सागारेणं, महत्तरागारेणं सव्व समाहि वत्तियागारेणं वोसिरामि।

गुरु महाराज से ऊपर लिखा पाठ तीन वेर उच्चारे—गुरुवचन—हत्थेणं-सुत्तेणं, अत्थेणं तदुभएणं सम्मंधारणीयं, चिरंपालणीयं गुरु गुणेहिं वड्ढाहि नित्थार पारगो होहि। खमा० दे गुरु मुख से आंबिल का पच्चक्खाण करे।

॥ तपश्चर्या पारण विधि ॥

ज्ञान पूजा करके, इरियावाही पडिकमे, ओली तप पारवा मुहपत्ति पडि लेहे, दो वांदणा देवे, इच्छा० संदि० भग० ओली तप निक्खेवणत्थं काउसग्गं करावेह (गुरु कहे-करावेमो) पीछे देवन्दन करके। ओली तप पारणत्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थ १ नवकार का काउसग्ग करे स्तुति [illegible] करे णामोत्थुणं कहे। भगवन् ओली तप करते अ[illegible] हुई हो तो मन-वचन-कायाएँ करी मिच्छा मि दुक[illegible]-भावसे की हो वह प्रमाण फल दायक होजो। गुरुवचन-नित्थारग पारगो होहि। फिर यथा शक्ति प्रत्याख्यान करे। ओली तप आलोयण

निमित्तं करेमि काउसग्गं अन्नत्थ-कह ४ लोगस्स को काउसग्ग करे प्रकट लोगस्स कहे। अतिथि सत्कार करे यथा शक्ति उध्यापन करे—

॥ संक्षिप्त उद्यापन विधि ॥

पंच वर्ण के धान्य से सिद्धचक्र का मण्डल बनावे, चारों तर्फा तीन वलय बनावे, प्रथम वलय में अष्टदस कमल में नव पद की स्थापना करे। वर्णानुसार रत्नों को स्थापन करे। पंचवर्ण के फल-धान्य-गोटे-ध्वजा आदिक चढावें। दूसरे वलय में १६ श्रीफल-पूगीफल चढ़ावे। तीसरे वलय में ४८ छुहारे चढ़ावे। नव निधान के ठिकानों पर नव बड़े फल चढ़ावे। नवग्रह-दश दिक्पाल प्रमुख को पक्वान्न आदि चढावें। विस्तार विधि गुरु के वचनानुसार करे। नवपद जी की पूजा पढ़ावे मंगल गीत-बाजे बजावे महोत्सव उदार चित्त से करे। मंगलदीप आरती प्रमुख कर दूसरे दिन विसर्जन करे। ज्ञान-दर्शन-चारित्र के उपकरणों को-नव-नव संख्या में बनावे-चतुर्विधि संघ की भक्ति करे। इस प्रकार अणिगुहीयबल विरीय-बल और शक्ति को नहीं छुपा करके यथा[illegible] अकषायी-असंक्लेशी-भावों से-आत्म-स्वरूप-श्री [illegible]राधन करने से श्री श्रीपाल आदिक महापुरुष [illegible] सिद्ध गति में सहज-सास्वत-अव्याबाध सुख की प्राप्ति होती है। इति

॥ अन्तिमोपदेश ॥

सुख सागर भगवान् गुरु-श्रीहरि पूज्य प्रभाव ।
सिद्धचक्र सेवो सदा-भविजन द्रव्य अरु भाव ॥